# vkeq[k

बच्चे हमारी परंपरा के वाहक हैं और भविष्य की आशा भी। उत्सुकता से चमकती आँखों और अपरिमित ऊर्जा वाले बच्चे सीखने की ललक लेकर विद्यालय आते हैं। प्रसिद्ध वैज्ञानिक, अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था– मुझमें कोई विशेष प्रतिभा नहीं है, लेकिन मुझमें सिर्फ़ जानने की प्रबल उत्सुकता है।

ये पंक्ति पठन–पाठन पद्धति के इस महत्त्वपूर्ण पक्ष को दर्शाती है कि बच्चों को सीखने के पूरे अवसर मिलें ताकि उनमें उत्सुकता बनी रहे। इसलिए हमें स्कूल और कक्षा का वातावरण, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें, शिक्षण सामग्री, गुणवत्तापूर्ण सिखाने और सीखने के लिए समय, शिक्षक की भूमिका आदि पर और अधिक ध्यान केंद्रित करने की ज़रूरत है।

गुणवत्तापरक परिवर्तन को लक्ष्य बनाकर बच्चों को गुणवत्तापूर्ण स्कूली शिक्षा प्राप्त हो, इसके लिए विभाग द्वारा विभिन्न उपाय किए जा रहे हैं। इनके अंतर्गत राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 व शिक्षा का अधिकार 2009 तथा अध्यापक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2009 के मद्देनजर कक्षा 1 से 5 की पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया गया है।

इन पाठ्यपुस्तकों के निर्माण में इस बात पर विशेष बल दिया गया है कि सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में बच्चों की सक्रिय भागीदारी हो। बच्चों के स्कूली जीवन को उनके परिवेश से जोड़ा जाए, जिससे स्कूल और घर के बीच की दूरी कम हो सके। इन पाठ्यपुस्तकों से बच्चों को छान–बीन करने, स्वयं करके देखने–समझने, समस्या का स्वयं समाधान ढूँढ़ने जैसे कौशलों के विकास के अनेक अवसर मिल सकें, जिससे बच्चे केवल पाठ्यपुस्तकों तक ही सीमित न रहें अपितु परिवेश में उपलब्ध साधनों की ओर भी उन्मुख हों।

सीखने की प्रक्रिया में बच्चों का अपना सामाजिक संदर्भ महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। उन्हें सामाजिक विविधता के साथ–साथ धर्म, जाति, लिंग के प्रति समानता, विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों एवं बड़े बुज़ुर्गों के प्रति संवेदनशीलता, आदर–भाव तथा हरियाणा की संस्कृति की छटा को समझने के समुचित अवसर मिल सके, नवनिर्मित पाठ्यपुस्तकों में इनका गंभीरता से प्रयास किया गया है।

इन पुस्तकों में बच्चों के आस–पास की सामाजिक व सांस्कृतिक परिस्थितियों को आधार बनाकर प्रत्येक स्तरानुसार विषय–सामग्री और गतिविधियों को सम्मिलित किया गया है। इससे सभी बच्चे रोचक ढंग से स्तरानुसार व अपनी गति के अनुसार दक्षताओं और कौशलों का विकास कर पाएँगे। शिक्षक सतत एवं व्यापक मूल्यांकन द्वारा बच्चों का आकलन कर उनके स्तरानुसार दक्षताओं और कौशलों को विकसित करने में सहायक होंगे।

यह उल्लेख भी प्रासंगिक होगा कि इन पुस्तकों को आप के बीच से आए विद्यालयों के शिक्षक–शिक्षिकाओं के सहयोग से राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, हरियाणा, गुड़गाँव द्वारा तैयार किया गया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि अध्यापकगण इनके अंतर्निहित भावों को जानकर शिक्षण को रुचिकर बनाते हुए व विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को अपने कौशल से, सीखने के भरपूर अवसर प्रदान करेंगे।

vfrfjDr eq[; lfpo]<br>
fo|ky; f'k{kk gfj;k.kk] p.Mhx<

# ikB;iLrd fuek.k lfefr

| | | |
|---|---|---|
| lj{kd eMy | – | केशनी आनन्द अरोड़ा, अतिरिक्त मुख्य सचिव, विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा।<br>रोहतास सिंह खरब, निदेशक, मौलिक शिक्षा विभाग, हरियाणा।<br>आलोक वर्मा, राज्य परियोजना निदेशक, हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद् |
| ekxn'ku | – | स्नेहलता, निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी. हरियाणा, गुड़गाँव। |
| leUo; lfefr | – | सुशील बत्रा, संयुक्त निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी. हरियाणा, गुड़गाँव।<br>रवींद्र सिंह फौगाट, अध्यक्ष, पाठ्यपुस्तक विभाग, एस.सी.ई.आर.टी., हरियाणा, गुड़गाँव। |
| iujoykdu lfefr | – | डी.सी. ग्रोवर, सेवानिवृत्त वरिष्ठ विशेषज्ञ, एस.सी.ई.आर.टी. हरियाणा, गुड़गाँव।<br>डॉ. योगेश वासिष्ठ, विषय विशेषज्ञ, एस.सी.ई.आर.टी. हरियाणा, गुड़गाँव। |
| leh{kk lfefr | – | डॉ. संध्या सिंह, प्रोफेसर, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।<br>डॉ. रामकरण डबास, सेवानिवृत्त भाषा विशेषज्ञ, एस.सी.ई.आर.टी. दिल्ली।<br>कान्ता कश्यप, सेवानिवृत्त भाषा विशेषज्ञ, एस.सी.ई.आर.टी. हरियाणा, गुड़गाँव।<br>अक्षय दीक्षित, शिक्षक, नगर निगम दिल्ली |
| lnL; | – | तनु भारद्वाज, विषय विशेषज्ञ,एस.सी.ई.आर.टी.हरियाणा, गुड़गाँव<br>अलका रानी संस्कृत, प्राध्यापिका, डाइट गुड़गाँव, गुड़गाँव<br>ब्रजेश शर्मा, हिंदी प्राध्यापक, डाइट जनौली, पलवल<br>महेन्द्र सिंह, खंड संसाधन व्यक्ति, बौंद कलाँ, भिवानी<br>राजेश कुमार, खंड संसाधन व्यक्ति, अग्रोहा, हिसार<br>सोमप्रकाश, खंड संसाधन व्यक्ति, कैथल, कैथल<br>वेदप्रकाश, खंड संसाधन व्यक्ति, बवानी खेड़ा, भिवानी<br>कुलदीप सिंह, खंड संसाधन व्यक्ति, हाँसी–2, हिसार<br>पूर्वा सिंह, खंड संसाधन व्यक्ति, फरीदाबाद, फरीदाबाद<br>राजकुमार, खंड संसाधन व्यक्ति, रानियाँ, सिरसा<br>बलविन्द्र सिन्हा, खंड संसाधन व्यक्ति, शहजादपुर, अंबाला |
| lnL; ,o leUo;d | – | राजेश यादव, विषय विशेषज्ञ, एस.सी.ई.आर.टी. हरियाणा, गुड़गाँव। |

# vkHkkj

मौलिक शिक्षा विभाग, हरियाणा अपने प्रांत की राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् की संपूर्ण पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के प्रति आभार व्यक्त करता है। इन पुस्तकों के लेखन में एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली ने जिन विशेषज्ञों को इस कार्य हेतु नियुक्त किया, उसके प्रति हम उनके आभारी हैं। यह विभाग इस पुस्तक के पुनरवलोकन, समीक्षा व महत्त्वपूर्ण सुझावों के लिए प्रो. के.के. वशिष्ठ पूर्व अध्यक्ष, प्रा.शि.वि., एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, प्रो. रामसजन पांडे, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक व डॉ. शारदा कुमारी, भाषा विशेषज्ञ, डाइट, दिल्ली के प्रति विशेष आभार व्यक्त करता है। जिन रचनाकारों ने अपनी रचनाएँ प्रकाशित करने की स्वीकृति प्रदान की व साथ ही एकलव्य भोपाल के भी हम प्रकाशन स्वीकृति प्रदान करने के लिए आभारी हैं।

हमारे प्रयासों के बावजूद यदि किसी रचनाकार अथवा संस्था का नाम छूट गया हो तो विभाग उनके प्रति भी आभार व्यक्त करता है। भविष्य में नाम की जानकारी होने पर आगामी संस्करणों में संशोधन कर लिया जाएगा। अज्ञात एवं अनजान कवियों व लेखकों की रचनाएँ सुविधावंचित बच्चों के लिए हैं। इनका निशुल्क वितरण किया जाना है। ये पुस्तकें किसी व्यक्तिगत लाभ को मद्देनजर रखकर नहीं बनाई गई।

पुस्तकों के टंकण कार्य हेतु बबली एवं देवानंद तथा चित्रांकन व साज–सज्जा के लिए फजरूद्दीन एवं कमल किशोर का भी यह विभाग आभार व्यक्त करता है।

पाठ्यपुस्तक के विकास में जिन विद्यालयों के शिक्षक एवं विद्यार्थी बातचीत हेतु सहयोगी रहे तथा जिन्होंने प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से इस पाठ्य पुस्तक को मूर्त रूप देने में सहयोग दिया, विभाग उन सभी सर्जकों के प्रति आभार व्यक्त करता है।

jkgrkl flag [kjc
funs'kd] ekfyd f'k{kk]
gfj;k.kk] ipdyk

# f'k{kdk ,oa vfHkHkkodk d fy,

मानव हृदय की मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भाषा ही है। हृदय के उद्‌गारों को भाषा के माध्यम से ही सहजता और सरलता से प्रकट किया जा सकता है। बच्चे पढ़ने के क्रम में अपने स्तर के अनुसार सभी भाषायी कौशलों का प्रयोग करना सीख जाते हैं। प्रारंभिक सोपान में बच्चे चित्रकथाओं, बालगीतों, कहानियों व कविताओं का रसास्वादन लेने से परिचित हो चुके हैं पर कई स्तरों पर भाषा का विकास अभी भी हो रहा है। पढ़ते व लिखते समय वे इस ज्ञान की तुलना बार–बार उन बातों से करते हैं, जो वे पहले से जानते हैं। पठन सामग्री बच्चों को रुचिकर तभी लगती है, जब पूर्व ज्ञान से उस सामग्री का संबंध जुड़ता है।

यहाँ बच्चों की स्वाभाविक रुचियों और जिज्ञासाओं का ध्यान रखते हुए उनमें बात कहने, सुनने, पढ़ने व लिखने के कौशल तथा तर्क देने जैसी क्षमताओं को विकसित करने का प्रयास किया गया है। इस पुस्तक में शिक्षण के मूलभूत उद्देश्यों की पूर्ति हेतु बच्चों को मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति के पर्याप्त अवसर प्रदान किए गए हैं।

पुस्तक में बाल साहित्य भरपूर मात्रा में दिया गया है ताकि बच्चों का पढ़ने–लिखने के प्रति रुझान बढ़ सके। श्रवण और पठन कौशल के विकास में कविता का बहुत योगदान रहता है। इस दृष्टि से परिवेश से जुड़े बालगीत एवं कविताएँ पाठ्यपुस्तक में डाली गई हैं। शिक्षकों से यह अपेक्षा है कि वे बालगीत एवं कविताओं का कक्षा में हाव–भाव सहित वाचन करें तथा बच्चों को साथ मिलकर कविता प्रस्तुत करने के लिए कहें। बच्चों की रुचि एवं परिवेश के अनुसार पुस्तक में बहुरंगी चित्रों का समावेश किया गया है। ये चित्र बच्चों को न केवल विषयवस्तु समझने में मदद करते हैं वरन् उनको अपने परिवेश से भी जोड़ते हैं। कहानियाँ बच्चों की कल्पना को नई उड़ान देती हैं व उनकी जिज्ञासा तथा कल्पना को बढ़ाती हैं। इसीलिए पाठ्यपुस्तक में रोचक व शिक्षाप्रद बाल कहानियों का समावेश किया गया है। कहानियों के पात्र अलग–अलग शैली में बच्चों पर स्नेहिल प्रभाव छोड़ते नजर आते हैं।

बहुभाषिकता का भाषा विकास के एक संसाधन के रूप में प्रयोग किया गया है। पुस्तक में ऐसे अनेक अवसर उपलब्ध कराए गए हैं, जहाँ स्थानीय भाषा को हिंदी में तथा हिंदी के शब्दों को स्थानीय भाषा में समझाने का प्रयास किया गया है। इससे विषय की बालकों से निकटता बनी रहती है।

भाषायी विविधता भाषा विकास की कड़ी है और सभी भाषाएँ एक दूसरे के सान्निध्य में ही फलती–फूलती हैं। इसलिए कक्षा में प्रवेश करने पर बच्चे को आंचलिक शब्दों का प्रयोग करते हुए स्थानीय भाषा में अपनी बात कहने का अवसर प्रदान करें और आप प्रत्येक बच्चे की बात का सम्मान करते हुए उसे प्राथमिकता दें। इस पुस्तक में अभ्यास के अंतर्गत 'पाठ से/कविता से' पाठ आधारित प्रश्न हैं, जो बच्चों में विषय का बोध एवं लिखित अभिव्यक्ति को विकसित करने के लिए दिए गए हैं। 'आपकी बात' शीर्षक में दिए गए प्रश्न बच्चों को अपने परिवेश से जुड़ने एवं अपने अनुभवों को अपनी भाषा में कहने के लिए प्रेरित करते हैं। 'भाषा की बात' शीर्षक के अंतर्गत बच्चों को सहज एवं क्रियात्मक रूप से व्याकरण का बोध कराने का प्रयास है। वर्ग पहेली, साँप–सीढ़ी, मिलान करो एवं अन्य

खेल गतिविधियों के द्वारा इस विषय को रुचिकर बनाने का प्रयास किया गया है। जिसमें उन्हें स्वयं करके सीखने का अवसर प्रदान किया गया है। 'यह भी करें' शीर्षक के अंतर्गत विषय के प्रति रुचि जाग्रत करने के साथ–साथ उन्हें अपने परिवेश से जोड़ने का उपक्रम है, यह उनके सर्जनात्मक कौशल को भी विकसित करने का प्रयास है।

पुस्तक में 'कुछ और पढ़ें' शीर्षक के अंतर्गत, पहेलियाँ, कविताएँ व कहानियाँ दी गई हैं, जो केवल पठन कौशल का विकास करने के उद्देश्य से दिए गए हैं, परीक्षा की दृष्टि से उन पाठों के आधार पर बच्चों का आकलन नहीं किया जाना। यह स्वाध्याय की आदत का विकास करने का प्रयास है। यद्यपि पुस्तक में लिखने के अभ्यास हेतु पर्याप्त स्थान उपलब्ध कराया गया है किंतु अतिरिक्त लेखन अभ्यास के लिए अलग से अभ्यासपुस्तिका का प्रयोग किया जा सकता है। अभिभावकों से भी अपेक्षा है कि वे घर पर भी उन्हें ऐसे अवसर उपलब्ध कराएँ। यह जानने के लिए कि बच्चों ने शिक्षण उपरांत कितना सीखा, पुस्तक में कुछ पाठों के बाद पठित पाठों के आधार पर आकलन हेतु सामग्री दी गई है।

पुस्तक में बच्चों को अपने अनुभवों और कल्पनाओं को विस्तार देने के भी अनेक अवसर प्रदान किए गए हैं। शिक्षकों से अपेक्षा है कि वे आई.सी.टी. का प्रयोग करते हुए बच्चों का ज्ञानवर्धन करें व बाल मनोविज्ञान को समझते हुए बच्चों के चारों ओर ऐसा वातावरण निर्मित करें, जिसमें प्रकाश ही प्रकाश हो और नन्हे बालक कल्पना के हिंडोले में बैठकर अपनी जिज्ञासा को शांत करते हुए ज्ञान प्राप्त करें। मैं आशा करती हूँ कि प्रस्तुत पुस्तक f>yfey से आलोकित होकर बच्चे अपनी प्रतिभा से सारी दुनिया को प्रकाशित करेंगे।

fun'kd
, l-l h-b-vkj-Vh- gfj;k.kk]
xqMxko

## प्रस्तुत संस्करण

आज के बदलते परिवेश में विद्यार्थियों के साथ–साथ अध्यापकों को भी कई बार, विषय की बारीकियों और नए उदाहरणों के साथ केवल पाठ्य–पुस्तकों से समझाना कुछ अधूरा सा लगता है। ऐसी आवश्यकता महसूस होती है कि पुस्तक के विभिन्न पाठों में आवश्यकता पड़ने पर यदि डिजिटल कंटेंट तुरंत उपलब्ध हो जाय तो अध्ययन–अध्यापन की नीरसता समाप्त हो सकती है और कक्षा में रुचिकर वातावरण तैयार किया जा सकता है। कक्षा में छात्रों के अलग–अलग स्तर के अनुसार यदि गुणवत्तापूर्ण डिजिटल कंटेंट उपलब्ध हो तो, न केवल अध्ययन–अध्यापन और अधिक सशक्त होगा बल्कि कठिन बिन्दुओं को भी बेहतर ढंग से समझने–समझाने में सहायता मिलेगी। उर्जस्वित पुस्तकें (Energized Text Books) इस समस्या को हल करने की दिशा में एक पहल है। ऐसी पुस्तकों की संकल्पना, MHRD भारत सरकार के अध्यापकों को सक्षम करने के उद्देश्य से बनाये गए दीक्षा (DIKSHA) पोर्टल के लिए की गयी है।

दीक्षा के अंतर्गत ऐसी पाठ्य पुस्तकों की कल्पना की गयी है, जिनमें पाठ्यक्रम को और सशक्त करने की क्षमता हो। परंपरागत रूप से उपलब्ध पुस्तकों में QR कोड की सहायता से और अधिक सूचनाएं तथा अतिरिक्त प्रभावी सामग्री जोड़कर उन्हें और अधिक सक्रिय तथा उर्जावान बनाया जा सकता हैं। अध्यापकों की आवश्यकता के अनुसार उनके द्वारा चिन्हित पाठ के कठिन भागों में QR कोड को प्रिंट कर दिया गया है, इन QR कोडस से विडियो, अभ्यास कार्यपत्रक और मूल्यांकन शीट को लिंक कर दिया गया है।

विद्यालय शिक्षा विभाग द्वारा, राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, हरियाणा, गुरूग्राम को मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालयय (MHRD) के दीक्षा पोर्टल हेतु राज्य की नोडल एजेंसी बनाया गया है। इस सम्बन्ध में 12 जुलाई 2018 को शैक्षिक तकनीक (Educational-Technology) के राज्य संसाधन समूह (SRG) की एक संगोष्ठी आयोजित की गयी, जिसमें MHRD द्वारा हरियाणा राज्य के लिए नियुक्त टीम की सहायता से शैक्षिक सत्र 2018–19 हेतु राज्य के लिए एक दीक्षा कैलेंडर तैयार किया गया है इस सम्पूर्ण कार्य को मुख्यतः दो चरणों में विभक्त किया गया है–

प्रथम चरण : QR कोड युक्त पुस्तकें तैयार करना।

द्वितीय चरण : QR कोड से लिंक ई–कंटेंट तैयार करना।

विद्यालय अध्यापकों, डाइट एवं SCERT के विषय–विशेषज्ञों की एक टीम द्वारा कक्षा 1-5 तक की हिंदी, अंग्रेजी, गणित एवं EVS विषय पर तैयार राज्य की पाठ्य–पुस्तकों का बारीकी से पुनरावलोकन प्रारंभ हुआ और कार्यशालाओं में इस कार्य के प्रथम चरण को पूरा किया गया। राज्य भर से चुने हुए इच्छुक कर्मठ अध्यापकों के सहयोग से चरण–2 के अंतर्गत ई–कंटेंट को निर्मित व संकलित करने का कार्य जारी है। इस कार्य के प्रथम चरण को पूर्ण करने के लिए परिषद श्रीमती पूनम भारद्वाज, अनुभागाध्यक्ष, शैक्षिक तकनीक विभाग तथा श्री मनोज कौशिक, समन्वयक (QR Code Project) का आभार व्यक्त करती है। परिषद इस कार्य को पूर्ण करने के लिए श्री नंद किशोर वर्मा, विषय विशेषज्ञ, एस.सी.ई.आर.टी. हरियाणा, गुरूग्राम, रूबी सेठी, अध्यापिका, एस.सी.ई.आर.टी. हरियाणा, गुरूग्राम, राजेश कुमारी, विषय विशेषज्ञ, एस.सी.ई.आर.टी. हरियाणा, गुरूग्राम, दीप्ता शर्मा, विषय विशेषज्ञ, एस.सी.ई.आर.टी. हरियाणा, गुरूग्राम, राम मेहर, वरिष्ठ विशेषज्ञ, डाइट, माछरौली, झज्जर, धुपेंद्र सिंह, डाइट, विषय विशेषज्ञ, मात्रश्याम, हिसार, नरेश कुमार, विषय विशेषज्ञ, डाइट, डींग, सिरसा, डॉ एम.आर. यादव, प्राध्यापक, रा.व.मा.वि. निजामपुर, नारनौल, महेंद्रगढ़, काद्यान यशवीर सिंह, अध्यापक, रा0व0मा0वि0, वजीराबाद, गुरूग्राम, डॉ पूजा नंन्दल, प्राध्यापिका, रा.क.व.मा.वि. झज्जर, विरेंद्र, बी.आर.पी. बी.आर.सी. सालहावास, झज्जर, किरण परूथी, अध्यापिका, रा.व.मा.वि. खेडकी दौला, गुरूग्राम, बिन्दु दक्ष, प्राध्यापिका, रा.क.व.मा.वि. जैकबपूरा, गुरूग्राम का भी हद्य से आभार व्यक्त करती है।

निदेशक

एस.सी.ई.आर.टी. हरियाणा, गुरूग्राम

## दीक्षा एप कैसे डाउन लोड करें ?

विकल्प 1: अपने मोबाइल ब्राउजर पर diksha.gov.in/app टाइप करें।

विकल्प 2: अपने एंड्राइड मोबाइल के Google Play store पर DIKSHA NCTE खोजें और "डाउनलोड" बटन को दबाएँ।

## मोबाइल पर **QR** कोड का उपयोग कर डिजिटल विषय वस्तु कैसे प्राप्त करें

1 DIKSHA App लॉन्च करें और "गेस्ट के रूप में ब्राउज करें" पर क्लिक करें।

2 विद्यार्थी के रूप में जारी रखने के लिए विद्यार्थी पर क्लिक करें।

3 पाठ्य पुस्तकों में QR कोड स्कैन करने के लिए DIKSHA App में दिए गए QR कोड Icon Tap करें

4 डिवाइस को QR कोड की दिशा में इंगित करें और QR कोड पर के ऊपर केंद्रित करें।

5 सफल स्कैन पर QR कोड से जुड़ी डिजिटल पाठ्य सामग्री सूचीबद्ध है।

## डेस्कटॉप पर **DIAL** कोड का उपयोग कर डिजिटल विषय वस्तु कैसे प्राप्त करें

पाठ्य पुस्तक में QR कोड के नीचे 6 अंकों का एक कोड रहता है

1 जिसे DIAL कोड कहते हैं।

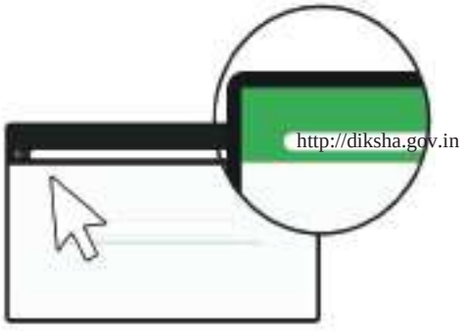


2 ब्राउजर पर **diksha.gov.in/hr/get** टाइप करें।

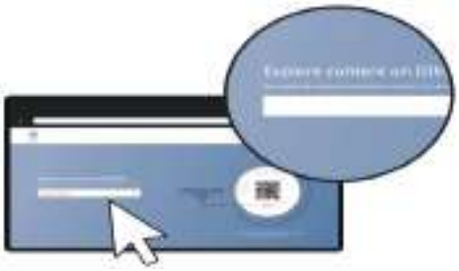

3 सर्च बार में DIAL कोड टाइप करें।

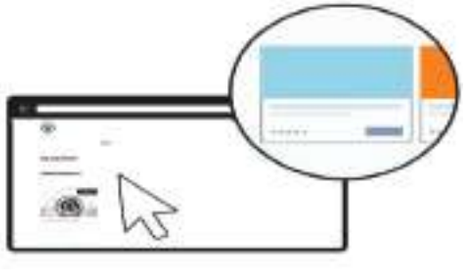

4 सभी उपलब्ध पाठ्य सामग्री की सूची देखिए और किसी भी पाठ्य सामग्री पर क्लिक करे और देखे।

# fo"k;&lwph

ATSZPI


| Øekad | ikB dk uke | foèkk | i"B la0 |
|---|---|---|---|
| 1. | जय जवान, जय किसान | (कविता) | 1 |
| 2. | बड़ा | (लेख) | 5 |
| 3. | शेर और चित्रकार | (कविता) | 10 |
| | • कोई लाके मुझे दे | (कुछ और पढ़ें) | 15 |
| 4. | हॉकी का जादूगर | (निबंध) | 18 |
| 5. | नदी यहाँ पर | (कविता) | 24 |
| 6. | जासूस जमील | (कहानी) | 29 |
| | • बहन–भाई का प्यार | (कुछ और पढ़ें) | 36 |
| 7. | गाँधी जी महान कैसे बने | (लेख) | 38 |
| 8. | सूरदास के पद | (कविता) | 47 |
| 9. | आसमान से परे | (जीवनी) | 51 |
| 10. | रानी लक्ष्मीबाई | (नाटक) | 57 |
| 11. | ईदगाह | (कहानी) | 66 |
| 12. | हार नहीं होती | (कविता) | 76 |
| | • कुछ काम करो | (कुछ और पढ़ें) | 80 |
| 13. | धरोहर | (लेख) | 82 |
| 14. | पुष्प की अभिलाषा | (कविता) | 90 |
| 15. | बूढ़ी गेंद | (कहानी) | 95 |
| | • दोहा दशक (गीता) | (कुछ और पढ़ें) | 104 |

ikB 1

# जय जवान, जय किसान

AU2VR6

मरे जो देश के लिए, प्रणाम उस जवान को,
जिए जो देश के लिए, प्रणाम उस किसान को।
जय जवान, जय किसान।

झुका नहीं सकीं जिसे, प्रलय मचाती टोलियाँ,
डरा नहीं सकीं जिसे, वे दनदनाती गोलियाँ।
वतन पर हँस के वार दे, जवान अपनी जान को,
मरे जो देश के लिए, प्रणाम उस जवान को।
जय जवान, जय किसान।

धरा उगल रही है स्वर्ण, जिसके श्रम प्रताप से,
सनाथ पुण्य भूमि है, किसान के कलाप से,
भुला सकेगा कौन भला, मौन रक्तदान को,
जिए जो देश के लिए, प्रणाम उस किसान को।
जय जवान, जय किसान।

पराक्रमी जवान मातृ–भू की शान–बान है,
परिश्रमी किसान से यह देश भाग्यवान है।
त्यागी, तपस्वी धीर–वीर आत्मा महान को,
प्रणाम रम्य भूमि के जवान को, किसान को।
जय जवान, जय किसान।

मरे जो देश के लिए, प्रणाम उस जवान को,
जिए जो देश के लिए, प्रणाम उस किसान को।
जय जवान, जय किसान।

# अभ्यास

## 1- vkb,] ‘kCnk d vFk tku &

- तपस्वी – तपस्या करने वाला
- धरा – धरती
- पराक्रमी – वीर
- परिश्रमी – मेहनती
- पुण्य – पावन
- प्रणाम – नमस्कार
- प्रताप – महिमा, प्रभाव
- प्रलय – विनाश
- मौन – चुप रहना
- वतन – जन्मभूमि / देश
- श्रम – मेहनत
- सनाथ – जिसका कोई स्वामी हो
- रम्य – सुंदर

## 2- dfork ls &

(क) कविता में किस–किस को प्रणाम करने की बात कही गई है ?

________________________________________________

(ख) किसान अपने देश के लिए किस प्रकार योगदान देता है ?

________________________________________________

(ग) कविता में जवान को प्रणाम करने की बात क्यों कही गई है ?

________________________________________________

(घ) कविता में महान आत्मा किसे और क्यों कहा गया है ?

________________________________________________

(ङ) देश के लिए जीने से क्या अभिप्राय है?

________________________________________________

## 3- vkidh ckr &

(क) आप देश के लिए क्या–क्या कार्य कर सकते हैं?

(ख) जवान और किसान के अतिरिक्त आप किस–किस को प्रणाम करते हैं?

## 4- ikB l: vkx &

(क) आपने अपने देश के बारे में कोई कविता सुनी या पढ़ी होगी। उस कविता की कुछ पंक्तियाँ लिखें–

_____

_____

_____

_____

(ख) 'जय जवान, जय किसान' कविता में जवान और किसान का जिक्र किया गया है। जवान देश की रक्षा करते हैं और किसान अनाज पैदा करते हैं। आपके आस–पड़ोस में और किस–किस प्रकार का काम करने वाले लोग रहते हैं? चर्चा करें।

(ग) अपने साथियों या अध्यापक के साथ 'रक्तदान के बारे में चर्चा करें।

## 5- vkb, vkokt igpku&

(क) 'डरा नहीं सकीं जिसे, वे दनदनाती गोलियाँ, गोलियों की आवाज को दनदनाना कहते हैं।

इनकी आवाज को क्या कहते हैं?

| | | | |
|---|---|---|---|
| गोलियाँ चलने की आवाज | – | दन–दन | दनदनाना |
| पत्तों की आवाज | – | मर्मर | मर्माराना |
| बादल के गरजने की आवाज | – | _____ | _____ |
| पक्षी के पंखों की आवाज | – | _____ | _____ |
| घोड़े की आवाज | – | _____ | _____ |
| मेंढक की आवाज | – | _____ | _____ |
| मक्खी की आवाज | – | _____ | _____ |

(ख) पराक्रमी जवान मातृ–भू की शान–बान हैं,
परिश्रमी किसान से यह देश भाग्यवान है।

इन वाक्यों में 'पराक्रमी' शब्द जवान के लिए और 'परिश्रमी' शब्द किसान के लिए आए हैं। ध्यान से कविता पढ़ें व लिखें कि जवान और किसान के लिए और किन–किन शब्दों का इस्तेमाल किया गया है?

| t oku | | fd lku |
|---|---|---|
| ______________ | | ______________ |
| ______________ | | ______________ |
| ______________ | | ______________ |

## 6- Hkk"kk dh ckr &

AUKHUG

- _ vkj j

पराक्रमी जवान मातृ–भू की शान–बान है,
मात्र मेरा तन नहीं सर्वस्व ही कुर्बान है।

पहले वाक्य में 'मातृ' शब्द आया है। इस शब्द में 'तृ' r' और _ से मिलकर बना है।

दूसरे वाक्य में 'मात्र' शब्द में 'त्र' r' और j से मिलकर बना है। आप भी कुछ शब्द लिखिए जो 'तृ' और 'त्र' से बने हैं।

| ^r* oky' 'kCn | | ^=* oky' 'kCn |
|---|---|---|
| ______________ | | ______________ |
| ______________ | | ______________ |
| ______________ | | ______________ |

ikB 2

# बड़ा

AUUIH4

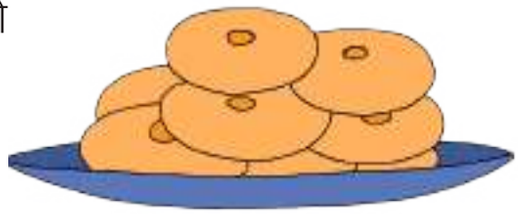

मैं बड़ा हूँ। आपने मेरा नाम सुना होगा। कभी–न–कभी मेरा स्वाद भी अवश्य लिया होगा। दुनिया मुझे जानती–मानती है। चटखारे ले–लेकर मेरा स्वाद लेती है। सच, मेरे लिए उसकी लार टपकती रहती है।

'बड़ा' नाम मुझे कैसे मिला–आप जानना चाहेंगे। यूँ ही बड़ा नहीं बन गया मैं। इसके लिए मुझे बड़े पापड़ बेलने पड़े। भाँति–भाँति के कष्ट–कसाले झेलने पड़े। तब कहीं जाकर 'बड़ा' पद प्राप्त हुआ। आप समझ रहे होंगे–कोरा नून–मिर्च लगाकर ही मैं बड़ा बन गया हूँ। कृपया, इस भुलावे में न रहना। खालाजी का घर नहीं है बड़ा बनना। एक नंबर की टेढ़ी खीर है यह। तनिक मेरी रामकहानी सुनिए। सब समझ में आ जाएगा।

मेरे पूर्व रूप से तो आप परिचित ही होंगे। अरहर, उड़द, मूँग, मोठ आदि अन्न मेरे पूर्व रूप हैं। इन अन्नों को हथचक्की, पनचक्की, तेल–चक्की अथवा विद्युत–चक्की में दलकर दाल बनाई जाती है। चक्की के दो पाटों की रगड़ खाकर दाल बनने में जो मजा आता है, उसे आप नहीं जान सकते। हाँ, दो पाटों के बीच में आप को भी पड़ना पड़ जाए, तो और बात है। कभी पड़े हैं आप?–बोलिए! पड़े होते तो मुझ पर क्या बीतती है, अच्छी तरह महसूस कर सकते।

विशेष रूप से मैं उड़द की दाल का बनाया जाता हूँ। दाल को पूरी–पूरी रात पानी में भिगोकर रखा जाता है। गरमी में तो खैर कोई बात नहीं, लेकिन कहीं जाड़े का हुआ तो बस सी–सी करते, जान पर आ बनती है। जमनाजी में जाड़े की रात में रात–भर डुबकी मारे रहना पड़े आपको, तो आप समझ जाएँगे कि मुझ पर क्या बीतती है?

इसके बाद मुझ पर से छिलका उतारा जाता है। छिलका उतारा जाना किसको अच्छा लगेगा? अजी, आँख पसार दें, मुँह बा दें बड़े–बड़े शेर के बच्चे पर मैं तो वीरों का वीर बना, धैर्यपूर्वक यह सब सहन करता ही हूँ। आखिर बड़ा बनना जो ठहरा।

इसके पीछे सिल–लोढ़े से मेरी खूब पिसाई होती है। मेरे कण–कण का चूरा कर दिया जाता है। दबाव और रगड़ झेलते–झेलते मेरा दम निकलने को हो जाता

है। इतना सब होने पर मैं 'पिट्ठी' नाम पाता हूँ। पिट्ठी बनने पर भी मेरा पीछा नहीं छोड़ा जाता। हाथों से खूब मथ–मथ कर मेरा दम निकाला जाता है।

इतने पर भी बस नहीं। सबसे बढ़कर तो मेरी परीक्षा तब ली जाती है, जब चूल्हा दहकाकर कड़ाही में तेल अथवा घी छोड़ा जाता है।

जब वह खौलने लगता है, तो मुझे हाथ से गोल–गोल बनाकर हथेली से थेप–थेपकर मुझमें चिपटापन लाकर, कभी–कभी मुझमें किशमिश, काली मिर्च, गोला, गिरियाँ आदि भी भरकर उस खौलते तेल में छोड़ दिया जाता है। सच जानना, एकदम छौंक–सा लग जाता है मेरे में! और इसके बाद तुरंत ही मुझे निकाल भी तो नहीं लिया जाता। निकालना तो दूर, जी भरकर उसमें रखकर उलटे खूब लाल किया जाता है मुझे। कोंच–कोंचकर देखा जाता है कि मैं अच्छी तरह सिक गया हूँ कि नहीं। अब मेरे सिकने के बारे में पूरी दिलजमई कर ली जाती है, तब कहीं मुझे बाहर निकाला जाता है। अब आप ही राम–लगती कहिए–है कोई, जो इतना कुछ झेले बड़ा बनने के लिए?

बाहर निकालकर भी मुझे चैन नहीं लेने दिया जाता है। पिट्ठी में तो मसाले की भरमार की गई होती है, अब ऊपर से नून–मिर्च और छिड़क दिया जाता है मुझ पर। 'जले पर नून' इसी को कहते हैं।

बस इस तरह, इतना सब होकर मैं 'बड़ा' नाम पाता हूँ। प्लेटों में सजकर अचार–चटनी के साथ स्वाद देता हूँ। कभी–कभी पानी में भिगो, मुझे कुछ ठंडा कर, दही–सोंठ के साथ भी मेरा जायका लिया जाता है। किसी भी तरह कोई मेरा मजा ले, मुझे इनकार नहीं होता।

बस, यही है मेरी रामकहानी। हाँ, मैं बड़ा हूँ। आपने मेरा नाम सुना होगा। कभी–न–कभी मेरा स्वाद भी अवश्य लिया होगा। दुनिया मुझे जानती–मानती है। चटखारे ले–लेकर, मेरा स्वाद लेती है। सच, मेरे लिए उसकी लार टपकती रहती है।

*–हरिकृष्णदास गुप्त 'हरि'*

# अभ्यास

AV4EXR

## 1- vkb,] 'kCnksa dk vFkZ tkusa &

- कोच– कोचकर – कड़छी चुभाकर देखना
- चटखारे लेना – मजे से खाना
- जायका – स्वाद
- झेलना – सहना
- दहकाकर – जलाकर
- दिलजमई – तसल्ली
- धैर्यपूर्वक – धीरज के साथ
- पापड़ बेलना – कष्ट सहना
- रकाबियों – तश्तरी, छोटी छिछली थाली

## 2- ikB ls &

(क) बड़े बनाने के लिए पिट्ठी किस प्रकार बनाई जाती है?

(ख) बड़ा किस–किस चीज के साथ खाने से स्वादिष्ट लगता है?

(ग) खाला जी का घर नहीं है बड़ा बनना' इस वाक्य में बड़ा बनने से क्या अभिप्राय है?

(घ) 'टेढ़ी खीर' का मतलब है कठिन कार्य। बड़ा बनना टेढ़ी खीर क्यों है?

(ङ) 'बड़े' को स्वादिष्ट बनाने के लिए उसमें क्या–क्या मिलाया जाता है?

## 3- vkidh ckr &

(क) क्या आपके घर में भी कभी बड़े बनाए गए हैं यदि हाँ तो कब?

(ख) कभी–कभी मुझ में किशमिश, गोला, गिरियाँ आदि भी भरी जाती हैं। आपके घर में कौन–कौन से व्यंजनों में ये डाली जाती हैं ?

(ग) जब मेरे सिकने के बारे में पूरी दिलजमई कर ली जाती है, तब कहीं मुझे बाहर निकाला जाता है? इस वाक्य में दिलजमई का अर्थ है–तसल्ली। आपको कौन–कौन से काम करने के बाद तसल्ली होती है?

(घ) अन्न को हथचक्की, पनचक्की, तेलचक्की अथवा विद्युत चक्की में दलकर दाल बनाई जाती है। इस वाक्य में अनेक प्रकार की चक्कियों की बात की गई है। आप किस प्रकार की चक्की से गेहूँ पिसवाते हैं?

(ङ) 'यूँ ही बड़ा नहीं बन गया मैं।' इसके लिए मुझे पापड़ बेलने पड़े। आप बड़ा यानी अच्छा आदमी बनने के लिए क्या–क्या काम करेंगे?

## 4- ikB l vkx &

(क) मिर्च ही मिर्च–

कभी–कभी मुझमें किशमिश, काली मिर्च, गोला, गिरियाँ आदि भी भरी जाती है। इस वाक्य में 'काली मिर्च' से हमें मिर्च की विशेषता का पता चलता है कि वह 'काली' है। मिर्च और कैसी हो सकती है लिखें–

———————— मिर्च ———————— मिर्च

———————— मिर्च ———————— मिर्च

———————— मिर्च ———————— मिर्च

———————— मिर्च ———————— मिर्च

(ख) पहले हमारे घरों में बिजली नहीं होती थी। तब हम अनाज किस प्रकार की चक्की में पिसवाते थे? आज हम अनाज कहाँ व कैसे पिसवाते हैं। चर्चा करें और बताएँ।

## 5- Hkk"kk dh ckr &

(क) अनुनासिक को भी समझें बताएँ–

'अरहर, उड़द, मूँग, मोठ आदि मेरे पूर्व रूप हैं।' इस वाक्य में 'मूँग' शब्द में चंद्रबिंदु का प्रयोग हुआ है। पाठ से ऐसे शब्द छाँटकर लिखिए, जिनमें चंद्रबिंदु का प्रयोग हुआ है–

AVDAZE

———————— ———————— ———————— ————————

———————— ———————— ———————— ————————

———————— ———————— ———————— ————————

(ख) चक्की ही चक्की–

इन अन्न को हथचक्की, पनचक्की, तेलचक्की अथवा विद्युतचक्की में दल कर दाल बनाई जाती है।

हाथ से चलाई जाने वाली चक्की को हथचक्की कहते हैं।
बताएँ कि इन चक्कियों का यह नाम क्यों पड़ा?

पनचक्की – ————————————————————

तेल–चक्की – ————————————————————

विद्युत–चक्की – ————————————————————

(ग) पर मैं तो वीरों का वीर बना, धैर्यपूर्वक यह सब सहन करता हूँ।
इस वाक्य में कहा गया है कि बड़ा 'वीर' है। वीरता बड़े की विशेषता है। नीचे कुछ विशेषताएँ दी गई हैं। निम्नलिखित में से आपमें कौन सी विशेषताएँ हैं ?

| | | | |
|---|---|---|---|
| बहादुर – | बुद्धिमान | चालाक | मेहनती |
| सहयोगी | सुंदर | ईमानदार | बेईमान |
| होशियार | आज्ञाकारी | नटखट | हँसमुख |

(घ) दिए गए मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य बनाएँ–

– खाला जी का घर ————————
————————————————————

– जले पर नमक छिड़कना ————————
————————————————————

– पापड़ बेलना ————————
————————————————————

– लार टपकना ————————
————————————————————

– टेढ़ी खीर ————————
————————————————————

– दो पाटों के बीच पिसना ————————
————————————————————

– दम निकलना ————————
————————————————————

– घबरा जाना ————————
————————————————————

ikB 3

# शेर और चित्रकार

AVM722

चित्रकार सुनसान जगह में बना रहा था चित्र,
इतने में ही वहाँ आ गया यमराज का मित्र।
उसे देखकर चित्रकार के तुरंत उड़ गए होश,
नदी, पहाड़, पेड़–पत्तों का रह गया न कुछ जोश।
फिर उसको कुछ हिम्मत आई, देख उसे चुपचाप,
बोला–सुंदर चित्र बना दूँ, बैठ जाइए आप।
उकड़ू–मकड़ू बैठ गया वह सारे अंग बटोर,
बड़े ध्यान से लगा देखने चित्रकार की ओर।
चित्रकार ने कहा–हो गया आगे का तैयार,

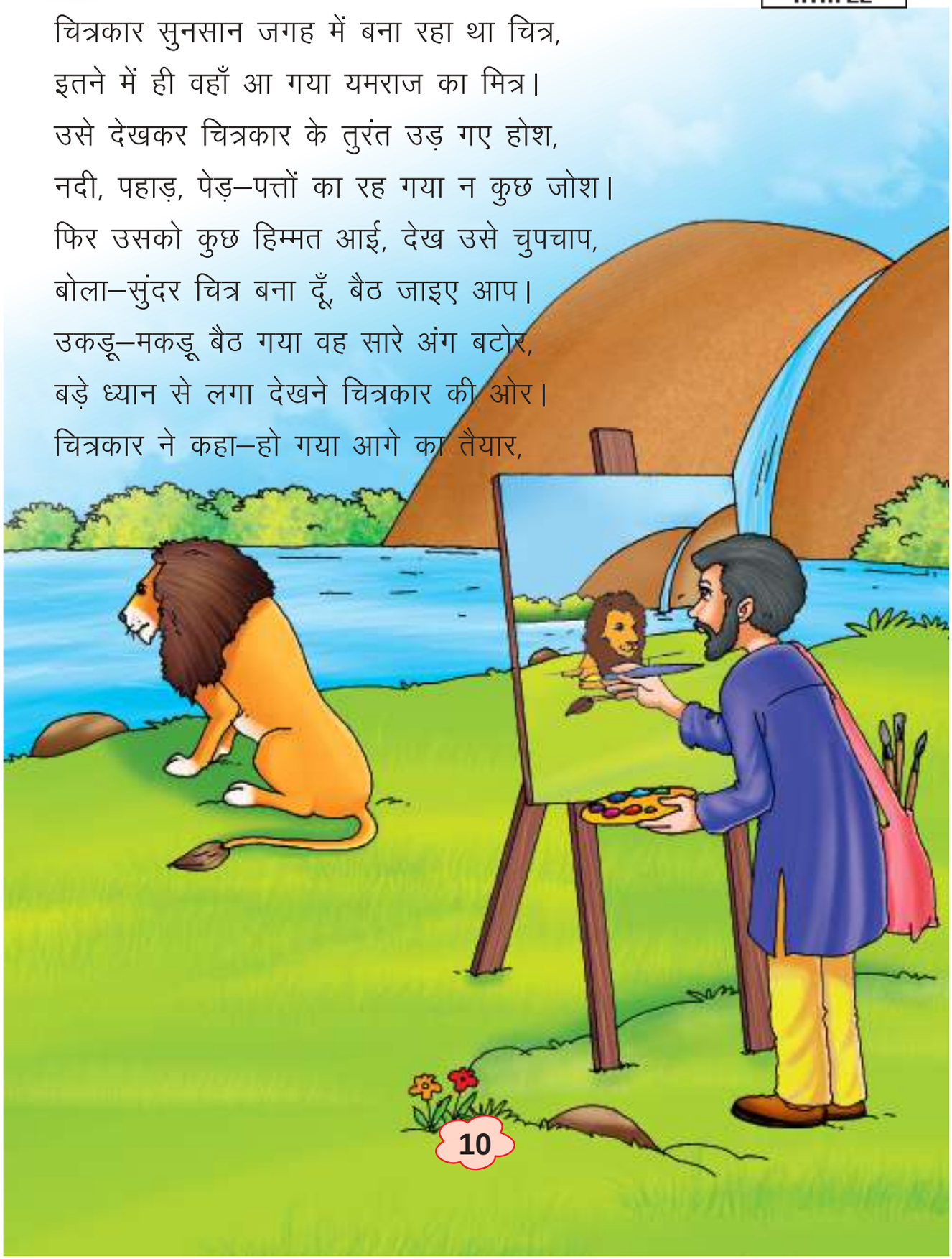

अब मुँह आप उधर तो करिए जंगल के सरदार।
बैठ गया वह पीठ फिराकर चित्रकार की ओर,
चित्रकार चुपके से खिसका जैसे कोई चोर।
बहुत देर तक आँख मूँदकर, पीठ घुमाकर शेर,
बैठे–बैठे लगा सोचने इधर हुई क्यों देर?

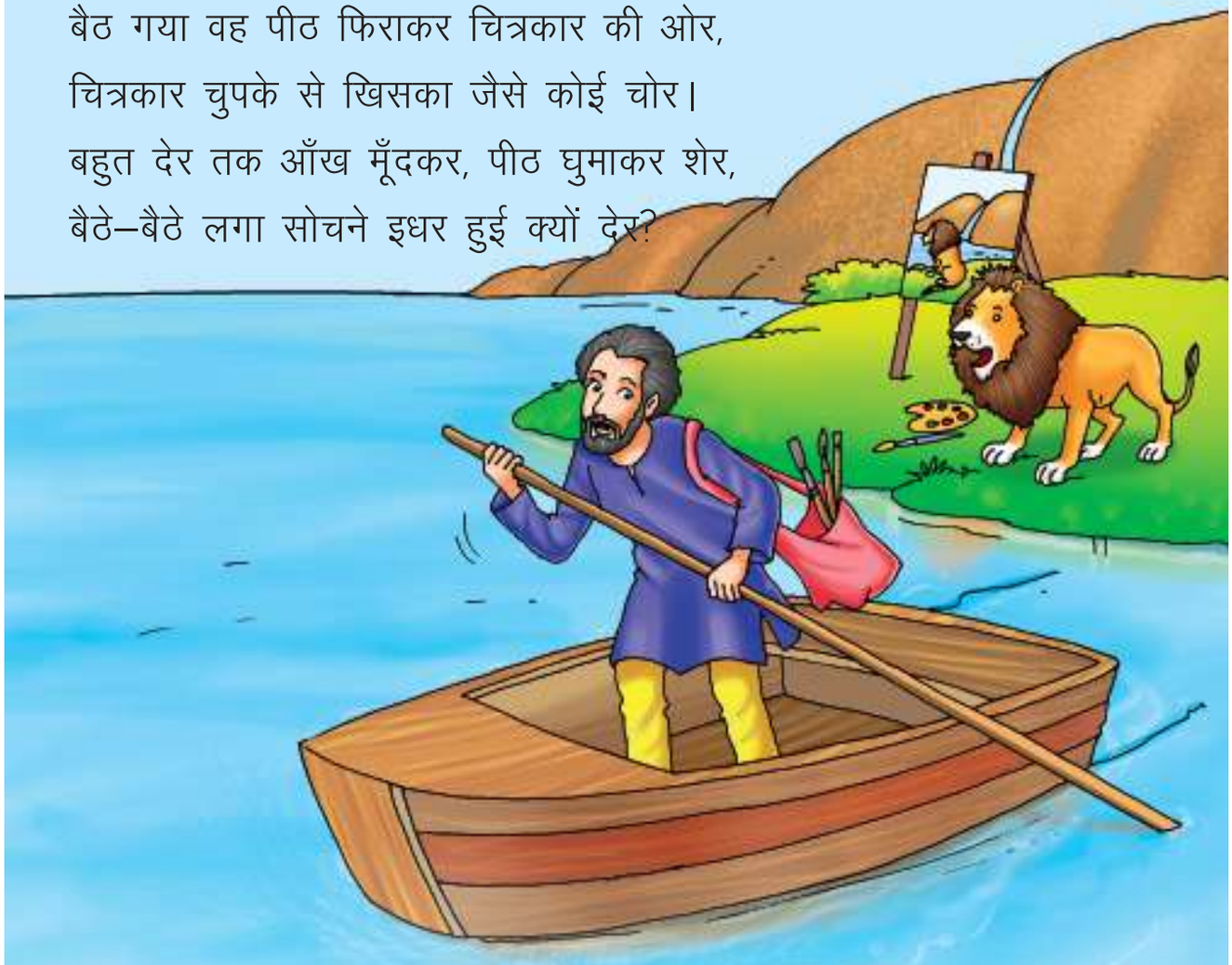

झील किनारे नाव लगी थी, एक लगा था बाँस,
चित्रकार ने नाव पकड़ ली, जी भर कर के साँस।
जल्दी–जल्दी नाव चलाकर, निकल गया कुछ दूर,
इधर शेर था धोखा खाकर झुँझलाहट में चूर।
शेर बहुत खिसियाकर बोला–नाव जरा ले रोक,
कलम और कागज तो ले जा रे कायर डरपोक।
चित्रकार ने कहा तुरंत ही–रखिए अपने पास,
चित्रकला का आप कीजिए जंगल में अभ्यास।

*–रामनरेश त्रिपाठी*

# अभ्यास

AVH33P

## 1- vkb,] ‘kCnk d vFk tku &

- उकड़ू–मकड़ू – घुटने मोड़कर
- कायर – डरपोक
- खिसका – भाग गया
- खिसियाकर – क्रोधित होकर
- चित्रकार – चित्र बनाने वाला
- झुँझलाहट – खीज , चिढ़
- यमराज – मृत्यु का देवता

## 2- dfork l &

(क) शेर के आने से पहले चित्रकार जंगल में क्या कर रहा था ?

________________________________________

(ख) चित्रकार ने शेर से बचने के लिए क्या उपाय किया ?

________________________________________

(ग) चित्रकार को नाव पर बैठा देखकर शेर ने उससे कागज–कलम ले जाने के लिए क्यों कहा ?

________________________________________

(घ) शेर को यमराज का मित्र' क्यों माना गया है ?

________________________________________

(ङ) "आप मुँह उधर तो करिए" चित्रकार ने शेर को किधर मुँह करने के लिए कहा था ?

________________________________________

## 3- vki dh ckr &

(क) चित्रकार अपनी चतुराई से बच गया था। चित्रकार की जगह यदि आप होते तो बचने के लिए क्या करते?

(ख) चित्रकार ने शेर को 'जंगल का सरदार' कहा था। आप चित्रकार की जगह होते तो शेर को क्या कहकर पुकारते?

(ग) चित्रकार ने नाव पर चढ़कर जी भरकर साँस ली। आप किन–किन अवसरों पर गहरी साँस लेते हैं?

## 4- ikB l: vkx &

(क) शेर चित्रकार के कहने पर पीठ घुमाकर बैठ गया। बताएँ, वह बैठे–बैठे क्या सोच रहा होगा ?

(ख) यदि शेर के बुलाने पर चित्रकार अपना सामान लेने वापस आता तो क्या होता?

(ग) यदि झील के किनारे नाव नहीं होती तो चित्रकार अपनी जान कैसे बचाता ?

## 5- Hkk"kk dh ckr &

B8ABJ9

(क) 'होश उड़ना' एक मुहावरा है, जिसका अर्थ है घबरा जाना। 'घबरा जाना' को बताने के लिए कई और मुहावरे हैं जैसे –

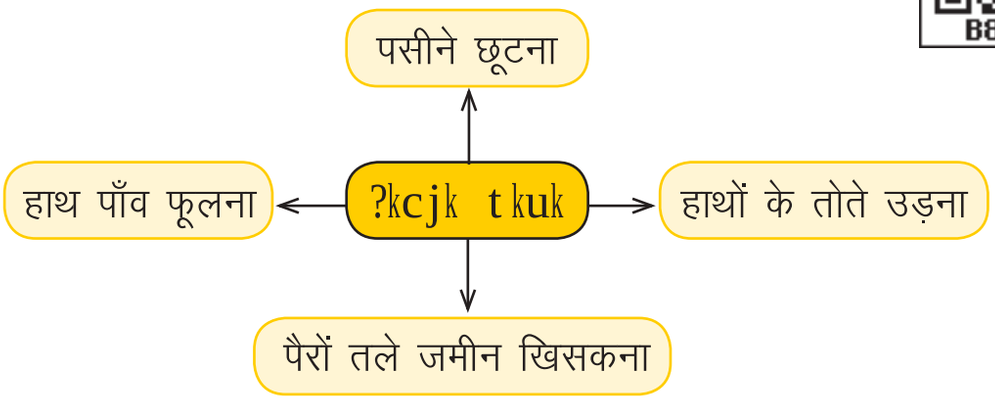


आप इन मुहावरों का प्रयोग करते हुए 1 – 1 वाक्य बनाएँ।

_____

_____

_____

_____

(ख) चित्रकार सुनसान जगह में बना रहा था चित्र

कविता की इस पंक्ति को गद्य में इस तरह लिखा जाता है–

चित्रकार सुनसान जगह में चित्र बना रहा था।

vki Hkh bu ifDr;k dk x| e fy[k &

- इतने में ही वहाँ आ गया, यमराज का मित्र

  _____

- झील किनारे नाव लगी थी, एक रखा था बाँस

  _____

(ग) चित्र बनाने वाले को कहते हैं 'चित्रकार' तो बताएँ इन्हें क्या कहेंगे ?

गीत गाने वाला _____

कविता लिखने वाला _____

कहानी लिखने वाला _____

निबंध लिखने वाला _____

मूर्ति बनाने वाला _____

अभिनय करने वाला _____

(घ) fp= dk n[kdj dgkuh dk ijk djs&

एक जंगल में एक शेर रहता था। एक बार शिकारियों ने उसे पकड़ने के लिए जाल बिछाया और वह जाल में फँस गया।

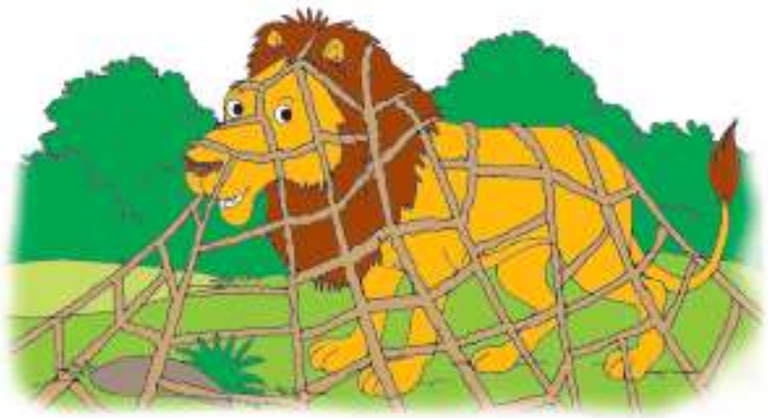

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

# dkbl ykd! e>s n! ¼dN vkj i<½

कुछ रंग भरे फूल,
कुछ खट्टे–मीठे फल।
थोड़ा जमना का जल,
कोई लाके मुझे दे।
एक सोना जड़ा दिन,
एक रूपों भरी रात।
एक फूलों भरी बात,
कोई लाके मुझे दे।
एक छाता छाँव का,
एक धूप की घड़ी।
एक बादलों का कोट,
एक दूब की छड़ी।
कोई लाके मुझे दे,
एक छुट्टी वाला दिन।
एक अच्छी–सी किताब,
एक मीठा–सा सवाल,
एक नन्हा सा जवाब,
कोई लाके मुझे दे।

*–दामोदर अग्रवाल*

# vkiu fdruk lh[kk

1- lgh 'kCn pudj ckDl e fy[k&

- प्रलय     परलय     पर्लय     ______________
- पिट्ठी     पिटठी     पिट्टी     ______________
- झुझँलाहट     झुझलाहट     झुँझलाहट     ______________

2- r vkj = o.kZ l 2&2 'kCn cukdj fy[k&

| r | = |
|---|---|
| ______________ | ______________ |
| ______________ | ______________ |

3- fn, x, 'kCnk dh ,d&,d fo'k"krk fy[k&

- बड़ा ______________
- दाल ______________
- आदमी ______________
- लड़की ______________

4- fuEufyf[kr egkojk dk okD; i;kx djd fy[k&

- पापड़ बेलना ______________________________________
- टेढ़ी खीर ______________________________________
- हाथों के तोते उड़ना ______________________________________

5- fuEufyf[kr ifDr;k dk ljy vFk fy[k&

झील किनारे नाव लगी थी, एक लगा था बाँस,
चित्रकार ने नाव पकड़ ली, जी भर करके साँस।

_____

_____

_____

6- fuEufyf[kr i'uk d mÙkj fy[k&

- किसान अपने देश के लिए किस प्रकार योगदान देता है?

_____

_____

- 'बड़े' को स्वादिष्ट कैसे बना सकते हैं?

_____

_____

- चित्रकार ने शेर से बचने के लिए क्या उपाय किया?

_____

_____

ikB

# 4 हॉकी का जादूगर

हॉकी का मैदान। ध्यानचंद सेंटर फारवर्ड जगह पर खेल रहे थे। इस स्थान पर खेलने वाला खिलाड़ी अग्रिम पंक्ति का मध्य व प्रमुख होता है। सबकी नजर गोल पोस्ट पर थी। गोल करने के लिए ध्यानचंद बिजली की गति से आगे बढ़े। उन्होंने जोरदार स्कूप किया। गेंद उठाने की इस कला में उनका जवाब न था लेकिन यह क्या, गोल न हुआ। गेंद गोलपोस्ट के ऊपर से होती हुई बाहर निकल गई। आश्चर्य कि गोल न हुआ। गोलकीपर, दूसरे खिलाड़ी व दर्शक सब अचंभित रह गए। ध्यानचंद के चेहरे पर अफसोस के भाव थे, लेकिन वे मैच खेलते रहे। उन्हें शक हुआ कि गोलपोस्ट की ऊँचाई में कोई गलती है। मैच के बाद उनके आग्रह पर गोलपोस्ट नापा गया। उसकी ऊँचाई तीन इंच कम पाई गई। गोल न होने का राज़ खुल गया।

ध्यानचंद ने सेंटर फारवर्ड के रूप में खेलते हुए अपने खेल जीवन में एक हजार गोल किए, जो कि विश्व रिकॉर्ड है। हॉकी के इस खिलाड़ी का जन्म इलाहाबाद (प्रयाग) में 29 अगस्त 1905 को हुआ था। इनके पिता का नाम सोमेश्वर दत्त सिंह और माता का नाम श्यामा देवी था। पत्नी का नाम जानकी देवी था।

मात्र 16 वर्ष की उम्र में ध्यानचंद को भारतीय सेना में नौकरी मिल गई। वे दिन में सेना में नौकरी करते और रात को मन लगाकर हॉकी का अभ्यास करते थे। स्टिक और बॉल के साथ उनकी कलाकारी कमाल की थी। वे विपक्षी रक्षकों के बीच गेंद को अपनी स्टिक से चिपकाए हुए मछली की तरह फिसल जाते और गोल पर गोल करते। इनके प्रारंभिक प्रशिक्षक 'सूबेदार मेजर बाले तिवारी' ने इन्हें हॉकी के कई महत्त्वपूर्ण गुर सिखाए। इनके बचपन का नाम ध्यान सिंह था, लेकिन सेना के अधिकारियों ने ही प्यार से इनका नाम ध्यानचंद रख दिया। खेल में उपलब्धियों के कारण सन 1947 के बाद मेजर के रूप में इनको पदोन्नति दी गई।

सन 1936 के बर्लिन ओलंपिक में ध्यानचंद की कप्तानी में भारतीय हॉकी टीम ने

जर्मनी को उसके घर में 8–1 से करारी शिकस्त देकर स्वर्ण पदक जीता। फाइनल देखने के लिए स्टेडियम में जर्मन तानाशाह 'एडोल्फ हिटलर' भी मौजूद थे। विजेता

टीम को उनके हाथों स्वर्ण पदक दिए जाने थे, लेकिन जर्मनी की हार से वे इतने गुस्से में थे कि खेल समाप्त होने से पहले ही स्टेडियम छोड़कर चले गए। अगले दिन हिटलर ने हॉकी के जादूगर ध्यानचंद से मिलने का संदेश भिजवाया। इससे वे बेहद चिंतित हो गए। उन्होंने हिटलर की तानाशाही व क्रूरता के कई किस्से सुने हुए थे। अगली सुबह जब ध्यानचंद हिटलर से मिलने पहुँचे तो जर्मन तानाशाह ने बेहद गर्मजोशी से उनका स्वागत किया। बातचीत के दौरान हिटलर ने उनके सामने जर्मन फौज में बड़े पद का प्रस्ताव दिया, लेकिन हमारे दद्दा ने अपने देशप्रेम के कारण यह प्रस्ताव विनम्रतापूर्वक ठुकरा दिया।

ध्यानचंद खेलते समय अपने अनुशासन और धैर्य के कारण भी प्रसिद्ध थे। सन 1933 के आर्मी कप में विरोधी टीम के सेंटर हाफ खिलाड़ी ने खेल में पिछड़ने पर आपा खो दिया व ध्यानचंद के सिर पर हॉकी स्टिक दे मारी। घायल ध्यानचंद ने मैदान के बाहर जाकर घाव पर पट्टी करवाई व खेल–भावना का परिचय देते हुए पुनः मैदान में उतरे। तत्पश्चात विपक्षी टीम पर ताबड़तोड़ छह गोल करके खेल के उच्च कौशल से अपना बदला लिया।

अपने परिवार और खेल प्रेमियों के बीच ध्यानचंद 'दद्दा' के नाम से प्रसिद्ध थे। विदेशों में भी वे अत्यंत लोकप्रिय थे। क्रिकेट के भगवान कहे जाने वाले आस्ट्रेलियाई बल्लेबाज 'डॉन ब्रेडमेन' ने एक बार कहा था–'मिस्टर ध्यानचंद.....जिस

तरह से क्रिकेट में रन बनते हैं, आप वैसे ही हॉकी में गोल करते हो।' ऑस्ट्रियाई मानते हैं कि ध्यानचंद दैवी प्रतिभा के धनी थे क्योंकि दो हाथों से इतने गोल संभव नहीं हैं। ऑस्ट्रिया की राजधानी वियना के एक क्लब में ध्यानचंद की चार हाथवाली मूर्ति स्थापित की गई है, जिसमें उनके चारों हाथों में हॉकी स्टिक है। कई बार विपक्षी टीमों ने उनकी स्टिक को तोड़कर देखा कि उसमें चुंबक आदि तो नहीं लगा रखा है, जिसके कारण वे दनादन गोल करते हैं।

उनको लोग ठीक ही 'हॉकी का जादूगर' कहते हैं। सन 1932 के लॉस एंजिल्स ओलम्पिक में भारत ने अमेरिका को 24–1 से हराया, जो एक विश्व रिकॉर्ड है। उस मैच में ध्यानचंद ने 8 और उनके छोटे भाई रूपसिंह ने 10 गोल किए थे।

ओलंपिक दुनिया की सर्वश्रेष्ठ खेल प्रतियोगिता होती है। इसका आयोजन प्रति चार वर्ष बाद होता है।

सन 1956 में ध्यानचंद को पद्मभूषण से सम्मानित किया गया था। सन 1972 के म्यूनिख ओलंपिक में विशेष अतिथि के रूप में ध्यानचंद को आमंत्रित किया गया, लेकिन आर्थिक स्थिति सही नहीं होने की वजह से वे सम्मान प्राप्त करने नहीं पहुँच सके थे। भारत सरकार ने ध्यानचंद के सम्मान में डाक टिकट भी जारी किया है। उनके जन्म दिवस 29 अगस्त को प्रतिवर्ष 'राष्ट्रीय खेल दिवस' के रूप में आयोजित किया जाता है। भारत के राष्ट्रीय खेल हॉकी का गौरव ध्यानचंद के परिवार ने भी खूब बढ़ाया है। उनके पुत्र अशोक कुमार ने सन 1975 के विश्व कप में गोल करके भारत को हॉकी में विश्व विजेता बनाया था।

हॉकी से संन्यास के बाद भी ध्यानचंद को विदेशों से कई अच्छे प्रस्ताव आए लेकिन उन्होंने धन के लिए देश नहीं छोड़ा। उन्होंने राष्ट्रीय खेल संस्थान पटियाला में ही प्रशिक्षक के रूप में कार्य किया।

3 दिसम्बर 1979 को दिल्ली के एक अस्पताल में हॉकी के इस जादूगर का निधन हुआ था। मेजर ध्यानचंद ने झाँसी के हीरो ग्राउंड पर हॉकी खेलना शुरू किया था। उनका अंतिम संस्कार भी इसी हीरो ग्राउंड पर हुआ था।

# अभ्यास

B8T3HJ

## 1- vkb,] 'kCnksa dk vFkZ tkusa &

- अचंभित – हैरान
- आग्रह – निवेदन
- अग्रिम – सबसे आगे
- क्रूरता – निर्दयता
- गुर सिखाना – दाँव पेंच सिखाना
- चिंतित – परेशान
- प्रशिक्षक – प्रशिक्षण देने वाला
- राज़ – रहस्य
- विनम्रतापूर्वक – नम्र भाव से
- विपक्षी – विरोधी
- शिकस्त – हराना

## 2- ikB ls &

(क) ध्यानचंद के चेहरे पर अफसोस के भाव होने पर भी वे मैच खेलते रहे। इसका क्या कारण था?

______________________________________________

______________________________________________

(ख) ध्यानचंद की खेल भावना में अनुशासन और धैर्य की भावना कूट–कूटकर भरी थी। इसका पता कैसे चलता है?

______________________________________________

______________________________________________

(ग) ध्यानचंद के बचपन का क्या नाम था? उनका नाम ध्यानचंद कब पड़ा?

______________________________________________

______________________________________________

(घ) हिटलर खेल का मैदान छोड़कर क्यों चले गए व उन्होंने अगले दिन ध्यानचंद को क्या प्रस्ताव दिया?

_____

_____

(ङ) मेजर ध्यानचंद की चार हाथों वाली मूर्ति कहाँ स्थित है, उनकी ऐसी मूर्ति क्यों बनाई गई?

_____

_____

(च) 1932 के ओलंपिक कहाँ हुए व इसमें कौन–सा विश्व रिकार्ड बना?

_____

_____

## 3- vkidh ckr &

(क) जर्मन शासक एडोल्फ हिटलर ध्यानचंद के प्रदर्शन को देखकर मैदान छोड़कर चले गए। आप किसी विपक्षी खिलाड़ी के बेहतर प्रदर्शन पर क्या करते हैं?

(ख) क्या आप भी ध्यानचंद की तरह देश की सेवा करना चाहते हैं? यदि हाँ, तो कैसे?

(ग) शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास को बनाए रखने के लिए हमारे जीवन में खेल महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बताइए, आप कौन–कौन से खेल खेलते हैं?

## 4- ikB l vkx &

(क) कौन से खेल के खिलाड़ी को 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया है खिलाड़ी का नाम बताएँ?

(ख) यदि गोल न होने का राज़ न खुलता तो ध्यानचंद के मन में किस प्रकार के विचार आते?

(ग) ध्यानचंद राष्ट्रीय खेल हॉकी में बेहतर प्रदर्शन कर 'हॉकी के जादूगर' कहलाए। सायना नेहवाल तथा सुशील कुमार कौन–कौन से खेलों में बेहतर प्रदर्शन कर रहें हैं ?

(घ) खेल खेलते समय विरोधी टीम का खिलाड़ी आप से दुर्व्यवहार करे तो एक अच्छा खिलाड़ी होने के नाते आप उसके साथ कैसा व्यवहार करेंगे ?

## 5- Hkk"kk dh ckr &

B92YP7

xkSy u gksus dk jkt [kqy x;kA

अंग्रेजों ने भारतवर्ष पर कई वर्ष राज किया।

उपर्युक्त वाक्यों में राज़ और राज शब्द दिए गए हैं, जिनमें से राज़ का अर्थ रहस्य और राज का अर्थ शासन है। इसी प्रकार कुछ अन्य शब्द दिए हैं, इनके अलग–अलग अर्थ बताकर वाक्य बनाएँ।

(क) जरा – ________________________________

ज़रा – ________________________________

(ख) नाज – ________________________________

नाज़ – ________________________________

(ग) गज – ________________________________

गज़ – ________________________________

(घ) सजा – ________________________________

सज़ा – ________________________________

'राज़ खुल जाना' एक मुहावरा है जिसका अर्थ है–भेद खुलना। नीचे कुछ मुहावरे दिए गए हैं। उनके अर्थ लिख कर वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए।

- मछली की तरह फिसलना – ______________________________
- धूल चटाना – ______________________________
- अग्रिम पंक्ति में गिना जाना – ______________________________

## 6- ;g Hkh djsa &

आपका मनपसंद खेल कौन–सा है? अपने मनपसंद खेल के बारे में कुछ वाक्य लिखें।

____________________________________________________________

____________________________________________________________

____________________________________________________________

____________________________________________________________

ikB 5

# नदी यहाँ पर

B9BUQU

नदी यहाँ पर मुड़ती है
फिर चलती ही जाती है
चलते–चलते सागर को
आख़िर में वह पाती है
मिलती लंबी राह उसे
देती है सबको पानी
सींच–सींचकर खेतों को
फसल बनाती है धानी
चलती किसी जगह सीधी
टेढ़ी होती कहीं–कहीं
लहर उठाती जाती है
लेकिन थकती कहीं नहीं
कहीं करारों में छिपती
मैदानों में आती है
खेल खेलती लुकाछिपी
बिलकुल ही खो जाती है
बहुत तेज़ थी पर्वत पर
लेकिन नीचे जब आई

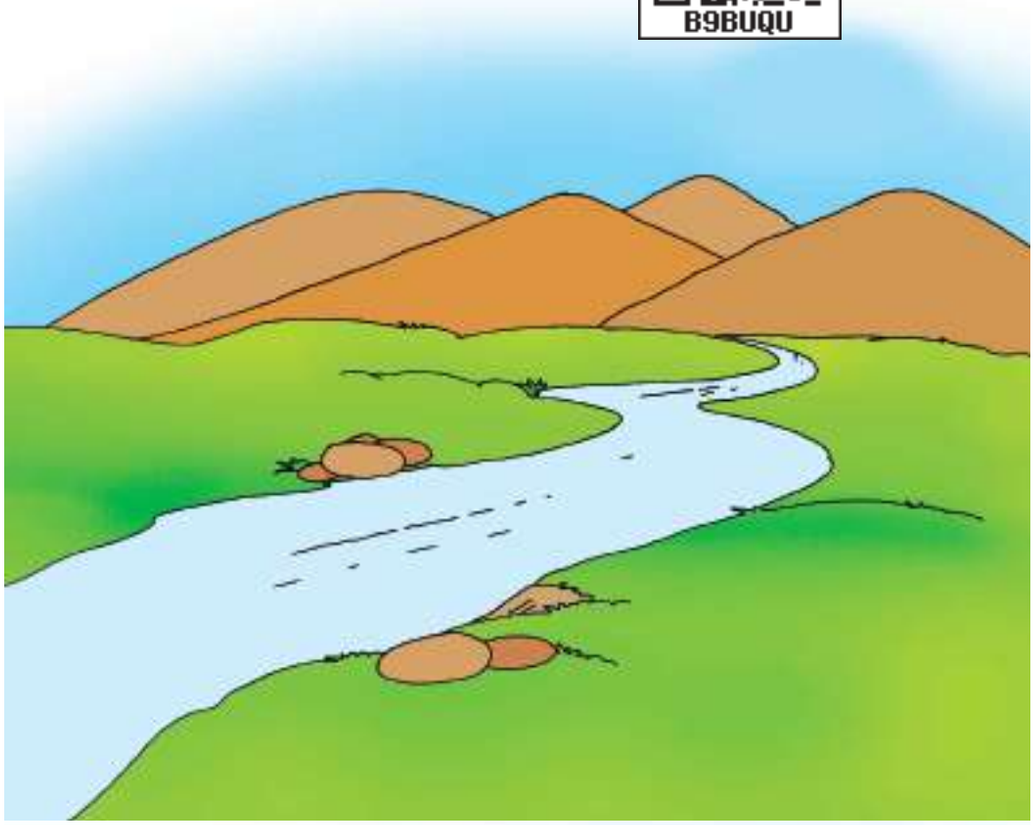

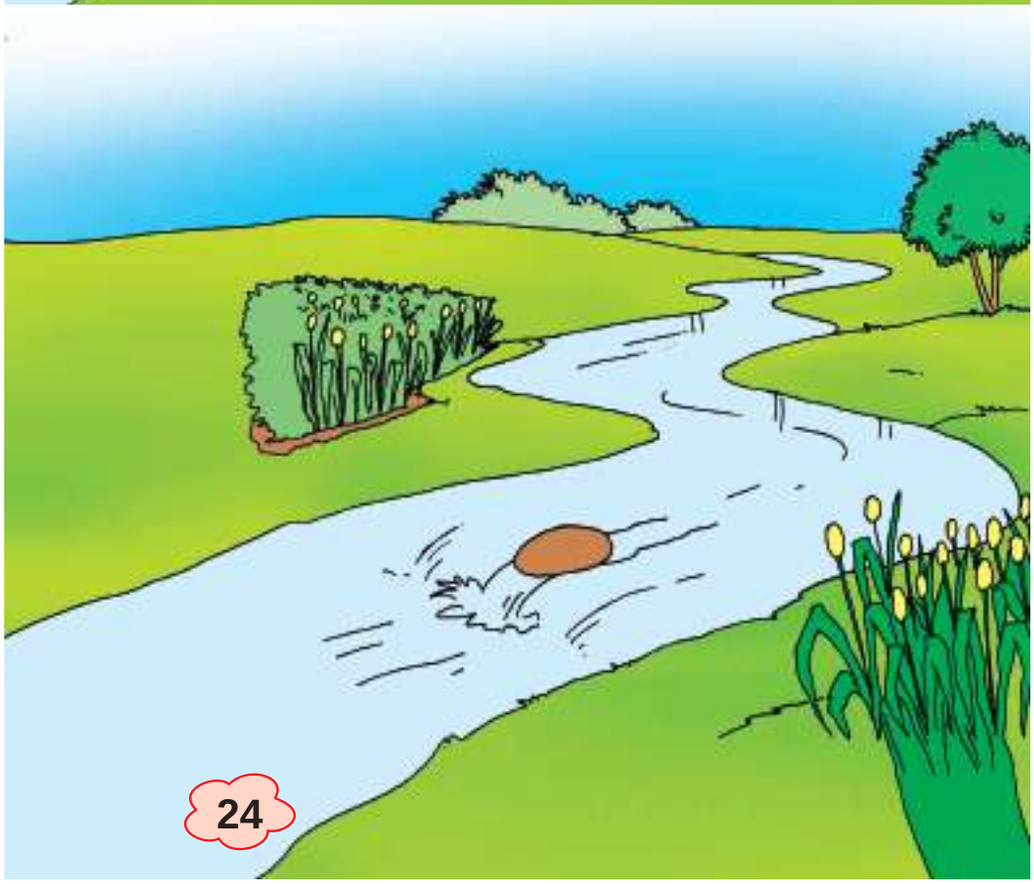

धीमी–धीमी चाल हुई
जैसे थककर सुस्ताई
पानी बिखराती जाती
हरियाली फैलाती है
चाहे जितना पानी लो
मन में बुरा न लाती है
किसे पता है, आई कब
मगर रहेगी चलती ही
एक दिये सी जगरमगर
सदा रहेगी जलती ही
सागर में मिल जाने पर
फिर बन जाती है सागर
तब तक चलती रहती है
रात और दिन धरती पर।

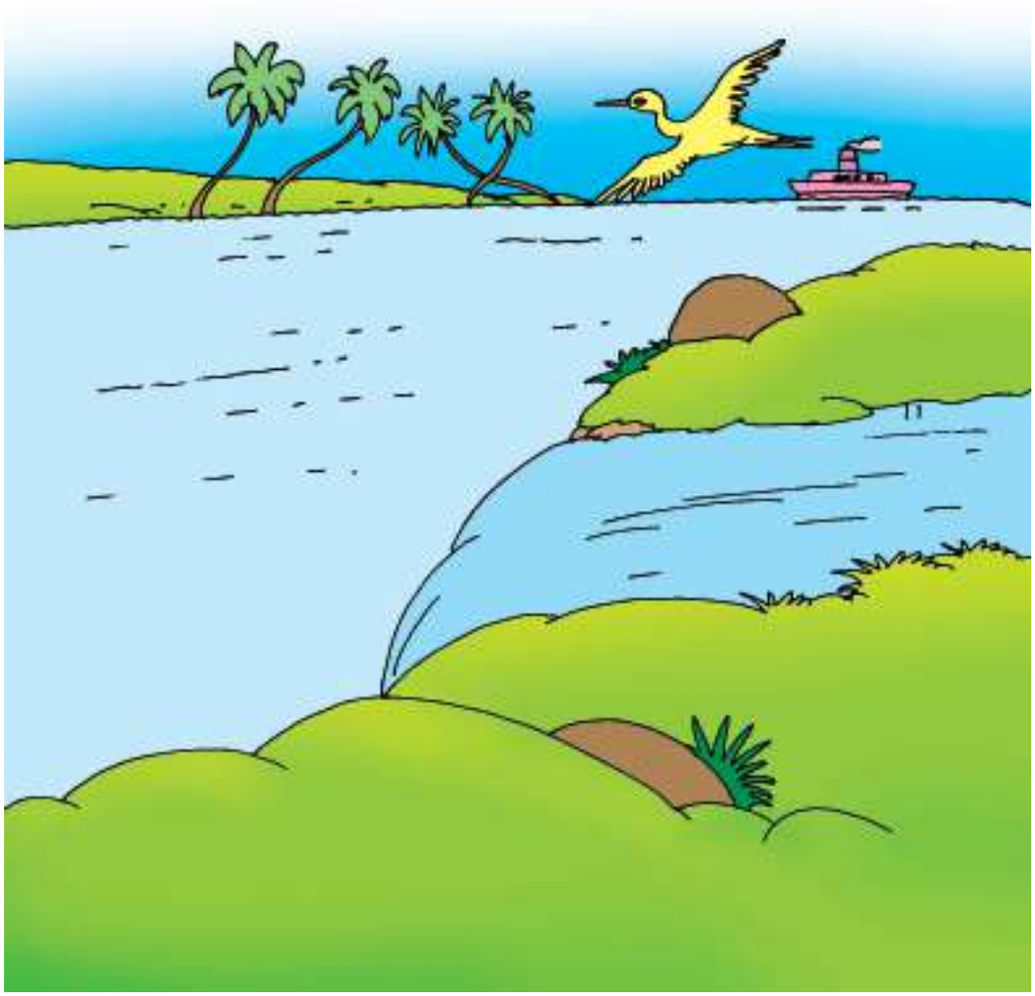

*–डॉ0 श्रीप्रसाद*

# अभ्यास

B9KQSH

## 1. आइए, शब्दों का अर्थ जानें –

- जगरमगर – जगमग
- सागर – समुद्र
- सींचकर – सिंचाई करके
- सुस्ताई – आराम किया

## 2. कविता से –

(क) नदी अंत में कहाँ पहुँचती है ?

________________________________________________

(ख) फसलों के लिए नदी का क्या महत्त्व है?

________________________________________________

(ग) नदी किसमें छिप जाती है ?

________________________________________________

(घ) नदी की चाल कहाँ पर तेज और कहाँ धीमी होती है ?

________________________________________________

(ङ) नदी फिर से सागर कैसे बन जाती है?

________________________________________________

## 3. आपकी बात –

(क) आपने कभी नदी/नहर अथवा बहता पानी देखा होगा। उसका वर्णन करें।

(ख) नदियाँ मनुष्य के लिए किस प्रकार से उपयोगी हैं ? आपस में चर्चा करें।

(ग) क्या आपने कभी नाव में बैठकर नदी की सैर की है, यदि हाँ, तो अपने अनुभव का वर्णन कीजिए।

## 4. कविता से आगे –

(क) भारत के मानचित्र में गंगा, यमुना, और इनकी सहायक नदियों के उद्गम स्थल को देखें और उनके तट पर बसे हुए पाँच प्रमुख नगरों के नाम लिखें।

(ख) मिलान करें–

| | |
|---|---|
| • संगम | • नदी का किनारा |
| • डेल्टा | • पहाड़ों के नीचे वह क्षेत्र जिसमें नदी पत्थरों में छिप जाती है |
| • उद्गम | • नदी के आस–पास का वह क्षेत्र जिसमें बरसात के दिनों में पानी भर जाता है। |
| • कगार | • जहाँ दो नदियाँ मिलती हैं। |
| • कछार | • नदी जहाँ समुद्र में मिलने से पहले गाद(कीचड़) जमा कर देती है। |
| • भाँभर | • पत्थरों में छिपी हुई नदी जिस क्षेत्र में पुनः प्रकट होती है और दलदल का निर्माण करती है। |
| • तराई | • नदी जहाँ से निकलती है। |

(ग) दी गई वर्ग पहेली में भारत की प्रमुख नदियों के नाम छिपे हैं, इन्हें ढूँढ़ें और लिखें–

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| य | मु | ना | कृ | ष्णा | गो |
| का | वे | री | न | र्म | दा |
| व्या | सिं | झे | चि | ना | व |
| स | त | ल | ज | गं | री |
| ता | प्ती | म | श्रा | गा | वी |

B9ULU5

## 5- Hkk"kk dh ckr &

(क) नदी चलती है। नदी उछलती है। नदी बहती है।
नदी गिरती है। नदी मिलती है। नदी मुड़ती है।

चलना, उछलना, बहना, गिरना, मिलना, मुड़ना ये सभी क्रियाएँ हैं इनसे किसी काम के होने का पता चलता है। आप कौन–कौन सी क्रियाएँ करते हैं, सोचें और लिखें–

_____ _____

_____ _____

_____ _____

(ख) कुछ शब्द ऐसे हैं जो पूरे वाक्य का अर्थ देते हैं, जैसे अमर – जो कभी न मरता हो। ऐसे ही कुछ वाक्य/वाक्यांश नीचे दिए गए हैं। आप उनके लिए एक–एक शब्द लिखें –

- जो दिखाई न दे – ————————————
- दिखने और छिपने का खेल – ————————————
- जिसे जीता न जा सके – ————————————
- जिसे मिटाया न जा सके – ————————————
- जहाँ धरती और आकाश मिलते हुए से प्रतीत होते हैं – ————————————
- जिसकी उम्र लंबी हो – ————————————
- जो सब कुछ जानता है – ————————————

(ग) कुछ शब्द एक–दूसरे का विपरीत अर्थ देते हैं जैसे आगे का पीछे, ऊपर का नीचे इन्हें विलोम शब्द कहते हैं। नीचे लिखे शब्दों के विलोम शब्द लिखें –

छिपना – ————————————

चलना – ————————————

टेढ़ा – ————————————

मोटा – ————————————

दिन – ————————————

सुंदर . – ————————————

आगे – ————————————

कल – ————————————

ikB

# 6 जासूस जमील

BA4HVS

नाम तो उसका जमील था, पर जमील को जानने वाले उसे 'जासूस जमील' कहते थे। जमील था भी 'जासूस किस्म' का लड़का। उसके स्वभाव में शक करना साँस लेने और खाना खाने जैसा था। वह किसी पर भी किसी भी तरह का शक कर सकता था।

जासूस जमील किसी को भी सीधे नहीं देखता था। वह शरीर को खास तरह से टेढ़ा करता और चेहरे को दाएँ या बाएँ घुमाकर तिरछी नज़र से देखता। भले ही देखी जा रही चीज़ पत्थर हो या इंसान।

जमील के बाल हमेशा माथे पर बिखरे रहते। उसकी बड़ी–बड़ी आँखें देखने को असरदार बनाती थी। खिसकती ढीली पतलून को वह कमर पर खास तरह से झटका देकर बार–बार ऊपर करता रहता।

जमील के जासूसी कारनामों की नई वजह उसकी अपनी बकरी कल्लो थी।

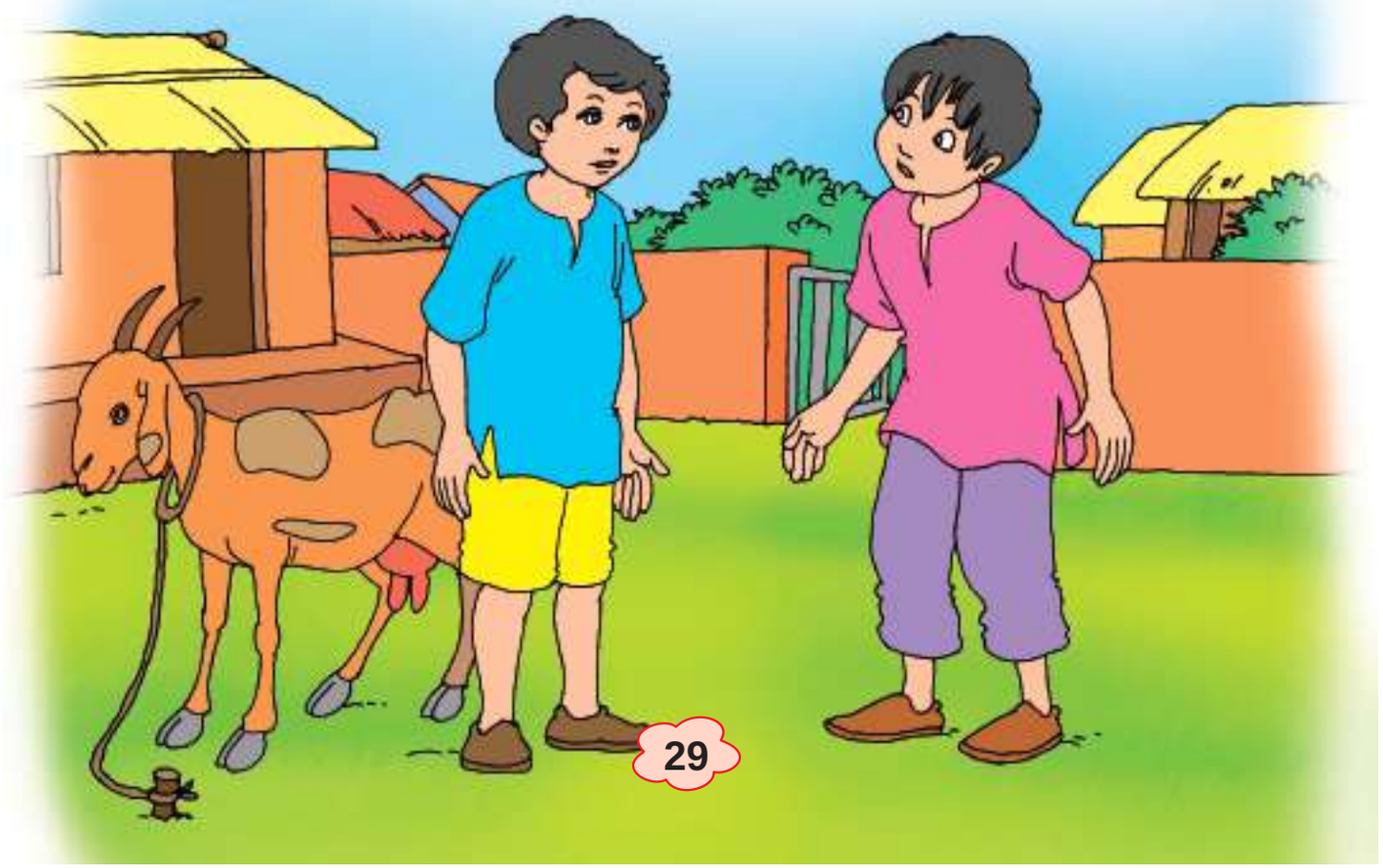

हुआ यह था कि कल्लो पिछले दो–तीन सप्ताह से कम दूध दे रही थी। जमील को शक था कि कोई चोरी से कल्लो का दूध निकाल रहा है। जमील के शक की सुई नंदू पर थी। नंदू जमील का हमउम्र और पड़ोसी था। शक का कारण यह था कि नंदू पहले से अधिक तन्दुरुस्त हो गया था। जमील को लग रहा था कि नंदू बकरी का दूध पीने की वजह से तंदुरुस्त हुआ है।

जमील को भूख सताने लगी, पर जासूसी के इस महान काम के लिए भूख और प्यास का बलिदान तो करना ही था।

जब भी जमील और नंदू का आमना–सामना होता, जमील नंदू को चेहरा घुमाकर तिरछी नज़र से देखता, मानो कह रहा हो, ''मुझे पता है बच्चू, बकरी का दूध कौन पीता है?'' जमील को हैरानी होती कि नंदू पर इसका कोई असर नहीं हो रहा।

इसलिए जमील ने तय किया कि नंदू का पीछा किया जाए। उसने नंदू का पीछा किया। उसे आधे गाँव का चक्कर लगाना पड़ा और नंदू के पीछे–पीछे उसके खेत तक भी जाना पड़ा।

फिर जमील ने बकरियों पर नजर रखने का फैसला किया। इसलिए अब्बू जैसे ही बकरियाँ लेकर निकले जमील उनके पीछे हो लिया।

जमील के अब्बू जंगल पहुँचकर एक पीपल के नीचे बैठ गए। जमील पास के आम की आड़ में छिपकर बकरियों की निगरानी करने लगा। कुछ देर बाद ही उसे प्यास लगने लगी। दोपहर में अब्बू ने कपड़े की पोटली से खाना निकाला, और खाने लगे। यह देखकर जमील को भी भूख सताने लगी पर जासूसी के इस महान काम के लिए भूख और प्यास का बलिदान तो करना ही था।

खाना खाकर अब्बू ने पेड़ की छाँव में अंगोछा बिछाया और सो गया। यह देखकर जासूस जमील ने सोचा– हूँ? तो यह बात है। अब्बू रोज़ सो जाते हैं और इसी का फायदा उठाकर नंदू बकरी का दूध निकाल लेता है।

यानी अब नंदू हाथ में लोटा लिए यहाँ आता ही होगा।

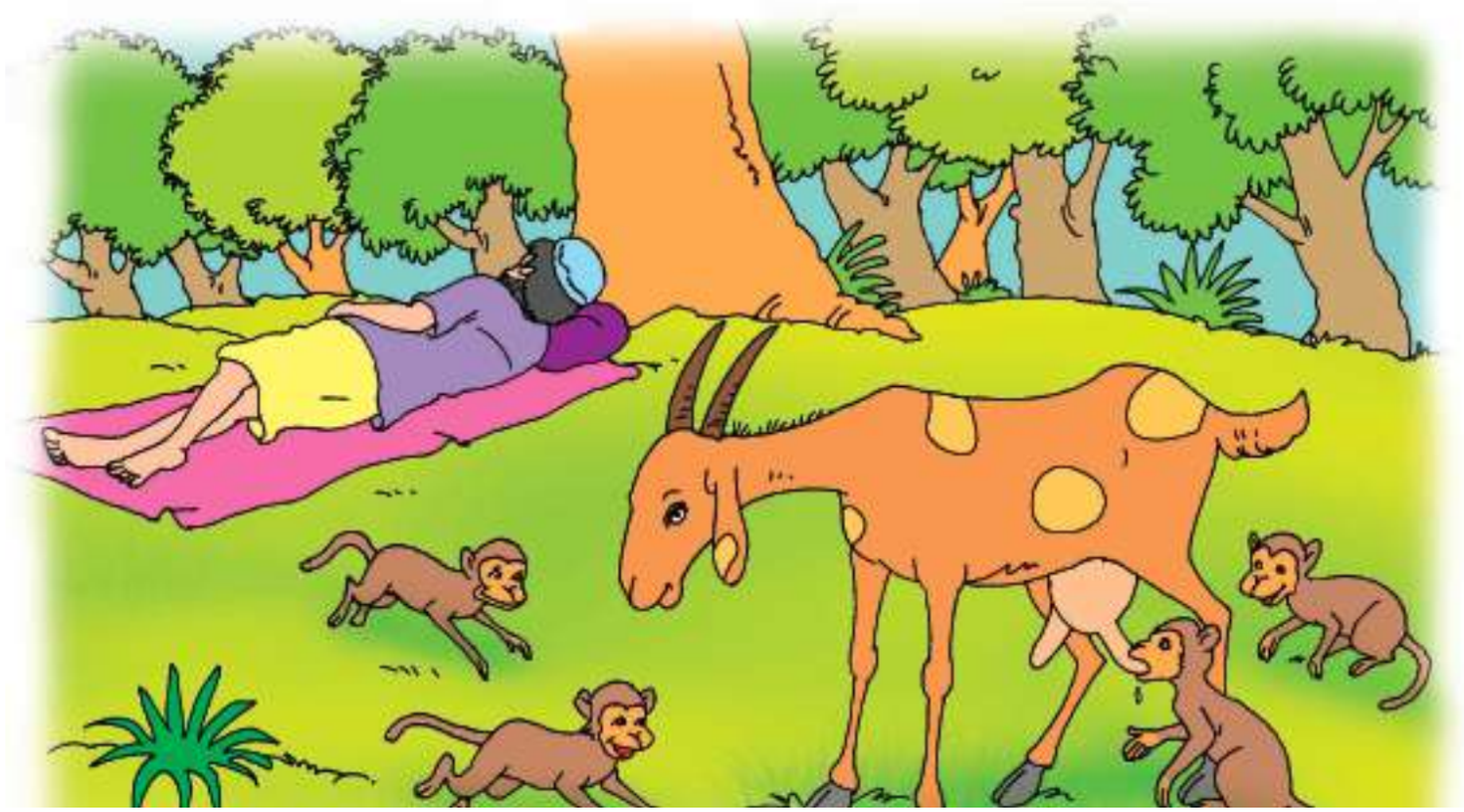

जमील अब बेसब्री से नंदू के आने का इंतजार कर रहा था। इसी बीच पीपल से बंदर के चार–पाँच बच्चे नीचे उतरे और बकरियों के आस–पास उछलकूद करने लगे। बकरियों पर बंदरों के आने का कोई असर नहीं पड़ा। लगता था, बकरियाँ बंदरों के साथ रहने की आदी हो गई हैं। बंदर का एक बच्चा जमील की बकरी कल्लो के पास गया और उसका दूध पीने लगा। बंदर का बच्चा जब तक दूध पीता रहा, तब तक कल्लो अपनी जगह चुपचाप खड़ी रही।

जमील ने भी यह सब देखा तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। अच्छा, तो ये मामला है। दूध बंदर के बच्चे पी जाते हैं, फिर जमील ने शरीर को खास तरह से टेढ़ा किया और अपने ही कंधे को तिरछी नज़र से देखते हुए बुदबुदाया–पता करना पड़ेगा कि बंदर के बच्चे को बकरी का दूध पीना किसने सिखाया?

*–चंदन यादव*

# अभ्यास

BADDXF

## 1- vkb,] ‘kCnk dk vFk tku &

- अंगोछा – शरीर पोंछने का वस्त्र
- असरदार – प्रभावी
- कारनामा – करतब
- निगरानी – देखरेख
- तंदुरुस्त – स्वस्थ
- बुदबुदाना – मुँह ही मुँह में बोलना
- स्वाभाविक – कुदरती, स्वतः
- हमउम्र – समान उम्र के

## 2- ikB ls &

(क) लोग जमील को किस नाम से पुकारते थे और क्यों ?

———————————————————————————

(ख) जासूस जमील किसी को भी सीधे नहीं देखता था। यहाँ पर सीधे नहीं देखने से आप क्या समझते हैं ?

———————————————————————————

(ग) जमील नंदू के आने का बेसब्री से इंतजार क्यों कर रहा था ?

———————————————————————————

(घ) दूधचोर को ढूँढ़ने के लिए जमील को क्या–क्या करना पड़ा ?

———————————————————————————

## 3- vkidh ckr &

(क) बकरी का दूध पीने पर जमील अपने दोस्त पर शक करता था, आप अपने दोस्त पर कब–कब शक करते हैं ?

(ख) जमील के पास एक बकरी थी, जिसे वह कल्लो के नाम से बुलाता था। आप अपने पालतू पशुओं को किन–किन नामों से बुलाते हैं ?

## 4- ikB l: vkx &

(क) जमील नंदू पर शक करता था लेकिन नंदू पर इसका कोई असर नहीं था। सोचो, ऐसा क्यों ?

(ख) बकरियाँ बंदरों के साथ रहने की आदी हो गई हैं। इसका क्या कारण रहा होगा?

(ग) बंदर के बच्चे को बकरी का दूध पीना किसने सिखाया होगा? सोचकर बताएँ।

## 5- Hkk"kk dh ckr &

(क)
- जमील सबको तिरछी नजर से देखता है।
- जमील ने सबको तिरछी नजर से देखा।
- जमील सबको तिरछी नजर से देखेगा।

यहाँ पहले वाक्य में क्रिया हो रही है, (वर्तमान काल) दूसरे वाक्य में क्रिया हो चुकी है (भूतकाल) और तीसरे वाक्य में क्रिया (भविष्य काल) में होगी। नीचे दिए गए उदाहरण के अनुसार क्रिया को बदलकर लिखें ।

| fØ;k | orZeku dky | Hkwrdky | Hkfo"; dky |
|---|---|---|---|
| पढ़ना – | मोहन पुस्तक पढ़ता है। | मोहन ने पुस्तक पढ़ी। | मोहन पुस्तक पढ़ेगा। |
| लिखना – | ———————— | ———————— | ———————— |
| खेलना – | ———————— | ———————— | ———————— |
| खाना – | ———————— | ———————— | ———————— |
| गाना – | ———————— | ———————— | ———————— |

(ख) "अब्बू ने कपड़े की पोटली से खाना निकाला।"

इस वाक्य में कपड़े और पोटली का परस्पर संबंध है। इसी प्रकार नीचे लिखे शब्दों का संबंध किनसे हैं ?

- घास की ————————
- लकड़ियों का ————————
- रुपयों की ————————
- मिठाई का ————————
- अंगूर का ————————
- बच्चों की/का ————————
- अनाज का/की ————————
- कागजों का ————————
- मेले की ————————
- तारों का ————————

(ग) तद्भव व तत्सम शब्द–

| rnHko | rRle |
|---|---|
| फूल | पुष्प |
| पानी | |
| आम | |
| दूध | |
| लड़की | |

(घ) ''जमील की बड़ी आँखें देखने को बड़ी असरदार बनाती थी''
इस वाक्य में 'असरदार' शब्द असर + दार के योग से बना है। ऐसे ही दार जोड़कर कुछ और शब्द बनाएँ –

| | |
|---|---|
| कर्ज़ | ———————— |
| इज्जत | ———————— |
| वफा | ———————— |
| हवा | ———————— |
| दुकान | ———————— |
| काँटे | ———————— |
| खबर | ———————— |
| घुमाव | ———————— |

(ङ) नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं जो उलट–पुलट हो गए हैं, उन्हें सही रूप में लिखें। जैसे –

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ड़ोपसी | – | पड़ोसी | सीसूजा | – | ———————— |
| रीरश. | – | ———————— | विकता | – | ———————— |
| मारकाना | – | ———————— | ननम | – | ———————— |
| पलपी | – | ———————— | बनदालि | – | ———————— |
| यदाफा | – | ———————— | पचापचु | – | ———————— |
| निरागनी | – | ———————— | | | |

(च) जमील नंदू को सीधा नहीं देखता था। वह शरीर को खास तरह से टेढ़ा करता और चेहरे को दाएँ या बाएँ तिरछा देखता । इस वाक्य में 'टेढ़ा' शब्द का समानार्थी तिरछा व विपरीत सीधा है, तो लिखें–

| ‘kCn | lekukFkh ‘kCn | foijhr ‘kCn |
|---|---|---|
| टेढ़ा | तिरछा | सीधा |
| राजा | ———————— | ———————— |
| गरीब | ———————— | ———————— |
| आकाश | ———————— | ———————— |
| दिन | ———————— | ———————— |
| अंधकार | ———————— | ———————— |

# बहन–भाई का प्यार (कुछ और पढ़ें)

सावन का महीना। रिमझिम– रिमझिम पड़ती फुहार। इन फुहारों के बीच पेड़ पर झूला डालकर महिलाएँ झूल रही थी। उसी पेड़ की फुनगी पर झूला झूलती हुई मैना सावन का गीत गुनगुना रही थी–

आई 'री सासड़ सावन तीज, हे री सावन तीज
हमनैं तो भेजो, म्हारै बाप के जी।'

गाते–गाते मैना अचानक दुखी हो गई। वह मन ही मन सोचने लगी–काश! मेरा भी कोई भाई होता, जो मेरा लणिहार बनकर आता और मुझे मायके ले जाता। इसी बीच उसे एक मोर दिखाई दिया। उसे लगा मानो, यह मोर उसके मायके से आया है। वह गाने लगी–

'आया री माँ मेरी पीहर का मोर, हे री, पीहर का मोर, चुग–चुग चाबै पीसणा जी।'
कह दे रे मोर पीहर की बात, हे रे, पीहर की बात, के रे करै थी, मेरी माय जी।

मोर, मैना के दुख को जानकर दुखी हो गया। वह भी अपने जीवन में बहन की कमी को महसूस करता था। वह मैना से बोला – हे बहन, उदास मत हो। आज से मुझे अपना भाई समझ। मैं वचन देता हूँ कि मैं भाई के सभी कर्त्तव्य भली–भाँति निभाऊँगा। भाई का प्यार पाकर मैना बहुत खुश हुई। सावन का महीना बीत गया। मोर ने पीपल के एक पेड़ पर अपने रहने का ठिकाना बनाया। इस शुभ अवसर पर मोर ने अपनी बहन मैना को

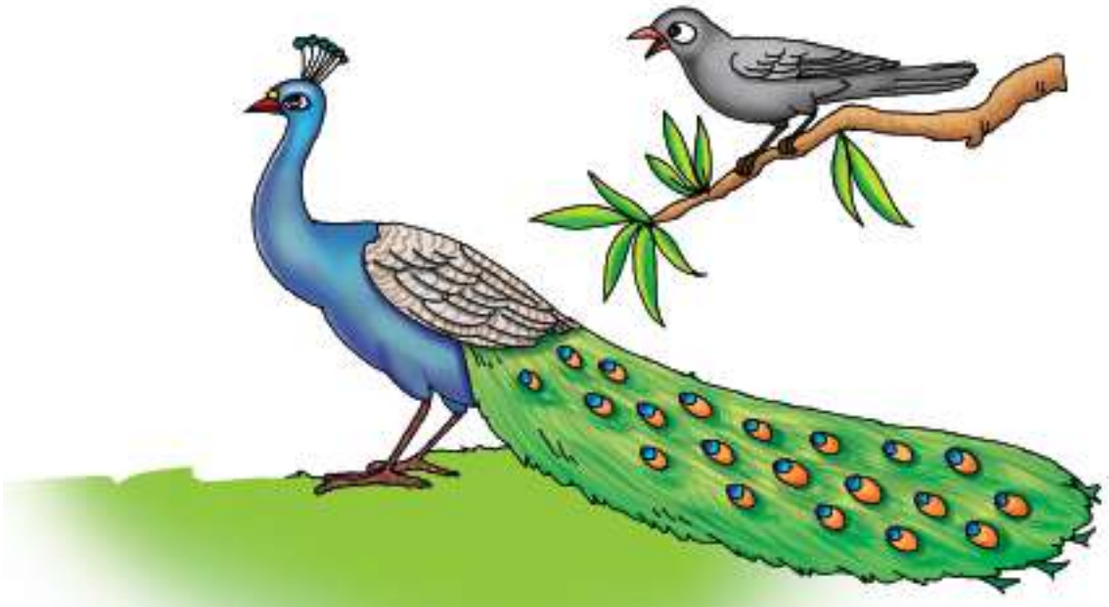

बुलाया। मैना फुर्र–फुर्र करती हुई अपने भाई के घर आई। उसने घर को बंदनवार से सजाया तथा अपने भाई व भाभी के लिए मंगल कामना की –

घर तेरा होवै मंगलकारी।
गूँजे बच्चों की किलकारी।।

मोर–मोरनी अपने नए घर में खुशी से रहने लगे। कुछ समय बाद मैना की मंगल कामना फलीभूत हुई। मोर के घर सुंदर सी बिटिया ने जन्म लिया। जब मैना ने यह सुना तो वह फूली न समाई। वह फुर्र–फुर्र करती हुई अपने भाई के घर आई तथा अपनी नवजात भतीजी को काज़ल लगाते हुए गाने लगी–

दुनिया नज़र लगावै मेरी गुड़िया को।
बुआ काज़ल लगावै मेरी गुड़िया को ।।

मैना ने अपनी भतीजी के लिए झुंझूणा, पालणा, लोरी आदि के गीत गाए।

मोरनी अपनी ननद के इस गीत को सुनकर मुस्कुराई। मोर ने अपनी बहन को अनेक उपहार देकर विदा किया। कुछ समय बाद मैना भी अपनी बेटी के विवाह की तैयारी में लग गई। वह अपने पति के साथ मोर के घर भात न्योतने गई। मोरनी ने तरह–तरह के पकवान बनाकर मैना और उसके पति को भोजन कराया –

''गेहूँ चने और जौ की रोटी, दाल सै चौलाई की,
फली ग्वार की कचरी खाओ, डाकल सरसम राई की।
देसी घी, बथुए की रोटी तैं, खातर करूँ जमाई की,
कढ़ी बाजरे कीम्ह जस कटगे, भुज्जी सै सिरियाई की।

भात न्योत अपने घर पहुँच मैना विवाह की तैयारियों में जुट गई। विवाह के दिन मोर भी अपनी पत्नी और बच्चों के साथ भात भरने के लिए बहन के घर आ पहुँचा। मैना फुदक–फुदक कर गाने लगी–

गलियारा बुहार आई–ए कि भाई–भाभी आवैंगे।
मेरा चुंडा मटके है कि चुंदड़ी लावैंगे।

मोर ने ऐसा भात भरा कि विवाह में चार चाँद लग गए। सभी मोर की प्रशंसा कर रहे थे। मैना ने अपने भाई, भाभी एवं भतीजे के लिए सुंदर – सुंदर उपहार दिए तथा उन्हें विदा करते हुए बोली–

'ईश्वर करे, हमारा भाई–बहन का प्यार सदा ऐसे ही बना रहे।'

*–लोककथा*

ikB

# 7 गाँधी जी महात्मा कैसे बने?

BAW61Q

क्या तुम एक ऐसे गाँधी जी की कल्पना कर सकते हो, जिन्होंने कुरता–पजामा पहन रखा हो, जिनके पाँव में चप्पल और सिर पर खूब सारे बाल हो सिर पर गाँधी टोपी हो और बच्चों के स्कूल बैग की तरह गले में झोला टाँग रखा हो! हाँ, गाँधी जी जैसे फोटो में दिखते हैं वैसे हमेशा से नहीं थे। वे धीरे–धीरे गाँधी बने। कैसे?

बचपन में गाँधी जी को अँधेरे से डर लगता था। लेकिन बड़े होकर वे इतने निडर हो गए कि अँग्रेज हुकूमत भी उनसे डरने लगी। जब उन्हें काठियावाड़ हाईस्कूल में पहली कक्षा में भर्ती कराया गया तब उनकी उम्र थी, ग्यारह साल। उन्हें जो विषय पढ़ाए जाते थे, वे थे–इतिहास, भूगोल, गणित और अँग्रेजी।

जब गाँधी जी इंग्लैंड पढ़ने गए, तो उनके लिए खूब सारे कपड़े सिलवाए गए। दक्षिण अफ्रीका में कुरता–धोती पहनने लगे और भारत आए तो एक बार मदुरै गए भाषण देने। वहाँ एक औरत को देखा जो तालाब में अपनी धोती धो रही थी। लेकिन कैसे? आधी पहनती थी और बाकी आधी धोती थी, फिर धुली हुई को पहन लेती थी और शेष को धोती थी। उसकी हालत देखकर गाँधी जी भीतर तक हिल गए और बस उसी समय उन्होंने फैसला कर लिया कि अब सिर्फ एक धोती ही पहनूँगा। बाद में गोलमेज सम्मेलन के लिए लंदन गए। वहाँ तो खूब सर्दी पड़ती है.....तो वहाँ के बच्चे पूछते थे, 'बाबा! तुम्हारी पतलून कहाँ गई?' गाँधी जी उन्हें कोई जवाब नहीं देते थे, बस हँसकर रह जाते थे

लेकिन जब रानी से मिलने गए तो रानी के दरबार में ऐसे जाना तो अदब–कायदे के खिलाफ था तो किसी ने पूछा कि इतने कम कपड़ों में दरबार में कैसे जाओगे? तो बोले, ''फिक्र मत करो! तुम्हारे राजा ने हम दोनों के बराबर कपड़े अकेले ही पहन रखे होंगे।''

गाँधी जी लिखते थे एक बढ़िया पैन से। वह पैन एक दिन चोरी हो गया। लिखने बैठे तो पाया कि पैन है ही नहीं। उसी समय एक बच्चे ने अपनी पैंसिल दे दी। लो बाबा, इससे लिख लो! उन्होंने लिखकर देखा, अरे वाह! इससे तो अच्छा लिखा जाता है और स्याही वगैरह भरने का झंझट भी नहीं। उन्होंने तय कर लिया कि अब पैंसिल से ही लिखेंगे और पैंसिल से उन्होंने पहली चिट्ठी किसे लिखी जानते हो भारत के वायसरॉय को!

लिखते–लिखते पैंसिल छोटी हो जाती तो उस पर कागज की भोंगली लगाकर धागे से बाँध लेते! दरअसल इन सबके पीछे कोई सनक नहीं बल्कि गाँधी जी की यह सोच थी कि जब आपके देश के अधिकांश लोग गरीब हों तो

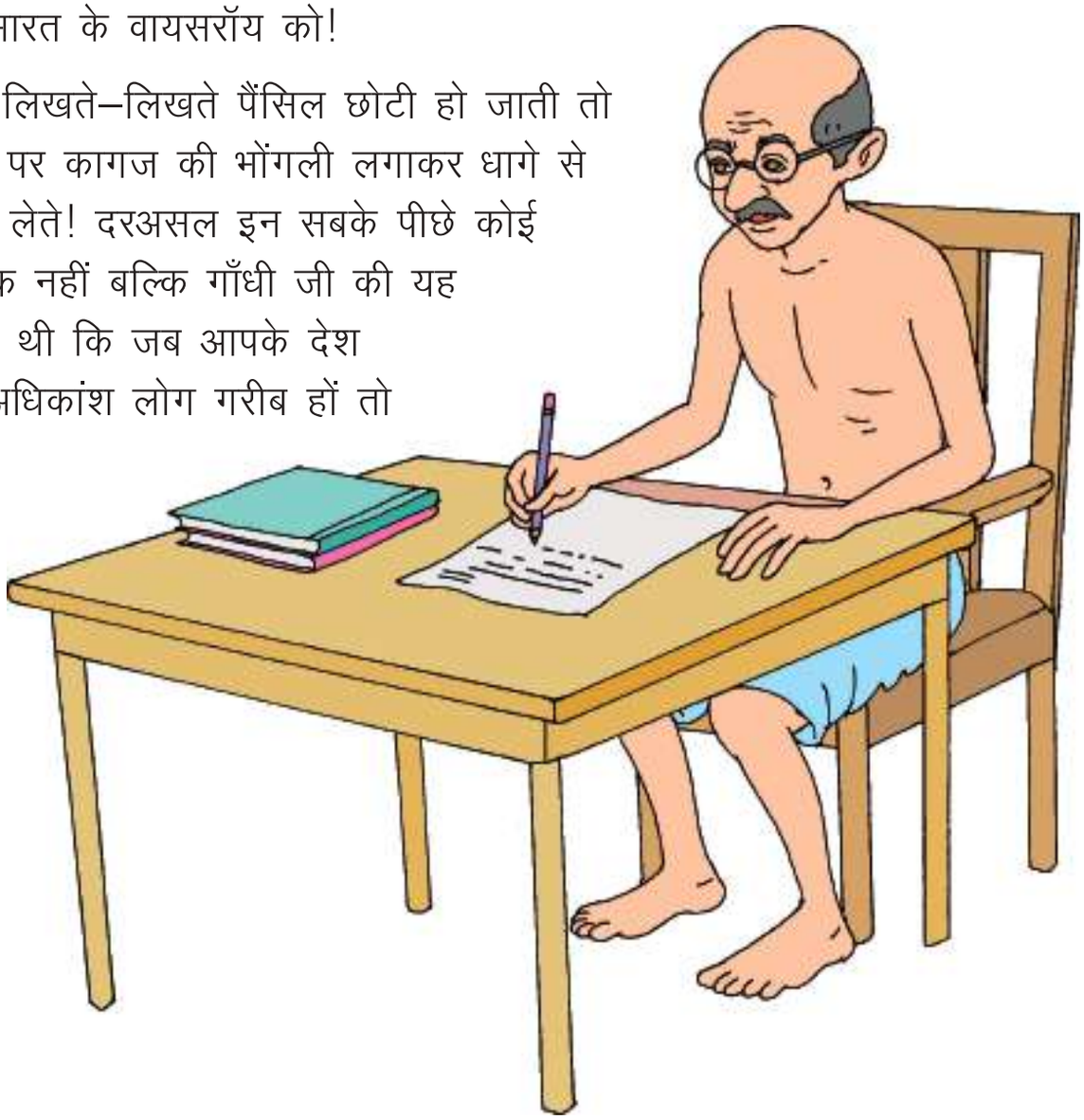

आपको फिजूलखर्ची और दिखावा नहीं करना चाहिए। अगर आप सचमुच अपने देश और देशवासियों से प्यार करते हैं तो आपको कम–से–कम में काम चलाना चाहिए और सादगी का महत्त्व समझना चाहिए। आप बड़े कहलाएँगे अपने विचारों से और अपने काम से, न कि अपने कपड़ों से। एक बार उनकी प्रार्थना सभा में कुछ अमीर आदमी सज–धजकर आ गए तो गाँधी जी ने उन्हें डाँट दिया। जैन धर्म में भी अपरिग्रह पर काफी जोर दिया गया है। 'अपरिग्रह' यानी फालतू की चीजें जमा मत करो! बस, गाँधी जी को तो जहाँ भी कुछ अच्छा लगता, अपना लेते थे तो उन्होंने अपरिग्रह को भी अपना लिया।

गाँधी जी के तीन बंदर बहुत मशहूर हैं। दरअसल यह एक खिलौना था, जो कुछ चीनी बच्चों ने गाँधी जी को भेंट किया था, लेकिन गाँधी जी ने उन्हें अपने जीवन का साथी बना लिया।

जब धोती पहननी शुरू कर दी तो जेब–घड़ी कहाँ रखें? तो उसे कमर में लटकाना शुरू कर दिया।

इस तरह गाँधी जी धीरे–धीरे वैसे गाँधी जी बन गए जैसा आजकल हम उन्हें उनके चित्रों में देखते हैं।

*–स्वयंप्रकाश*

# अभ्यास

## 1. आइए, शब्दों के अर्थ जानें –

- अदब–कायदे – शिष्टाचार
- अपरिग्रह – अनावश्यक धन एवं वस्तुओं का संग्रह न करना
- झंझट – परेशानी / विवाद
- फिकर – परवाह
- फिजूलखर्ची – व्यर्थ का खर्च
- वॉयसराय – भारत में सबसे बड़ा अंग्रेज अधिकारी
- हुकूमत – शासन

## 2. पाठ से –

(क) बचपन में गाँधी जी को किस से डर लगता था?

______________________________________________

______________________________________________

(ख) गाँधी जी ने सिर्फ एक धोती पहनने का फैसला कब किया?

______________________________________________

______________________________________________

(ग) गाँधी जी सादगी का समर्थन क्यों करते थे?

______________________________________________

______________________________________________

(घ) गाँधी जी के तीन बंदर वास्तव में क्या थे? उन्हें किसने भेंट किया था?

______________________________________________

______________________________________________

(ङ) गाँधी जी ने चिट्ठी लिखने के लिए पैंसिल का प्रयोग क्यों किया?

_____

_____

## 3- vkidh ckr &

(क) जब आप किसी व्यक्ति को गरीबी या बेबसी की स्थिति में पाते हैं तो आपके मन में क्या ख्याल आता है?

(ख) गाँधी जी को बचपन में अंधेरे से डर लगता था। आपको, किससे डर लगता है और क्यों?

## 4- ikB ls vkx &

(क) यह भी जानें–

- गाँधी जी का पूरा नाम क्या था?
- गाँधी जी के माता–पिता का क्या नाम था?
- गाँधी जी को सबसे पहले महात्मा किसने कहा?
- गाँधी जी को राष्ट्रपिता की उपाधि किसने दी?
- सत्याग्रह क्या है?
- गाँधी जी के तीन बंदर हमें क्या सिखाते हैं?

(ख) आजादी की लड़ाई के दौरान हमारे देश के नेताओं ने कुछ नारे दिए। जिन्होंने पूरे देश में जोश और उमंग का संचार कर दिया। इस बारे में अपने शिक्षक महोदय से चर्चा करें और मिलान करें –

| | |
|---|---|
| • अंग्रेजों भारत छोड़ो | सुभाषचंद्र बोस |
| • स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है | भगतसिंह |
| • जय जवान, जय किसान | महात्मा गाँधी |
| • तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा | बालगंगाधर तिलक |
| • इंकलाब जिंदाबाद | लालबहादुर शास्त्री |

## 5- Hkk"kk dh ckr &

BBEX51

(क) सुनें, बोलें और लिखें–

- क्षत्रिय, छतरी _____
- कक्षा, इच्छा _____
- डाल, ढाल _____
- डलिया, लड़ियाँ _____
- गड़ना, गढ़ना _____
- आराध्य, विद्यार्थी _____
- प्रसिद्ध, प्रतिपाद्य _____

(ख) कुछ वस्त्रों या परिधानों के नाम जोड़ें में आते हैं, जैसे– कुरता–धोती। ऐसे ही कुछ परिधानों के नाम नीचे दिए गए हैं। आप उनके जोड़े वाले परिधानों के नाम लिखें–

- पजामा – _____
- लहँगा – _____
- साड़ी – _____
- पैंट – _____
- घाघरा – _____
- स्कर्ट – _____
- कोट – _____
- सलवार – _____

(ग) सही वर्तनी वाले शब्द चुनकर लिखें–

| शब्द | | शुद्ध शब्द |
|---|---|---|
| आशीर्वाद, आर्शीवाद | – | _____ |
| इन्चार्ज, इंचार्ज | – | _____ |
| उज्ज्वल, उज्जवल | – | _____ |
| विद्यालय, विधालय | – | _____ |
| सन्यासी, संन्यासी | – | _____ |
| कवयित्री, कवियत्री | – | _____ |
| श्रीमति, श्रीमती | – | _____ |
| रात्रि, रात्री | – | _____ |

ऋषभ, रिषभ – ————————————————

ढ़ाबा, ढाबा – ————————————————

(घ) कुछ शब्द ऐसे होते हैं जो सुनने में लगभग समान होते हैं, परंतु उनके अर्थ एकदम भिन्न होते हैं, जैसे– वास (निवास), बास (गंध)। ऐसे ही कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। आप उनके अर्थ लिखें–

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| वात | (————————) | – | बात | (————————) |
| कुल | (————————) | – | कूल | (————————) |
| दिन | (————————) | – | दीन | (————————) |
| ओर | (————————) | – | और | (————————) |
| मूल्य | (————————) | – | मूल | (————————) |
| काला | (————————) | – | काल | (————————) |
| ग्रह | (————————) | – | गृह | (————————) |
| सुत | (————————) | – | सूत | (————————) |

(ङ) कुछ शब्द किसी अन्य शब्द (संज्ञा) की विशेषता बताते हैं,
जैसे :– 'अच्छा आदमी' में आदमी की विशेषता बतलाई गई है इसलिए यह विशेष्य है। ऐसे ही कुछ शब्द और उनकी विशेषता बताने वाले शब्द (विशेषण) नीचे दिए गए हैं। इनका मिलान करें –

| fo'k"k.k | fo'k";  |
|---|---|
| काली | दूध |
| घने | खेत |
| ऊँचा | घटाएँ |
| समतल | पर्वत |
| सफेद | लड़की |
| लहलहाती | गर्मी |
| दो किलो ग्राम | जंगल |
| लंबी | आदमी |
| बहुत | फसलें |
| मोटा | घी |

# vkiu fdruk lh[kk

1- lgh 'kCn NkVdj ckDl e fy[k&

- अग्रिम अग्रीम अगरिम ________________
- सुसताई सुस्ताई सूस्ताई ________________
- सवाभाविक सुवाभाविक स्वाभाविक ________________
- सन्यासी संन्यासी संयासी ________________

2- fuEufyf[kr 'kCnk d vFk fy[k&

- जरा ________________ ________________
- ज़रा ________________ ________________
- नाज ________________ ________________
- नाज़ ________________ ________________
- सजा ________________ ________________
- सज़ा ________________ ________________

3- fuEufyf[kr fØ;kink dk i;kx djr g, okD; cuk,&

- गिरना ____________________________________________
- मिलना ____________________________________________
- उछलना ____________________________________________
- चलना ____________________________________________

4- fuEufyf[kr ukj fdlu fn,\

- स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है ______________________
- तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा ______________________

5- fuEufyf[kr ifDr;k dk ljy vFk fy[k&

चलती किसी जगह सीधी,

टेढ़ी होती कहीं–कहीं।

लहर उठाती जाती है,

लेकिन थकती कहीं नहीं।

_____

_____

_____

6- fuEufyf[kr 'kCnk dk okD; i;ksx djd fy[k&

- सुंदर _____ _____
- कुरूप _____ _____
- दिन _____ _____
- रात़ _____ _____

7- fuEufyf[kr d rnHko :i fy[k&

- पुष्प _____
- आम्र _____
- दुग्ध _____

8- fuEufyf[kr i'uk d mÙkj fy[k&

- 'ध्यानचंद का नाम ध्यानचंद कब पड़ा?

_____

- नदी फिर से सागर कैसे बन जाती है?

_____

ikB
# 8 सूरदास के पद

मैया मोरी, मैं नहिं माखन खायो।
भोर भए गैयन के पाछे, मधुबन मोहि पठायो।।
चार पहर बंसीवट भटक्यो, साँझ परे घर आयो।
मैं बालक बँहियन को छोटो, छीको केहि विधि पायो।।
ग्वाल–बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लपटायो।
तू जननी मन की अति भोरी, इनके कहे पतियायो।।
यह ले अपनी लकुटि कमरिया, बहुतहि नाच नचायो।
सूरदास तब बिहँसि जसोदा, ले उर कंठ लगायो।।

मैया कबहिं बढ़ैगी चोटी।
किती बार मोहिं दूध पियत भई, यह अजहूँ है छोटी।।
तू जो कहती बल की बेनी ज्यौं ह्वै है लांबी मोटी।
काढ़त गुहत, न्हावत ओछत नागिन सी भुई लोटी।।
काँचौ दूध पियावत पचि–पचि, देति न माखन रोटी।
सूरज चिरजिवौ दोऊ भैया हरि हलधर की जोटी।।

# अभ्यास

## 1- vkb,] ‘kCnksa dk vFkZ tkusa &

- ओछत – तेल लगाते और कंघी करते समय
- उर – छाती
- कमरिया – कंबल
- काँचौ – कच्चा
- काढ़त – सँवारता
- केहि विधि – किस प्रकार
- गैयन – गाय
- गुहत – गुँथती
- चिरजिवौ – चिरंजीवी
- चोटी – शिखा/बालों की लट/बेनी
- छीको – सामान रखने के लिए लटकाई गई छोटी टोकरी
- न्हावत – नहलाती
- पतियायो – बहकावे में आना
- पियत – पीते हुए
- बँहियन – बाजू
- बरबस – जबरदस्ती
- बिहँसि – हँसकर
- बेनी – चोटी
- भुई – भूमि/जमीन
- भोर – प्रातः काल का समय (सूर्योदय से पहले)
- लोटी – लेटना
- लाँबी – लंबी
- लकुटि – लकड़ी
- हलधर – बलराम
- हरि – कृष्ण

BHT6KK

## 2- dfork lh &

(क) बालकृष्ण माँ यशोदा से मक्खन न खाने का क्या–क्या तर्क देते हैं ?

———————————————————————————————

(ख) कृष्ण माँ यशोदा से ग्वालों की क्या शिकायत करते हैं ?

———————————————————————————————

(ग) कृष्ण की सारी शिकायतें सुनकर माँ यशोदा क्या कहती है?

———————————————————————————————

(घ) माँ यशोदा कृष्ण को चोटी बढ़ने का क्या उपाय बताती है?

———————————————————————————————

(ङ) 'काँचौ दूध  पियावत पचि–पचि' में क्या भाव व्यक्त हुआ है ?

———————————————————————————————

(च) माँ यशोदा ने श्रीकृष्ण को अपने हृदय से क्यों लगा लिया ?

———————————————————————————————

(छ) निम्नलिखित भाव कविता की कौन सी पंक्तियों से प्रकट होता है। छाँटकर लिखें–

मैं छोटा–सा बालक हूँ। मेरी छोटी–छोटी बाँहें हैं। भला मैं छीके तक कैसे पहुँच सकता हूँ?

———————————————————————————————

———————————————————————————————

(ज) माँ, तू मन की बहुत भोली है, जो इन ग्वालों के कहने पर बहक जाती है।

———————————————————————————————

———————————————————————————————

## 3- vkidh ckr &

(क) बालक कृष्ण को मक्खन खाना सबसे अच्छा लगता है, आपको खाने में कौन–कौन सी चीजे पसंद है? सूची बनाएँ।

(ख) कृष्ण ग्वालों के साथ खेलते हुए खुशी का अनुभव करते हैं। आप जिन–जिन दोस्तों के साथ खेलते हैं, उनके नाम याद करते हुए कोई रोचक घटना कक्षा में सुनाएँ।

## 4- dfork l; vkx &

(क) गायों को चराते समय श्रीकृष्ण बाँसुरी बजाते थे। उस समय अन्य ग्वाले क्या करते होंगे ? कल्पना करें और बताएँ।

(ख) गाय पालतू पशु है। पता लगाएँ और लिखें कि गाय पालने से क्या–क्या लाभ हैं?

_____

_____

_____

(ग) अपने पुस्तकालय से सूरदास द्वारा रचित कृष्ण बाललीला के कोई दो पद संकलित करें और कंठस्थ करके कक्षा में सुनाएँ।

## 5- Hkk"kk dh ckr &

BN32M8

(क) कविता में छोटी–मोटी–लोटी जैसे तुकबंदी वाले कुछ शब्द आए हैं। ऐसे ही अन्य शब्द छाँटकर लिखें–

_____ _____ _____ _____

_____ _____ _____ _____

_____ _____ _____ _____

_____ _____ _____ _____

(ख) मैया को माँ या माता भी कहते हैं, तो बताइए, नीचे लिखे शब्दों के लिए अन्य कौन से शब्द प्रयोग किए जाते हैं।

भैया _____ _____

घर _____ _____

गाय _____ _____

दूध _____ _____

ikB 9

# आसमान से परे

BNBXNV



एक लड़की तारों भरे आसमान को निहार रही थी। नीले आसमान में टूटते तारों को देखकर उसके मन में हमेशा अनेक प्रश्न उठते वह सदा इन प्रश्नों का उत्तर खोजने को उत्सुक रहती थी। धीरे–धीरे ये प्रश्न उस लड़की की अंतरिक्ष उड़ान की इच्छा में बदल गए। अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति, कठोर परिश्रम, लगन और आत्मविश्वास के सहारे एक दिन इस लड़की ने भारत की प्रथम महिला अंतरिक्ष यात्री बनकर भारतीय महिलाओं के लिए अंतरिक्ष यात्रा का मार्ग प्रशस्त कर दिया। जानते हो, कौन थी वह लड़की? वह थी – हरियाणा की कल्पना चावला।

कल्पना चावला का जन्म 17 मार्च 1962 को करनाल में हुआ था। बचपन से ही कल्पना बहुत जिज्ञासु थी। जब वह गेंद से खेलती तो सोचती, ''अगर इस गेंद को बहुत ज़ोर से फेंका जाए तो क्या यह आसमान से बाहर जा सकती है ?'' जब वह लुका–छिपी खेलती तो सोचती, ''आसमान से परे क्या छिपा होगा?'' ऐसा लगता था कि हर समय उसके मन में तो आसमान से परे जाने की ही धुन सवार रहती थी। कल्पना को किताबें पढ़ने का भी बहुत शौक था। जैसे–जैसे वह बड़ी हुई उसके बहुत–से सवालों के जबाब, जिनके उत्तर की उसे खोज थी, वे उसे किताबों में ही मिल गए। उसे पता चल गया कि आसमान से परे जो जगह है, उसे अंतरिक्ष कहते हैं। अंतरिक्ष इतना विशाल है कि इसके ओर–छोर का कोई अता पता नहीं है। उसे यह भी पता चला कि अंतरिक्ष में जाने के लिए खास तरह के विशाल यान होते हैं, जिन्हें अंतरिक्ष यान कहते हैं।

कल्पना थोड़ी बड़ी हुई तो उसका दाखिला करनाल के ही एक विद्यालय में करवा दिया गया। एक बार उसकी विज्ञान की अध्यापिका ने सब बच्चों को एक परियोजना तैयार करने के लिए दी। कल्पना की अंतरिक्ष में विशेष रुचि शुरू से ही थी । उसने इस परियोजना के लिए 'मंगलग्रह' विषय चुना। जब अध्यापिका ने कल्पना की परियोजना को देखा तो खुश भी हुई और हैरान भी। उन्होंने कहा,

'बहुत सुंदर काम किया है कल्पना लेकिन एक बात तो बताओ, तुमने परियोजना के लिए मंगल ग्रह का ही विषय क्यों चुना?'

क्योंकि मंगल ग्रह हमारी पृथ्वी से बहुत मिलता–जुलता ग्रह है और पृथ्वी का पड़ोसी भी है। एक दिन मैं मंगल ग्रह पर ज़रूर जाऊँगी, कल्पना ने जवाब देते हुए कहा।

अंतरिक्ष में जाने के अपने सपने को पूरा करने के लिए कल्पना ने काफी मेहनत की।

भारत से बहुत दूर एक देश है–अमेरिका। अमेरिका की एक बहुत बड़ी संस्था है–'नासा' । 'नासा' अमेरिका के लिए अंतरिक्ष यात्रा के अभियान आयोजित किया करती है। सन 1994 में कल्पना को पता चला कि 'नासा' ने अपने नए अभियान के लिए लोगों से आवेदन पत्र मँगवाए हैं। लोगों की काबिलियत जाँचकर उन्हें चुना जाएगा और अंतरिक्ष में भेजने से पहले प्रशिक्षण दिया जाएगा। कल्पना ने भी इसके लिए आवेदन कर दिया।

नासा के इस अभियान में 2000 से अधिक लोगों ने आवेदन किया था। इनमें से 23 लोगों को चुना गया। जिनमें 5 महिलाएँ थीं। कल्पना चावला को भी इस अभियान के लिए चुन लिया गया था।

सन 1997 में कल्पना ने अंतरिक्ष यान में बैठकर अपनी पहली अंतरिक्ष यात्रा की। कल्पना के साथ पाँच और यात्री थे। कल्पना इस दल में 'वैज्ञानिक विशेषज्ञ' के रूप में काम कर रही थी।

अंतरिक्ष यान में सवार होकर अंतरिक्ष की यात्रा कोई आसान काम नहीं है। अंतरिक्ष में यात्रियों को किसी भी चीज़ के भार का एहसास नहीं होता। यान में भी सब तैरते से रहते हैं। ऐसी हालत में पानी पीने जैसा आसान काम भी बहुत कठिन हो जाता है।

अंतरिक्ष यात्रा में लापरवाही की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ी जाती। ज़रा सी असावधानी दुर्घटना का कारण बन सकती है। इसलिए अंतरिक्ष यात्रियों के काम–काज का एक–एक मिनट पहले से निर्धारित होता है। अंतरिक्ष यान में ज्यादा जगह भी नहीं होती। इसलिए यात्री बहुत ज़रूरी सामान ही साथ लेकर जाते हैं। अंतरिक्ष में भोजन बनाने का न तो समय होता है, न ही इंतज़ाम होता है, इसलिए पहले से तैयार डिब्बाबंद भोजन ले जाते हैं। कल्पना पूरी तरह शाकाहारी थी। उनके लिए विशेष रूप से शाकाहारी भोजन का प्रबंध किया गया था।

कल्पना अंतरिक्ष में पंद्रह दिन सोलह घंटे और तैंतीस मिनट रहीं। अपना काम पूरा करके वे 5 दिसंबर 1997 को सुरक्षित पृथ्वी पर लौट आईं। लौटने के बाद उनका हार्दिक स्वागत और सम्मान किया गया।

कल्पना की अंतरिक्ष–यात्रा यहीं समाप्त नहीं हुई। नासा ने उसे दूसरी अंतरिक्ष यात्रा के लिए भी चुन लिया। एक बार फिर कल्पना को कड़ा प्रशिक्षण दिया गया। 16 जनवरी 2003 को कल्पना ने अंतरिक्ष के लिए अपनी दूसरी उड़ान भरी। पंद्रह दिन तक अंतरिक्ष में रहकर उसने अनेक शोध किए।

1 फरवरी 2003 को अंतरिक्ष यान ने धरती की ओर लौटना शुरू किया। सभी अंतरिक्ष यात्री खुश थे। उन्हें क्या पता था कि वे धरती पर कभी लौट ही न सकेंगे! धरती के वायुमंडल में प्रवेश करते समय अंतरिक्ष–यान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। पूरी दुनिया में यह दर्दनाक खबर फैल गई।

करनाल का चमकता सितारा, सितारों में विलीन हो गया लेकिन उसने लाखों लोगों के मन में सितारों तक पहुँचने का सपना जगा दिया है।

# अभ्यास

## 1- vkb,] 'kCnksa dk vFkZ tkusa &

- अंतरिक्ष – आसमान
- अभियान – विशेष कार्य हेतु प्रयास
- जिज्ञासु – जानने की इच्छा रखने वाला
- दर्दनाक – ज्यादा दर्द देने वाली, दुखद
- दुर्घटना – बुरी घटना
- धुन – लगन
- निर्धारित – तय
- निहारना – ध्यान से देखना
- परियोजना – प्रोजेक्ट
- प्रशिक्षण – किसी कार्य को करने की शिक्षा देना
- विलीन – समा जाना
- विशाल – बहुत बड़ा
- विशेषज्ञ – किसी विषय का विशेष जानकार
- शोध – खोज़

## 2- ikB ls &

(क) 'बचपन से ही कल्पना बहुत जिज्ञासु थी।' कल्पना किन–किन चीज़ों के बारे में जानने की इच्छा रखती थी।

______________________________________________

______________________________________________

(ख) कल्पना के मन में तरह–तरह के सवाल आते–जाते रहे। कल्पना के मन में उठने वाले सवालों के जवाब उसे कहाँ–कहाँ से मिले ?

______________________________________________

______________________________________________

(ग) कल्पना की परियोजना को देखकर अध्यापिका क्यों खुश हुई?

_____

_____

(घ) अंतरिक्ष यात्रा से पूर्व किस तरह की तैयारियों की आवश्यकता होती हैं।

_____

_____

(ङ) कल्पना का अंतरिक्ष यात्रा के लिए कब व कैसे चयन किया गया?

_____

_____

## 3- vkidh ckr &

(क) कल्पना चावला ने मंगलग्रह पर परियोजना बनाई थी, आप किस विषय पर परियोजना बनाना चाहेंगे?

(ख) कल्पना की तरह यदि आपको अंतरिक्ष में जाने का अवसर मिले तो आप कैसा अनुभव करेंगे? सोचकर बताएँ।

(ग) कल्पना अंतरिक्ष में उड़ान भरने का सपना देखती थी, आप कौन सा सपना देखते हैं?

## 4- ikB ls vkx &

(क) एक बार फिर कल्पना को कड़ा प्रशिक्षण दिया गया। अंतरिक्ष में जाने से पहले कल्पना को प्रशिक्षण में क्या–क्या सिखाया गया होगा ?

(ख) 'मंगल ग्रह पृथ्वी ग्रह से मिलता–जुलता है।' अध्यापक से चर्चा करें कि मंगल और पृथ्वी ग्रह की क्या–क्या बातें मिलती–जुलती हैं।

1. _____ 5. _____

2. _____ 6. _____

3. _____ 7. _____

4. _____ 8. _____

(ग) अमेरिका में एक बहुत बड़ी संस्था है– 'नासा'। 'नासा' अमेरिका के लिए अंतरिक्ष यात्रा के अभियान आयोजित किया करती है। भारत में ऐसी कौन सी संस्था है जो अंतरिक्ष यात्रा के लिए कार्य कर रही है।

## 5- Hkk"kk dh ckr &

(क) धीरे–धीरे ये प्रश्न उस लड़की की अंतरिक्ष उड़ान की इच्छा में बदल गए। वाक्य में रेखांकित पद क्रिया की विशेषता बता रहा है। अतः यह क्रियाविशेषण पद हैं ऐसे ही पाँच क्रिया वाक्य लिखकर उनमें क्रियाविशेषण पदों को रेखांकित करें।

- _____
- _____
- _____
- _____
- _____

(ख) नाम की जगह अन्य शब्द –

कल्पना चावला का जन्म 17 मार्च 1962 को करनाल में हुआ था। बचपन से ही कल्पना बहुत जिज्ञासु थी। कल्पना का दाखिला करनाल के एक विद्यालय में करवा दिया गया। कल्पना को किताबें पढ़ने का बहुत शौक था। कल्पना ने अपना सपना पूरा करने के लिए काफी मेहनत की।

ऊपर दिए गए वाक्यों में कल्पना शब्द बार–बार आया है। रेखांकित 'कल्पना' शब्द की जगह 'वह' 'उसने' आदि सर्वनाम शब्दों का प्रयोग करके इन वाक्यों को दोबारा लिखें।

_____

_____

_____

_____

ikB 10

# रानी लक्ष्मीबाई (नाटक)

¼ijns dk ihNs xkus dh vkokt½

बुंदेले हरबोलों के मुख,
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मरदानी वह तो,
झाँसी वाली रानी थी।

## igyk n`';

(एक सजा हुआ हाथी खड़ा है। उस पर दो बालक बैठे हैं। एक का नाम पेशवा नाना साहब है और दूसरे का राव साहब। सड़क के किनारे एक नटखट बालिका अपने पिता की उँगली पकड़े खड़ी है और हाथी को देख रही है।)

Ukkuk lkgc : ओ छबीली ! हम हाथी पर चढ़कर जा रहे हैं।

euckbl : ज़रा ठहरो, मैं भी तुम्हारे साथ जाऊँगी। मुझे भी हाथी पर बिठाकर साथ ले चलो।

Ukkuk lkgc : (हँसकर) हम तुझे साथ नहीं ले जाएँगे।

euckbl : तुम साथ नहीं ले जाओगे, तो मैं दूसरे हाथी पर चढ़कर आ जाऊँगी।

ukuk lkgc : आ जाना। (हाथी झूमता हुआ चला जाता है)

euckbl : पिता जी, हम भी हाथी पर चढ़ेंगे।

Ekkjkir : बेटी मनु ! हमारे पास हाथी कहाँ है ?

euckbl : नहीं, मुझे ये सब नहीं सुनना। बस, हमें भी हाथी पर चढ़ाओ। (मचलती है)

ekjkir : मनु ! हमारे भाग्य में हाथी कहाँ ? ज़िद न कर।

euckbl : (रौब से) आपको क्या मालूम, मेरे भाग्य में तो दस–दस हाथियों की सवारी लिखी है ?

Ekkjkir : ईश्वर तेरे भाग्य को चार चाँद लगाए और तू दस नहीं, बीसियों हाथियों की स्वामिनी बने।

euckbl : (मुस्कुरा कर पिता के गले में अपनी दोनों बाहें डालती हुई) आप देखेंगे, एक दिन ऐसा आएगा जब मेरे पास बीसियों हाथी होंगे, नौकर–चाकर होंगे, खूब धन होगा।

Ekkjkir : अब बहुत बातें मत बना। चल घर चलें।

(दोनों घर की ओर चल देते हैं।)

## nljk n';

(एक महल का आँगन 6 से 10 वर्ष के बच्चे आँगन में गुड़िया और गुड्डे का खेल खेल रहे हैं। बच्चों के दो दल बन गए हैं। एक दल कन्या–पक्ष बनता है, दूसरा दल वर–पक्ष। गुड्डे–गुड़िया का विवाह जो करना है! वहीं पास से मनुबाई जा रही है।)

p|i|k : मनु! इधर आना।

eu|ck|b| : कहो, क्या कहना चाहती हो ?

p|i|k : हम गुड्डे–गुड़िया का विवाह करेंगे, बाजे बजेंगे, प्रीति–भोज होगा। बताओ, तुम किस ओर शामिल होना चाहोगी ?

eu|ck|b| : मैं किसी ओर भी शामिल नहीं होऊँगी। मुझे और कहीं जाना है।

p|i|k : कहाँ ?

eu|ck|b| : क्या तुम देख नहीं रही, मेरे हाथ में तलवार है ? मैं आजकल नाना साहब के साथ तलवार चलाना सीख रही हूँ।

p|i|k : अरी, लड़की होकर तुम यह क्या कर रही हो ?

eu|ck|b| : ओ भोली चंपा! तुझे क्या मालूम कि पुरुषों की तरह स्त्रियों को भी शत्रुओं से देश की रक्षा करनी सीखनी चाहिए। इसलिए मैं अस्त्र–शस्त्र चलाना सीख रही हूँ।

l|nj : तो क्या तुम शत्रु के साथ लड़ोगी ?

eu|ckb| : लड़ूँगी ही नहीं, उसे शत्रुता करने का मज़ा भी चखा दूँगी। देखना, एक दिन सारे शत्रु सिर पर पैर रखकर भाग जाएँगे।

l|nj : अरे! तू तो बड़ी बहादुरी की बातें करती है।

eu|ckb| : क्या तूने मुझे यूँ ही समझ रखा है। मैं तो हूँ ही बहादुर।

p|ik : तब तुम जाओ, तुम्हारे–हमारे रास्ते अलग–अलग हैं।

eu|ckb| : जा रही हूँ और कहे देती हूँ कि यदि तुम भी अस्त्र–शस्त्र चलाना सीख लोगी तो अच्छा रहेगा।

(मनुबाई तेज़ी से तलवार घुमाती हुई प्रसन्न मुद्रा में चली जाती है।)

## rh l jk n';

(युद्ध का मैदान, एक ओर अंग्रेज़ लैफ्टिनेंट व सेना की टुकड़ी तथा दूसरी ओर लक्ष्मीबाई, नानासाहिब और कुछ अन्य योद्धा दिखाई देते हैं)

l|=ekj – हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में,
ब्याह हुआ रानी बन आई लक्ष्मीबाई झाँसी में।
इनकी गाथा छोड़ चले हम झाँसी के मैदानों में,
जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाई मर्द बनी मैदानों में।

y{ehckb| : नाना साहब! आप सेना को लेकर बाईं ओर से शत्रुओं पर आक्रमण कीजिए।

ukuk lkgc : तुम कहाँ रहोगी ?

y{ehckb| : आप मेरी चिंता मत करो। जाओ, शत्रु पर टूट पड़ो।

ukuk lkgc : आज शत्रु सावधान है, तुम भी सजग रहना। मैं चलता हूँ।

(प्रस्थान)

y{ehckb| : राव साहब ! आप दाईं ओर से शत्रुओं को घेर लो, किसी शत्रु को जीवित मत छोड़ना।

jko lkgc : आज ऐसा ही होगा। आप चिंता न करें, महारानी।

(प्रस्थान)

lanj : आज तुम दामोदर राव की रक्षा करना और देखना, मेरे शरीर को कोई हाथ न लगा सके। मैं चलती हूँ।

(प्रस्थान)

पर्दे के पीछे से तलवारों की कट–कट की आवाज, .....हाय !..... मरा !..... ओह ! यह रानी है या मौत ! पानी ! पानी ! आह ..... ह ! अरे कोई है ? बचाओ !

तुम्हारी करनी का यही परिणाम है कायर।

(मंच पर मुँह में लगाम और दोनों हाथों में तलवारें लिए रक्त से लथपथ रानी का आगमन)

y{ehckb : सुंदर ! मेरा कर्त्तव्य पूर्ण हुआ। आज तुम दामोदार राव की रक्षा करना.....चलती हूँ अब मुझे सँभालो । आओ, जल्दी आओ ।

lanj : महारानी ! आपकी यह हालत ।

y{ehckb : मेरी प्यारी सखी ! इसे ही वीरगति कहते हैं। यह बड़े भाग्य से मिलती है। मेरी यह बात याद रखना।

(हाथों से तलवारें गिरती हैं।)

lanj : (आगे बढ़कर रानी को अपने हाथों में सँभालती हुई) घबराओ मत, मैं आपके शरीर को किसी शत्रु को छूने नहीं दूँगी।

y{ehckb : मा ..... तृ.....भू.....मि.....की .....जय।

(परदे के पीछे से आवाज आती है)

जाओ रानी याद रखेंगे हम ये कृतज्ञ भारतवासी

यह तेरा बलिदान जगाएगा स्वतंत्रता अविनाशी।

तेरा स्मारक तू ही होगी, तू खुद अमिट निशानी थी।

खूब लड़ी मरदानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ।

(परदा गिरता है)

# अभ्यास

## 1. आइए, शब्दों का अर्थ जानें :

- अस्त्र – फेंककर चलाया जाने वाला हथियार
- शस्त्र – हाथ में लेकर चलाया जाने वाला हथियार
- अमिट – न मिटने वाला
- आक्रमण – हमला
- कृतज्ञ – उपकार को मानने वाला
- मुद्रा – मुख की आकृति
- लथपथ – सना हुआ
- विभक्त – बँटा हुआ
- सजग – सावधान
- स्मारक – यादगार

## 2. पाठ से :

(क) मनु किस बात की जिद कर रही थी?

________________________________________________

________________________________________________

(ख) पिता द्वारा भाग्य की बात कही जाने पर मनु ने अपने पिता को क्या जवाब दिया?

________________________________________________

________________________________________________

(ग) मनु ने गुड्डे–गुड़िया के विवाह में सम्मिलित न होने का क्या कारण बताया?

________________________________________________

________________________________________________

(घ) मनुबाई अस्त्र–शस्त्र चलाना क्यों सीख रही थी?

_____

_____

(ङ) मनुबाई चंपा को क्या सीखने के लिए कहती है, और क्यों?

_____

_____

(च) चंपा और मनुबाई के रास्ते अलग–अलग कैसे थे?

_____

_____

(छ) घायल लक्ष्मीबाई ने सखी सुंदर से क्या कहा?

_____

_____

## 3- vkidh ckr &

(क) मनु हाथी की सवारी करना चाहती थी। आप किसकी सवारी करना पसंद करेंगे?

(ख) मनु ने घुड़सवारी और तलवारबाज़ी सीखी थी। आप क्या–क्या सीखना चाहते हैं?

(ग) नाना साहब लक्ष्मीबाई को प्यार से 'छबीली' कहकर बुलाते थे। आपको अपने घर में प्यार से किस नाम से बुलाया जाता है ?

## 4- ikB l: vkx &

लक्ष्मीबाई स्वतंत्रता संग्राम में लड़ी थी और कौन–कौन से वीर/वीरांगनाएँ आजादी के लिए लड़ें थे ? उनके बारे में जानें।

## 5- Hkk"kk dh ckr &

(क) मित्र होने के नाते मैं तुम्हारा शरीर किसी शत्रु को छूने तक नहीं दूँगी।

मित्र शब्द का विलोम है 'शत्रु'। ऐसे ही कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। उनके विलोम अर्थ वाले शब्द लिखें–

BPMCX4

आदर ————————————

सुख ————————————

आस्तिक ————————————

पसंद ————————————

पूर्व ————————————

आदि ————————————

जन्म ————————————

पुरुष ————————————

हँसना ————————————

चढ़ना ————————————

कृतज्ञ ————————————

(ख) एक बालिका अपने पिता के साथ खड़ी है।

रोहित रोज रात को दूध पीता है।

वाक्य में firk और ihrk के अर्थ अलग–अलग हैं।

ऐसे ही कुछ मिलते–जुलते शब्द नीचे दिए गए हैं। उनके अर्थ लिखें–

हरि–हरी —————— ——————

बिन–बीन —————— ——————

मिल–मील —————— ——————

आदि–आदी ———————— ————————

पिला–पीला ———————— ————————

शिला–शीला ———————— ————————

(ग) पुरुष शब्द को ध्यान से देखिए। र के साथ (उ) की मात्रा लगाकर रु बना है। सभी अक्षरों में उ और ऊ की मात्रा उनके नीचे लगती है। लेकिन र में ये मात्राएँ बीच में लगती है।

ऐसे ही कुछ शब्द आगे दिए गए हैं। इन्हें बोल–बोलकर लिखें–

रुचि ———————————— रूमाल ————————————

रुपया ———————————— रूस ————————————

रुई ———————————— रूखा ————————————

रुक ———————————— रूठना ————————————

गुरु ———————————— रूप ————————————

(घ) पाठ में से मुहावरे छाँटकर उन्हें वाक्य में प्रयोग करके लिखें–

1. ————————————
———————————————————————————————

2. ————————————
———————————————————————————————

3. ————————————
———————————————————————————————

4. ————————————
———————————————————————————————

ikB

# 11 ईदगाह

BPH8YR

रमज़ान के पूरे तीस रोज़ों के बाद आज ईद आई है। कितना मनोहर, कितना सुहावना प्रभात है! वृक्षों पर कुछ अजीब हरियाली है। खेतों में कुछ अजीब रौनक है, आसमान पर कुछ अजीब लालिमा है। आज का सूर्य देखो, कितना प्यारा, कितना शीतल है! मानो संसार को ईद की बधाई दे रहा है। गाँव में कितनी हलचल है! ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं।

लड़के सबसे ज़्यादा प्रसन्न हैं। बार–बार जेब से खज़ाना निकालकर गिनते हैं। महमूद गिनता है, एक–दो, दस–बारह। उसके पास बारह पैसे हैं। मोहसिन के पास पंद्रह पैसे हैं। इन्हीं अनगिनत पैसों से अनगिनत चीज़ें लाएँगे – खिलौने, मिठाइयाँ, बिगुल, गेंद और न जाने क्या–क्या और सबसे ज़्यादा प्रसन्न है हामिद। वह भोली सूरत का चार–पाँच साल का दुबला–पतला लड़का। उसका पिता गत वर्ष हैज़े की भेंट हो गया था और माँ न जाने क्यों पीली होती–होती एक दिन मर गई। किसी को पता न चला कि क्या बीमारी थी?

अब हामिद अपनी बूढ़ी दादी अमीना की गोदी में सोता है और उतना ही प्रसन्न रहता है। उसके अब्बाजान रुपये कमाने गए हैं। अम्मीजान अल्लाह मियाँ के

घर से उसके लिए बहुत–सी अच्छी चीज़ें लाने गई हैं, इसलिए हामिद प्रसन्न है। आशा तो बड़ी चीज़ है। हामिद के पाँव में जूते नहीं हैं, सिर पर एक पुरानी टोपी है, जिसका गोटा काला पड़ गया है, फिर भी वह प्रसन्न है।

अभागिन अमीना अपनी कोठरी में बैठी रो रही है। आज ईद का दिन है और उसके घर में दाना तक नहीं है, लेकिन हामिद! उसके अंदर प्रकाश है, बाहर आशा। हामिद भीतर दादी से कहता है, ''तुम डरना नहीं अम्मा, मैं सबसे पहले आऊँगा। बिलकुल न डरना!''

अमीना का दिल कचोट रहा है। गाँव के बच्चे अपने–अपने पिता के साथ जा रहे हैं। हामिद का अमीना के सिवा कौन है ? भीड़ में बच्चा कहीं खो गया तो क्या होगा? तीन कोस चलेगा कैसे ? पैरों में छाले पड़ जाएँगे। जूते भी तो नहीं हैं। वह थोड़ी दूर चलकर, उसे गोदी ले लेती, लेकिन यहाँ सेवइयाँ कौन पकाएगा? पैसे होते तो लौटते–लौटते सारी सामग्री जमा करके झटपट बना लेती। यहाँ तो चीज़ें जमा करते–करते घंटों लगेंगे।

गाँव से रेला चला। हामिद भी और बच्चों के साथ जा रहा था। शहर का दामन आ गया। सड़क के दोनों ओर अमीरों के बगीचे हैं। बड़ी–बड़ी इमारतें – अदालत, कॉलेज, क्लब–घर आदि दिखाई देने लगे। हलवाइयों की दुकानें मिठाइयों से सजी हुई थीं। अब बस्ती घनी होने लगी। ईदगाह जानेवालों की टोलियाँ नज़र आने लगीं। एक–से–एक भड़कीले वस्त्र पहने हुए।

सहसा ईदगाह नज़र आया। लाखों सिर एक साथ सजदे में झुक जाते हैं, फिर सबके सब एक साथ खड़े हो जाते हैं। नमाज़ खत्म हो गई। लोग आपस में गले मिल रहे हैं।

अब खिलौनों की दुकानों पर धावा होता है। हामिद दूर खड़ा है। उसके पास केवल तीन पैसे हैं। मोहसिन भिश्ती खरीदता है, महमूद सिपाही, नूरे वकील, और सम्मी धोबन।

हामिद खिलौनों को ललचाई आँखों से देखता है। वह अपने आपको समझाता है, 'मिट्टी के तो हैं, गिरें तो चकनाचूर हो जाएँ'। फिर मिठाइयों की दुकानें आती हैं। किसी ने रेवड़ियाँ लीं, किसी ने गुलाबजामुन, किसी ने सोन हलवा। मोहसिन कहता है, ''हामिद, ले, रेवड़ी ले ले, कितनी खुशबूदार है।''

हामिद ने कहा, ''रखे रहो, क्या मेरे पास पैसे नहीं हैं ?''

सम्मी बोला, ''तीन ही पैसे तो हैं, तीन पैसे में क्या–क्या लोगे ?''

मिठाइयों के बाद कुछ दुकानें लोहे की चीज़ों की आती हैं। कई चिमटे रखे हुए थे। हामिद को ख्याल आता है, दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियाँ उतारती हैं तो हाथ जल जाता है,अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे दे, तो वह कितनी प्रसन्न होंगी! फिर उनकी उँगलियाँ कभी न जलेंगी। दादी अम्मा चिमटा देखते ही दौड़कर मेरे हाथ से ले लेंगी और कहेंगी– मेरा बच्चा। अम्मा के लिए चिमटा लाया है। हज़ारों दुआएँ देंगी, फिर पड़ोस की औरतों को दिखाएँगी। सारे गाँव में चर्चा होने लगेगी। हामिद चिमटा लाया है। कितना अच्छा लड़का है। बड़ों की दुआएँ सीधे अल्लाह के दरबार में पहुँचती हैं और तुरंत सुनी जाती हैं।

हामिद ने दुकानदार से पूछा, ''यह चिमटा कितने का है?'' छह पैसे कीमत सुनकर हामिद का दिल बैठ गया। हामिद ने कलेजा मज़बूत करके कहा, ''तीन पैसे लोगे?'' दुकानदार ने मना कर दिया। जब हामिद दुकान से आगे निकल गया, तब दुकानदार ने उसे वापस बुलाकर चिमटा दे दिया। हामिद ने उसे इस तरह कंधे पर रखा मानो बंदूक हो और शान से अकड़ता हुआ संगियों के पास आया।

दोस्तों ने मज़ाक किया, ''यह चिमटा क्यों लाया पगले! इससे क्या करेगा?''

घर आने पर अमीना हामिद की आवाज़ सुनते ही दौड़ी और उसे गोद में उठाकर प्यार करने लगी। सहसा उसके हाथ में चिमटा देखकर वह चौंकी।

''यह चिमटा कहाँ था ?''

''मैंने मोल लिया है।''

''के पैसे में ?''

''तीन पैसे दिए।''

अमीना ने छाती पीट ली। यह कैसा बेसमझ लड़का है कि दोपहर होने तक कुछ खाया न पिया। लाया क्या, चिमटा!

''सारे मेले में तुझे और कोई चीज़ न मिली, जो यह लोहे का चिमटा उठा लाया ?''

हामिद ने अपराधी भाव से कहा, ''तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए मैंने इसे लिया।''

बुढ़िया का क्रोध तुरंत स्नेह में बदल गया। यह मूक स्नेह था, रस और स्वाद से भरा। बच्चे में कितना त्याग, कितना सद्भाव और कितना विवेक है! दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा! वहाँ भी अपनी बुढ़िया दादी की याद बनी रही। अमीना का मन गदगद हो गया। दामन फैलाकर हामिद को दुआएँ देती जाती थी और आँसू की बड़ी–बड़ी बूँदें गिराती जाती थी। हामिद इसका रहस्य क्या समझता!

# अभ्यास

## 1. आइए, शब्दों का अर्थ जानें –

- अभागिन – जीवन में जिसे दुख ही मिला हो
- गत – बीता हुआ
- चकनाचूर – नष्ट होना
- प्रभात – सवेरा
- बेसमझ – मूर्ख
- भेंट – मुलाकात
- भोली सूरत – सीधी सादी शक्ल
- मनोहर – सुंदर
- मूक – गूँगा / बिना आवाज के
- रेला – झुंड में चलते हुए लोग

## 2. पाठ से –

(क) ईद के अवसर पर चारों तरफ का वातावरण कैसा होता है?

(ख) अमीना का दिल क्यों कचोट रहा था?

(ग) अभागिन अमीना अपनी कोठरी में बैठी रो रही है। अमीना को अभागिन क्यों कहा गया है?

(घ) दोस्तों के खिलौने देखकर हामिद ने अपने–आपको किस प्रकार समझाया?

________________________________________________

________________________________________________

(ङ) बुढ़िया का क्रोध तुरंत स्नेह में बदल गया। अमीना को हामिद पर पहले गुस्सा और फिर स्नेह आने का क्या कारण था?

________________________________________________

________________________________________________

(च) हामिद ने मेले से चिमटा ही क्यों खरीदा?

________________________________________________

________________________________________________

(छ) कहानी को ध्यान से पढ़ें और क्रम से बताएँ कि कौन सी घटना पहले घटी और कौन सी बाद में?

- ❒ अमीना का दिल कचोट रहा है। ________________
- ❒ अब खिलौनों की दुकान पर धावा होता है। ________________
- ❒ गाँव में हलचल है। ________________
- ❒ बुढ़िया का क्रोध तुरंत स्नेह में बदल गया। ________________
- ❒ छह पैसे की कीमत सुनकर हामिद का दिल बैठ गया। ________________
- ❒ ईदगाह जाने वालों की टोलियाँ नजर आने लगीं। ________________
- ❒ उसके अब्बाजान रुपये कमाने गए हैं। ________________

## 3- vki dh ckr &

(क) 'अमीना ने छाती पीट ली। यह कैसा बेसमझ लड़का है।' अमीना ने हामिद को बेसमझ कहा था। आप हामिद को बेसमझ मानते हैं या समझदार, अपने साथियों से चर्चा करें।

(ख) हामिद की जगह आप होते तो मेले से अपनी दादी के लिए क्या खरीदते?

(ग) आप और आपके साथी कभी न कभी किसी मेले में गए होंगे, वहाँ से आप क्या–क्या खरीदकर लाए थे और क्यों?

(घ) यदि आप के पास 100 रुपये हो आप उन्हें कैसे खर्च करेंगे?

(ङ) 'तुम डरना नहीं अम्मा, मैं सबसे पहले आऊँगा।' हामिद की दादी डर रही थी। आपको किन–किन से डर लगता है और क्यों? आपस में चर्चा करें।

| | | | |
|---|---|---|---|
| साँप से | छिपकली से | बिच्छू से | कुत्ते से |
| शेर से | बिल्ली से | अपने दोस्त से | विद्यालय से |
| अपने पिताजी से | अपनी माता जी से | अंधेरे से | अध्यापक से |

## 4- ikB ls vkxs &

(क) हामिद! उसके अंदर प्रकाश है, बाहर आशा।' (हामिद गरीब है) उसे किस बात की आशा है?

(ख) 'अब बस्ती घनी होने लगी।' क्या कारण है कि शहर में लोगों के मकान बिलकुल सटे हुए व बहुमंजिला होते हैं।

(ग) मोहसिन कहता है, 'हामिद ले, रेवड़ी ले, कितनी खुशबूदार है।' हामिद ने अपने साथियों के कहने पर भी मिठाइयाँ नहीं लीं। उसने मिठाइयाँ न लेने के लिए क्या तर्क दिया होगा?

(घ) मिठाइयों के बाद कुछ दुकानें लोहे की चीजों की आती हैं। मान लीजिए, लोहे की चीजों की दुकान न आती तो हामिद क्या खरीद कर लाता? मेले में वर्णित चीजों को सोचकर बताएँ।

BQF132

## 5- Hkk"kk dh ckr &

(क) एक से अनेक

हामिद ने कोई खिलौना नहीं खरीदा।

उपर्युक्त वाक्य में f[kykSuk एकवचन है–जिसका बहुवचन है–f[kykSus।

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं, उनके वचन बदलें–

| | | | |
|---|---|---|---|
| दुकान | ———————— | कोठरी | ———————— |
| चिमटा | ———————— | टोली | ———————— |

| | | | |
|---|---|---|---|
| गेंद | ______________ | रेवड़ी | ______________ |
| बूँद | ______________ | मिठाई | ______________ |

(ख) र और ऋ

कितना मनोहर, कितना सुहावना प्रभात है! वृक्ष पर कुछ अजीब हरियाली है। उपर्युक्त वाक्यों में 'प्रभात' और 'वृक्ष' शब्द आए हैं। 'प्रभात' शब्द में 'प्' के नीचे 'र' का चिह्न (्र) है और 'वृक्ष' शब्द में 'व्' के नीचे ऋ की मात्रा (ृ) है। ऐसे ही कुछ शब्द आप भी लिखिए।

| | |
|---|---|
| j ¼ ½ oky; 'kCn | _ ¼ ' ½ oky; 'kCn |
| जैसे– क्रम | जैसे– पृथ्वी |
| ______________________ | ______________________ |
| ______________________ | ______________________ |
| ______________________ | ______________________ |
| ______________________ | ______________________ |

(ग) सूर्य आकाश में चमकता है।

सूरज की रोशनी तेज होती है।

उपर्युक्त वाक्यों में आए शब्द 'सूर्य' और 'सूरज' का एक ही अर्थ है। नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। उनके भी समान अर्थ देने वाले शब्द लिखें –

| | | |
|---|---|---|
| वृक्ष – | _______________ | _______________ |
| आकाश – | _______________ | _______________ |
| दिन – | _______________ | _______________ |
| प्रकाश – | _______________ | _______________ |
| नदी – | _______________ | _______________ |

## vkiu fdruk lh[kk

1- ‘kCnk d lgh vFk ckDl e fy[k&

- कमरिया – कमर पीठ कंबल ________________
- जननी – जनता माता जागना ________________
- बेनी – वन बाग चोटी ________________
- भुई – जमीन नागिन भोजन ________________

2- j[kkfdr ink d LFkku ij loZuke dk iz;kx djr g, fy[k&

कल्पना का जन्म करनाल में हुआ। कल्पना बहुत जिज्ञासु थी। कल्पना ने पढ़ाई करनाल के विद्यालय से की। कल्पना को किताबें पढ़ने का शौक था।

______________________________________________________

______________________________________________________

______________________________________________________

3- fuEufyf[kr ‘kCnk l okD; cukdj fy[k&

- धीरे–धीरे ____________________________________________
- ऊपर–नीचे ____________________________________________
- यहाँ–वहाँ ____________________________________________

4- fdlu] fdl dk dgk&

- बेटी मनु! हमारे पास हाथी कहाँ है?

______________________________________________________

- आज तुम दामोदर राव की रक्षा करना।

_____

5- *#* *:* l nk&nk 'kCn cuk,&

रु _____ _____

रू _____ _____

6- fuEufyf[kr 'kCnk dk i;kx djr g, ,d&,d okD; cuk,&

- पिता–पीता _____

_____

- मिल–मील _____

_____

7- leku vFk oky nk&nk 'kCn fy[k&

- प्रकाश _____ _____
- नदी _____ _____

8- fuEufyf[kr i'uk d mÙkj fy[k&

- कल्पना प्रायः किस तरह के प्रश्न करती थी?

_____

- मनु ने किस बात की जिद की?

_____

- अमीना का दिल क्यों कचोट रहा था?

_____

- हामिद ने मेले से क्या खरीदा और क्यों?

_____

ikB

# 12 हार नहीं होती

BQNH4P

लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।
नन्ही चींटी जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है।
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है।
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।
डुबकियाँ सिंधु में गोताखोर लगाता है,
जा–जाकर खाली हाथ लौटकर आता है।
मिलते न सहज ही मोती गहरे पानी में,
बढ़ता दूना उत्साह इसी हैरानी में।
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।
असफलता एक चुनौती है स्वीकार करो,
क्या कमी रह गई देखो और सुधार करो।
जब तक न सफल हो नींद चैन की त्यागो तुम,
संघर्षों का मैदान छोड़ मत भागो तुम।
कुछ किए बिना ही जय–जयकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

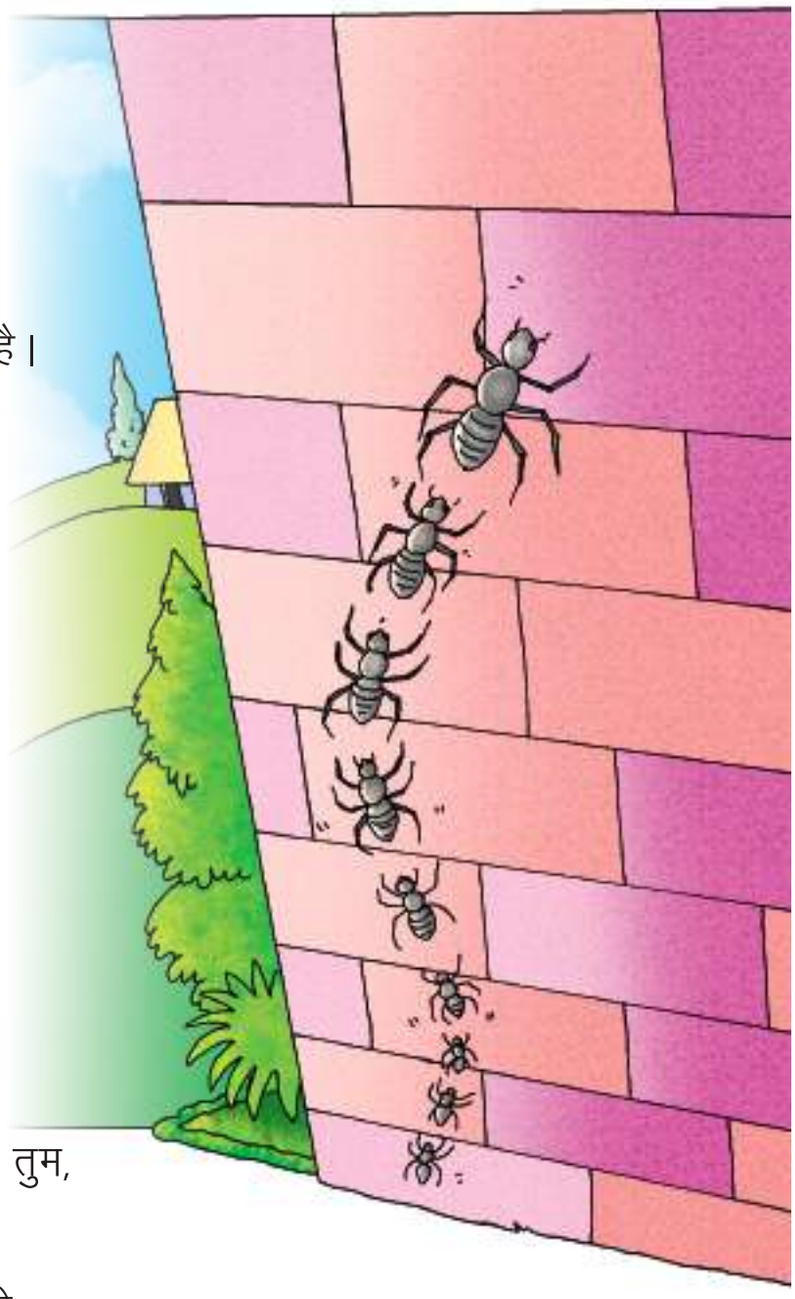

*– सोहनलाल द्विवेदी*

# अभ्यास

## 1. आइए, शब्दों का अर्थ जानें –

- अखरना – बुरा लगना
- उत्साह – जोश
- चैन – आराम
- चुनौती – ललकार
- रगों में – शरीर की नसों में
- सहज – सरल
- साहस – हिम्मत
- सिंधु – सागर
- संघर्ष – जूझना

## 2. कविता से –

(क) चींटी की मेहनत बेकार क्यों नहीं होती ?

________________________________________________

________________________________________________

(ख) गोताखोर सागर में क्या प्राप्त करने के लिए गोता लगाता है ?

________________________________________________

________________________________________________

(ग) व्यक्ति की जय–जयकार कब होती है ?

________________________________________________

________________________________________________

(घ) कविता में सफलता प्राप्त करने का क्या उपाय बताया गया है ?

________________________________________________

________________________________________________

## 3- vkidh ckr &

(क) अपनी कोई एक कमी बताएँ, जिसे आपने कोशिश करके दूर कर लिया हो। कमी को दूर करने के लिए आपने कौन–कौन सी कोशिशें की ?

(ख) अपना एक अनुभव बताएँ, जब आप कभी कहीं कीचड़ या फर्श पर फिसले हों।

(ग) आपको कभी न कभी किसी चीज से डर महसूस हुआ होगा, आपने उस डर का सामना कैसे किया ?

(घ) चींटियाँ लाइन में चलती हैं। आप कब–कब लाइन में चलते हैं ?

## 4- dfork l vkx &

(क) नन्ही चींटी कौन–कौन से दाने लेकर चलती है ? आपने उसे दाने उठाते हुए कब–कब देखा? चर्चा करें।

(ख) नन्ही चींटी जब दाना लेकर चलती है तब वह कहाँ जाती है ? अपने साथियों के साथ मिलकर चर्चा करें।

(ग) 'चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है।'
चींटी दीवार पर चढ़ सकती है। नीचे कुछ जीवों के चित्र दिए गए हैं। बताएँ, इनमें कौन–से जीव कमरे की दीवार पर चढ़ सकते हैं –

## 5- Hkk"kk dh ckr &

(क) आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती।

इस वाक्य में 'बेकार' शब्द में 'बे' उपसर्ग लगा है। ऐसे ही दिए गए उपसर्गों से दो–दो शब्द बनाएँ –

| | | | |
|---|---|---|---|
| बे | ⟶ | बेख़बर | बेरोजगार |
| अनु | ⟶ | _____ | _____ |
| वि | ⟶ | _____ | _____ |
| उप | ⟶ | _____ | _____ |
| सु | ⟶ | _____ | _____ |

(ख) चींटी दाना लेकर चलती है।

इस वाक्य में चलने का काम चींटी ने किया है। इसलिए यह कर्ता है।

नीचे कुछ वाक्य दिए गए हैं। इनमें से (कर्ता) छाँटकर लिखें –

1. राजीव मीठे आम खाता है। _____
2. बच्चा गेंद से खेल रहा है। _____
3. बंदर पेड़ पर उछल–कूद कर रहा है। _____
4. कोमल अपने भाई की पुस्तक पढ़ती है। _____

## 6- ;g Hkh dj% &

नीचे कुछ 'शब्द' और 'चित्र' दिए गए हैं, इनकी सहायता से कहानी को पूरा करें–

किसी पर एक रहती थी। एक दिन जंगल में लग गई। सभी अपनी जान बचाने के लिए इधर–उधर भागने लगे। तभी चिड़िया अपनी चोंच में पानी लेकर आई और आग बुझाने लगी। यह देख सभी उसका मजाक उड़ाने लगे, फिर भी ने हार नहीं मानी और अपना काम करती रही। पूरा दिन बीत गया पर की कोशिश में कोई कमी नहीं आई। की इस कोशिश को देख, सभी का हौसला भी बढ़ गया। देखते–देखते सभी ने की को बुझा दिया।

## dN dke djk ¼dN vkj i<½

नर हो, न निराश करो मन को।

कुछ काम करो, कुछ काम करो,
जग में रहकर कुछ नाम करो।
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो,
समझो, जिससे यह व्यर्थ न हो।

कुछ तो उपयुक्त करो तन को,
नर हो, न निराश करो मन को।

सँभलो कि सुयोग न जाय चला,
कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला?
समझो जग को न निरा सपना,
पथ आप प्रशस्त करो अपना।

अखिलेश्वर हैं अवलंबन को,
नर हो, न निराश करो मन को।

निज गौरव का नित ज्ञान रहे,
'हम भी कुछ है', यह ध्यान रहे।
सब जाए अभी, पर मान रहे,
मरणोत्तर गुंजित गान रहे।

कुछ हो, न तजो निज साधन को,
नर हो, न निराश करो मन को।

प्रभु ने तुमको कर दान किए,
सब वांछित वस्तु–विधान किए।
तुम प्राप्त करो उनको न अहो,
फिर भी किसका यह दोष कहो।

समझो न अलभ्य किसी धन को,
नर हो, न निराश करो मन को।

किस गौरव के तुम योग्य नहीं?
कब कौन तुम्हें सुख भोग्य नहीं?
जन हो तुम भी जगदीश्वर के,
सब हैं जिसके अपने घर के।

फिर दुर्लभ क्या उसके जन को?
नर हो, न निराश करो मन को।

*–मैथिलीशरण गुप्त*

ikB

# 13 धरोहर

C3KHNJ

'धरोहर' का अर्थ है अमानत या थाती। अतः धरोहर शब्द सुनते ही हमारा मस्तिष्क किसी ऐसी वस्तु अथवा परंपरा की कल्पना करने लगता है, जो हमारे पूर्वजों द्वारा संजोई गई और सँभाल कर आने वाली पीढ़ी को सौंपी गई हो। विकास के साथ–साथ कुछ पुरानी चीजों का प्रयोग समाप्त हो जाता है किंतु उनकी जानकारी हमें विकास के इतिहास से परिचित कराती है।

संग्रहालय इसी जानकारी को प्रदान करने का साधन होते हैं। ऐसा ही एक संग्रहालय है– 'धरोहर'। यह संग्रहालय कुरुक्षेत्र में स्थापित किया गया है।

इस संग्रहालय में हरियाणा प्रदेश के रहन–सहन, खान–पान, पहनावा, मेले, त्योहार और रीति–रिवाज़ की संपूर्ण झाँकी देखी जा सकती है। इसे देखकर लगता है मानो हरियाणा की संस्कृति जीवंत हो उठी है! यहाँ छाया चित्रों के माध्यम

से हरियाणा की संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को सहजता से दिखाया गया है। इस संग्रहालय में पुरस्कृत खिलाड़ियों के चित्रों के साथ–साथ स्वतंत्रता सेनानियों के बोलते हुए से छाया चित्र बने हैं।

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय ने इस संग्रहालय को स्थापित कर शताब्दियों पुरानी पांडुलिपियों को भी जीवित कर दिया है।

'धरोहर' के नाम को साकार बनाते हुए मोहनबाड़ी की खुदाई से निकला 1200 वर्ष पुराना मटका इस संग्रहालय की शान बना हुआ है। जिसे देखकर ये पंक्तियाँ याद आ जाती हैं–

बंद कमरों मे चीजें पुरानी, भला अब कौन रखता है?

शहरों में परिंदों के लिए पानी, भला कौन रखता है?

सँभालकर बुजुर्गों की निशानी, भला कौन रखता है?

इन पंक्तियों का उत्तर हमें 'धरोहर' में बहुत सुंदर ढंग से देखने को मिलता है।

खाट पर कपड़े की झूल बाँधकर अपने बच्चों

को झुलाती हरियाणवी महिलाएँ वात्सल्य को एक नई पहचान देती हैं। जो हाथ खेत में पुरुष के साथ लावणी करवाते हैं, वही बालक को सुलाते समय सारी कठोरता छोड़ कर सुकोमल हो जाते हैं।

दूध–दही के लिए विश्वभर में विख्यात हरियाणा की मूल संस्कृति को दर्शाने के लिए संग्रहालय में 'घेर' अर्थात पशुओं को बाँधने का स्थान, बैलगाड़ी, लोहे की फसली व लकड़ी की जेलियाँ आदि रखी गई हैं। 'घेर' में बनाई गई गंडासे से चारा काटते किसान की प्रतिकृति तो अनायास ही ध्यान आकर्षित करती है।

'देसां में देस हरियाणा, जित दूध दही का खाणा।' यह उक्ति संग्रहालय के रसोईघर को देखकर सार्थक हो जाती है।

हरियाणा के देसी घी का हर कोई दीवाना है। देसी घी की महक संग्रहालय में स्थापित रसोई में महसूस की जा सकती है। यहाँ दूध मथती, बाजरा कूटती, अनाज पीसती तथा चूल्हे पर रोटियाँ सेंकती महिलाओं की प्रतिकृतियाँ इस रसोई को सजीव बना देती हैं। रसोई में हारी, बिलोणी, घीलड़ी, बोहिया आदि अनेक बर्तन रखे गए हैं।

हरियाणा में इस्तेमाल होने वाले अनेक प्रकार के वाद्य यंत्र व आवागमन के साधनों जैसे–रथ, बैलगाड़ी, बैलों की पालकी आदि को इस संग्रहालय में स्थान दिया गया है। महिलाओं द्वारा हाथ से बनाई गई वस्तुएँ भी इसकी शोभा बढ़ाती हैं।

यहाँ रखा गया लगभग 5 फुट ऊँचा हुक्का सहज ही सबको आकर्षित कर लेता है। इसके साथ–साथ संग्रहालय में टेराकोटा का एक ऐसा हुक्का रखा गया है, जिसमें न तो कोई जोड़ है और न ही इस पर रंग किया गया है।

'धरोहर' में एक ऐसी चारपाई भी है, जिसमें ओम जय जगदीश हरे की आरती को बुनाई करके लिखा गया है। इसके साथ ही छह पाए वाली चारपाई भी लोगों के आकर्षण का केंद्र बनी हुई है। यहाँ रखे गए विशाल नगाड़े को देखकर होली की मस्ती भरे हुड़दंग वाला दृश्य आँखों के सामने आँखमिचौली खेलने लगता है।

हरियाणा की महिलाओं द्वारा पहने जाने वाले पारंपरिक परिधानों को भी संग्रहालय में सहजता से सजाया गया है। यहाँ रखे 52 कली के दामण को देखकर महिलाएँ इसे उलट–पलट कर देखने के लिए मजबूर हो जाती हैं। इस दामण की सबसे बड़ी खूबी है कि इस का वजन 15 किलो है और इसे दोनों तरफ से पहना जा सकता है।

झांझण, कड़ी झालरा, हसली, हथफूल व तागड़ी सहित पाँच किलो चाँदी के आभूषण से सजी महिला की प्रतिकृति सभी महिलाओं को

विशेष रूप से आकर्षित करती है।

'धरोहर' में ऐसे पत्थरों को भी स्थान दिया गया है, जो रबड़ की तरह हिलते हैं। ये पत्थर दादरी के समीप स्थित कलियाणा गाँव की पहाड़ी से मिले हैं।

इस संग्रहालय में एक थिएटर (प्रेक्षा–गृह) भी है, जिसमें दर्शकों को हरियाणवी लोकगीत, साँग, नाटक, भजन व रागनी आदि दिखाए जाते हैं।

'धरोहर' में हरियाणवी संस्कृति से जुड़ी सभी वस्तुओं का संकलन जारी है और वह दिन दूर नहीं जब ये वस्तुएँ 'धरोहर' की धरोहर हो जाएँगी।

C3USQ7

# अभ्यास

## 1. आइए, शब्दों का अर्थ जानें :

- अनायास – एकाएक/अचानक
- आकर्षित – लगाव होना
- जीवंत – जीता जागता
- पांडुलिपि – हाथ से लिखी हुई रचना
- पुरस्कृत – जिसे पुरस्कार मिला हो।
- प्रतिकृति – मूर्ति अथवा चित्र
- वात्सल्य – संतान के प्रति प्रेम
- शताब्दी – सौ वर्षों का समूह
- संग्रहालय – वस्तुओं को संग्रह करने का स्थान

## 2. पाठ से :

(क) धरोहर संग्रहालय कहाँ स्थित है?

______________________________________________

(ख) संग्रहालय में कौन–कौन सी झाँकियाँ देखने को मिलती हैं?

______________________________________________

(ग) हरियाणा की एक विशेषता 'दूध दही का खाना' है। इस संस्कृति को संग्रहालय में किस तरह से दर्शाया गया है?

______________________________________________

(घ) हरियाणा की रसोई की क्या–क्या विशेषताएँ बताई गई हैं?

______________________________________________

(ङ) 52 कली के दामण की क्या विशेषताएँ हैं ?

______________________________________________

## 3. आपकी बात :

(क) आपके घर में अपने पूर्वजों की कौन–कौन सी चीजें रखी हुई हैं ? किन्हीं दो चीजों के बारे में बताएँ।

(घ) पाठ में 'नगाड़े' की बात की गई है। पता लगाएँ कि नगाड़े को किन–किन मौकों पर बजाया जाता है?

## 4- ikB l vkx &

(क) 'धरोहर' में खिलाड़ियों व स्वतंत्रता सेनानियों के छायाचित्र बने हैं, आप भी हरियाणा के विख्यात खिलाड़ियों की सूची बनाएँ तथा उनके चित्र चार्ट पर चिपकाएँ।

(ख) 'धरोहर' में स्त्रियों को दामण पहने दिखाया गया है। आपकी माताजी कौन सी पोशाक पहनती हैं? दोनों पोशाकों की समानता/असमानता के बारे में जानकारी प्राप्त करके चर्चा करें।

## 5- i</@le> o fy[k &

(क) कैसा है इनका स्वाद ? जरा चखकर बताएँ स्वाद।

छाछ – ————————————————————

बाजरे की खिचड़ी – ————————————————————

लापसी – ————————————————————

चूरमा – ————————————————————

कढ़ी – ————————————————————

गुलगुले – ————————————————————

राबड़ी – ————————————————————

(ख) किसकी, कब और कहाँ जरूरत ?

बिलोणी – दही बिलोने के लिए

घीलड़ी – ————————————————————

बोहिया – ————————————————————

बुखारी – ————————————————————

बैलगाड़ी – ————————————————————

पालकी – ————————————————————

गँडासा – ____________________

बीजणा – ____________________

पंखी – ____________________

टोकणी – ____________________

## 6- Hkk"kk dh ckr &

(क) गाँव में महिलाएँ सुबह–सुबह nèk fcykrh g|, xhr xkrh g|A

C44NRU

इस वाक्य में nèk व xhr संज्ञा हैं तथा 'fcykrh g|,' व xkrh gb' क्रियाएँ हैं। इसी तरह निम्नलिखित वाक्यांशों से संज्ञा व क्रिया छाँटकर लिखें–

| | lKk | fØ;k |
|---|---|---|
| दही मथना – | ________ | ________ |
| दूध निकालना – | ________ | ________ |
| रोटी सेंकना – | ________ | ________ |
| झूला झूलना – | ________ | ________ |
| रथ हाँकना – | ________ | ________ |
| चित्र बनाना – | ________ | ________ |
| फोटो खींचना – | ________ | ________ |

(ख) धरोहर में ऐसे पत्थरों को भी स्थान दिया गया है। इस वाक्य में Hkh निपात है। इसी तरह gh] Hkh] rks] rd निपात कहलाते हैं। इनका प्रयोग करते हुए एक–एक वाक्य बनाएँ

ही ____________________

भी ____________________

तो ____________________

तक ____________________

ikB

# 14 पुष्प की अभिलाषा

C4DJTH

चाह नहीं मैं सुरबाला के,
गहनों में गूँथा जाऊँ।
चाह नहीं प्रेमी माला में,
बिंध, प्यारी को ललचाऊँ।
चाह नहीं सम्राटों के शव,
पर हे हरि, डाला जाऊँ।
चाह नहीं, देवों के सिर पर,
चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ।
मुझे तोड़ लेना वनमाली,
उस पथ पर तुम देना फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जाएँ वीर अनेक।

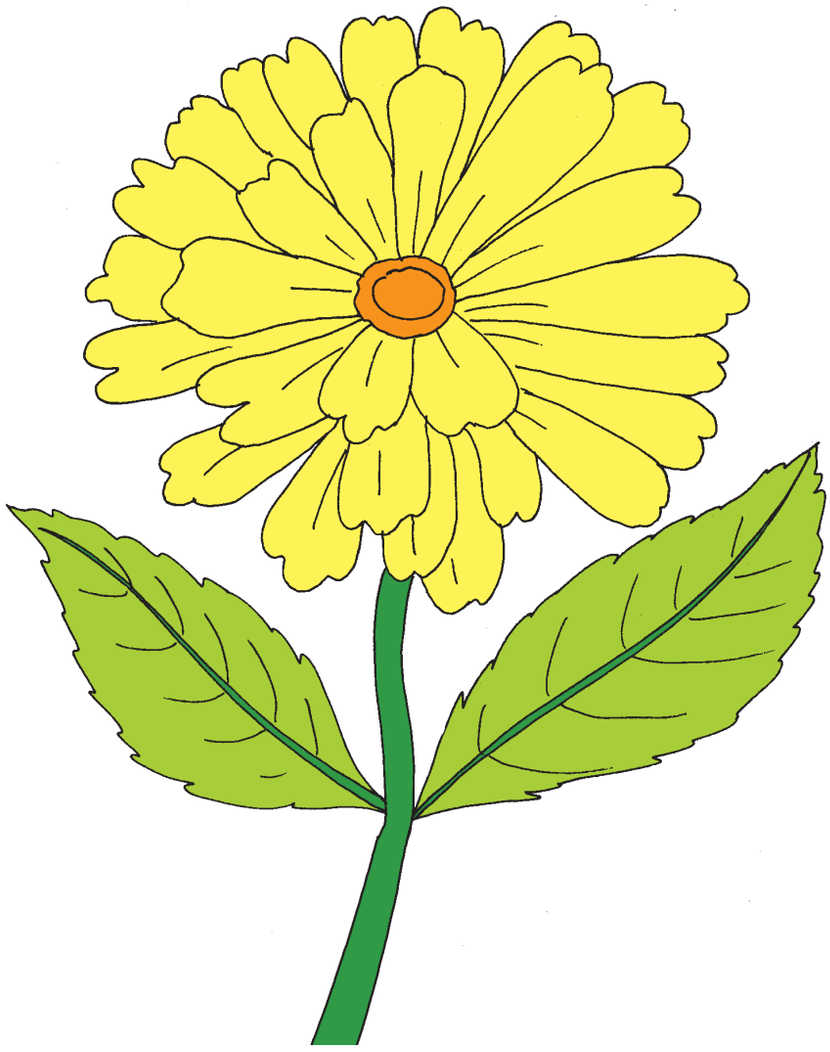

*—माखनलाल चतुर्वेदी*

# अभ्यास

C4MFV5

## 1- vkb,] ‘kCnk d vFk tku &

- अभिलाषा – कामना
- देव – देवता
- पथ – रास्ता
- पुष्प – फूल
- बिंध – बंधना/पिरोना
- मातृभूमि – जन्मभूमि
- वनमाली – वन का माली
- शीश – सिर
- सम्राट – राजा
- सुरबाला – अप्सरा

## 2- dfork l &

(क) फूल को किस–किस चीज पर चढ़ने की चाहत नहीं है?

________________________________________

________________________________________

(ख) पुष्प ने वनमाली से क्या करने को कहा है?

________________________________________

________________________________________

(ग) 'मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जाएँ वीर अनेक' यहाँ मातृभूमि पर शीश चढ़ाने से क्या तात्पर्य है?

________________________________________

________________________________________

## 3- vkidh ckr &

(क) पुष्प की अभिलाषा की तरह आप अपने जीवन की अभिलाषा बताएँ?

(ख) आपके आस–पास बहुत सारे फूल होंगे। उन फूलों के नाम बताएँ और बताएँ कि कौन–सा फूल आपको पसंद है और क्यों?

(ग) 'चाह नहीं मैं सुरबाला के,
गहनों में गूँथा जाऊँ।' सुरबाला बहुत सारे गहने पहनती होगी। आपके घर या आस–पास की महिलाएँ कौन–कौन से गहने पहनती हैं?

## 4- ikB ls vkxs &

(क) धरती पर बहुत सारे रंग–बिरंगे फूल होते हैं। उन फूलों में एक फूल को 'फूलों का राजा' कहा जाता है। उस फूल का नाम पता करें व उसके बारे में कुछ पंक्तियाँ लिखें–

_____

_____

_____

_____

(ख) पुष्प मातृभूमि पर शीश चढ़ाने वालों के पथ पर ही स्वयं को फेंका जाना पसंद क्यों करता है ?

_____

_____

## 5- Hkk"kk dh ckr &

(क) वाक्य में आए पुष्प को और भी अनेक नामों से जाना जाता है, जैसे–फूल, प्रसून, सुमन आदि, ये सभी पुष्प के पर्याय है।
नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। इनके दो–दो पर्यायवाची लिखें–

C4WBHS

पथ – _____ _____ _____

बादल – _____ _____ _____

हाथ – _____ _____ _____

पृथ्वी – _____ _____ _____

आग – _____ _____ _____

कमल – _____ _____ _____

(ख) माली Qy तोड़ता है। वाक्य में रेखांकित पद (Qy) कर्म है, इसी प्रकार कुछ वाक्य लिखकर 'कर्म' को रेखांकित करें।

_____

_____

_____

_____

_____

(ग) कविता में 'सुरबाला', माला, प्रेमी, देवता, वनमाली, पथ शब्द आए हैं। इन शब्दों की जगह 'सुरबालाओं, मालाओं, प्रेमियों, देवताओं, वनमालियों तथा पथों का प्रयोग करते हुए कविता को दोबारा लिखें और इन शब्दों से कविता में आए परिवर्तन पर चर्चा करें।

_____

_____

_____

_____

## 6- ;g Hkh djsa &

(क) जब आप किसी फूल को देखते हैं तो उसकी क्या चीज़ आपको ज्यादा पसंद आती है ? और क्यों ?

| Qy dk uke | ilanhnk pht | ilan dk dkj.k |
|---|---|---|
| _____ | _____ | _____ |
| _____ | _____ | _____ |
| _____ | _____ | _____ |
| _____ | _____ | _____ |

(ख) इस वर्ग पहेली में विभिन्न फूलों के नाम दिए गए हैं। छाँटकर लिखें।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| स | दा | ब | हा | र | सू | सी | कु |
| ग | ड | हे | लि | या | र | ग | मु |
| मो | ग | रा | पा | नी | ज | गु | दि |
| ग | जू | क | च | पा | मु | ड़ | नी |
| रा | ही | गें | दा | त | खी | ह | च |
| ट | सा | प | थ | क | म | ल | मे |
| म | गु | ला | ब | ढ | र | लि | ली |
| ध | ड़ | श | फ | छ | य | न | च |

_____ _____

_____ _____

_____ _____

_____ _____

(ग) 'चाह नहीं प्रेमी माला में,
बिंध प्यारी को ललचाऊँ।' माला फूलों से बनाई जा सकती है। बताएँ और किस–किस चीज़ से माला बनाई जा सकती है?

1. _____ 4. _____

2. _____ 5. _____

3. _____ 6. _____

ikB

# 15 बूढ़ी गेंद

C567YF

गेंद बच्चों को खेलता देख रही थी। उसका खेल तो कब का बंद हो चुका था। वह बूढ़ी और बेकार जो हो गई थी। खेल चल रहा था और बूढ़ी गेंद झाड़ियों में खामोश पड़ी थी। किसी को पुरानी गेंद की ज़रूरत नहीं थी। बच्चे नई गेंद से खेलते हुए खुश थे। नई गेंद मैदान में इधर से उधर लुढ़क रही थी। एक बार ठोकर लगी तो नई, चमचम गेंद झाड़ियों के पास पहुँच

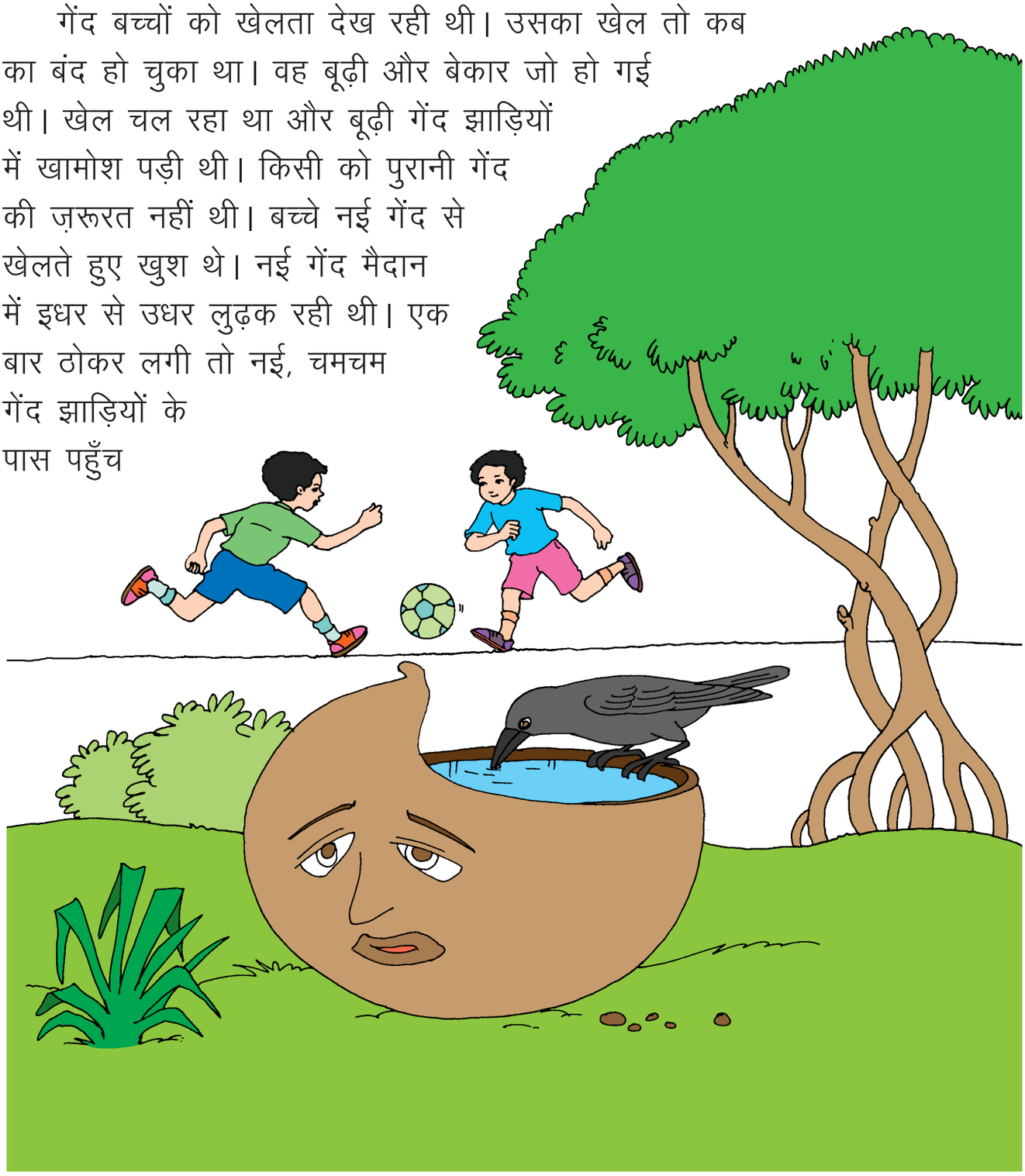

गई। बूढ़ी गेंद ने पुकारा–छोटी, क्या हाल है ? नई गेंद उसकी छोटी बहन ही तो थी।

क्या बात है ? नई गेंद ने पूछा। उसने झाड़ियों में पड़ी बूढ़ी गेंद को देख लिया था। बूढ़ी गेंद ने गहरी साँस ली। उसने दुखभरे स्वर में कहा– कभी मेरे भी दिन थे। बहुत खेल खेले हैं मैंने। पुराने दिन याद करती हूँ तो मन दुखी हो जाता है।

हाँ, यह तो है। नई गेंद ने बड़ी बहन को सांत्वना दी और फिर जाकर बच्चों के खेल में शामिल हो गई। बूढ़ी गेंद चुपचाप देखती रही। खेल ज़ोरों पर था उसका मन भी खेलने को कर रहा था। एक बार कोशिश करके वह लुढ़ककर झाड़ियों से बाहर आ गई। उसे उम्मीद थी कि कोई न कोई उसे ज़रूर खेल में शामिल कर लेगा पर वैसा कुछ न हुआ। वह चाहती थी कि और कोई नहीं तो नई गेंद ही आकर कुछ देर उसके साथ सुख–दुख की बातें कर ले, पर नई गेंद तो बच्चों के साथ खेलकर खुश थी।

शाम ढल रही थी खेल खत्म हुआ। बच्चे गेंद लेकर मैदान से चले गए। सब अपने–अपने घर जाना चाहते थे। रात हुई, पेड़ों पर परिंदे अपने घोंसलों में आराम कर रहे थे। बस, बूढ़ी गेंद निपट अकेली घास पर पड़ी थी। बादल घिर आए, रह–रहकर बिजली कड़कने लगी, फिर होने लगी धुआँधार बारिश। गेंद का ऊपरी हिस्सा फटकर अलग हो गया था। बारिश का पानी उसके अंदर भर गया। कुछ देर बाद बारिश थम गई, चाँद निकल आया। गेंद में भरे पानी पर चाँदनी चमक रही थी। वह सोच रही थी – 'क्या मुझे इसी तरह अकेली रहना होगा और फिर..... आगे सोचा न गया। उसके मन का दुख जैसे चमचम पानी में घुलने लगा।

आधी रात बीती तो आकाश से एक परी नीचे उतरी। कहते हैं, परियाँ दुखियों के दुख समझती हैं, उनके आँसू पोंछती हैं। परी गेंद के पास आ खड़ी हुई। अब फटी हुई गेंद में भरे पानी में परी का सुंदर चेहरा चमक उठा। वह मुस्कुराई तो जैसे गेंद के घाव पर मरहम लगा। परी को मालूम था, बूढ़ी गेंद का दुख क्या है ? उसने पानी भरी गेंद को हाथ में उठा लिया। बोली – मैं तुम्हारी एक इच्छा पूरी कर सकती हूँ। बोलो, क्या चाहती हो ?

परियों की जादुई शक्ति की कहानी गेंद ने भी सुनी थी। वह जल्दी–जल्दी सोचने लगी पर कुछ समझ न पाई कि परी से क्या माँगे ? आखिर परी ने ही कहा– ''कहो तो तुम्हें एकदम नई–चमाचम बना दूँ।''

सुनकर बूढ़ी गेंद खुश हो गई। लगा, बस अब उसके दिन फिरने वाले हैं। तभी उसे अपनी तरह की दूसरी पुरानी, बूढ़ी, गेंदों का ध्यान आ गया। वह सोच रही थी–शहर में हजारों बूढ़ी, बेकार गेंदें हैं, जो खेलकर फेंक दी गई हैं। कोई नाले में लुढ़क रही है तो कोई झाड़ियों में खोई पड़ी है। मैं तो परी से कुछ भी माँग सकती हूँ लेकिन बाकी बूढ़ी गेंदों का क्या होगा ?'

परी ने कहा– ''ज्यादा मत सोचो, जल्दी से अपनी एक इच्छा बता दो, केवल एक।''

बूढ़ी गेंद ने कहा –मैं अपने लिए कुछ नहीं चाहती। मेरी जैसी बीमार, बेकार हजारों गेंदें हैं। वैसे ही हैं कुछ बच्चे, जो गेंदो के अभाव में कभी खेल नहीं पाते। वे बच्चे जो सारा दिन मेहनत–मजदूरी करते हैं, बरतन माँजते हैं, कचरा बीनते हैं। उनके तो घर भी नहीं हैं। उनका मन भी तो बच्चों का है। मैं चाहती हूँ .....वे भी खेल सकें कभी.....

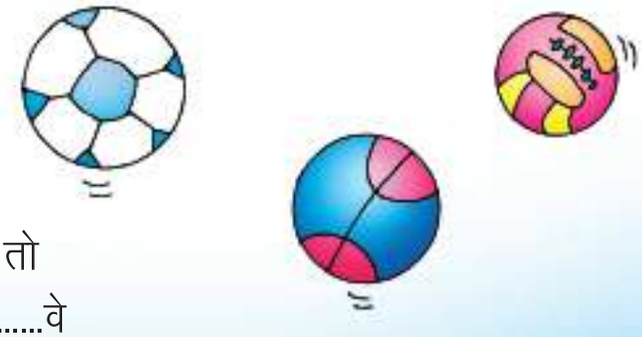

परी ने कहा–''मैं समझ गई, पर यह तो दूसरों की बात हुई, तुम अपनी इच्छा बताओ।''

मैं अपनी दूसरी बहनों के साथ हूँ। उनके लिए कुछ कर सको तो .....

बूढ़ी, बेकार गेंद की बात अधूरी रह गई। परी चली गई थी – 'काश, मैंने अपने लिए ही माँग लिया होता कुछ .....'

शहर में पड़ी थीं, हजारों बूढ़ी बेकार, भूली–बिसरी गेंदें और वैसे ही थे–हजारों बच्चे–सुबह से रात तक सब कुछ भूलकर, बस मेहनत–मजदूरी करते रहने वाले। उस रात ऐसे सभी बच्चों को एक सपना आया। हर बच्चे ने देखा वह बच्चों की भीड़ में एक मैदान में खड़ा है और आकाश में असंख्य गेंदें तैर रही हैं।

दिन निकला तो वे बच्चे हैरान रह गए। न जाने रात में उनके घरों में कौन पुरानी गेंदें रख गया था। यह तो कमाल ही हो गया। हर बच्चा पुरानी, फटी हुई, बदरंग गेंद हाथ में लेकर बाहर आ गया। हर तरफ गेंदें उछल रही थीं। वे बच्चे जो कभी नहीं खेले थे, जमकर खेल रहे थे। कोई नहीं जानता था कि उन बच्चों को पुरानी गेंदें कहाँ से मिल गई थीं! वे खुशी से उछल रहे थे। हवा में गेंदें उछल रही थीं, उड़ रही थीं, हँसी के पंखों पर। कुछ बच्चे उस मैदान में भी आ पहुँचे, जहाँ वह बूढ़ी गेंद पड़ी थी। उसके आधे टूटे हिस्से में भरे पानी में चिड़ियों की टोलियाँ अपनी चोंच डुबोकर चूँ चिर्र कर रही थीं। बूढ़ी गेंद को लगा, जैसे–चिड़ियों की टोली पूछ रही हो–''कैसी हो, बूढ़ी अम्मा ?''

बूढ़ी गेंद की उदासी जाती रही। वह हँस पड़ी। उसने कहा– ''मैं खुश हूँ, बहुत खुश।''

मैदान में सैकड़ों गेंदें उछल रही थी। जीवन में पहली बार खेलने वाले बच्चे भी खुश थे।

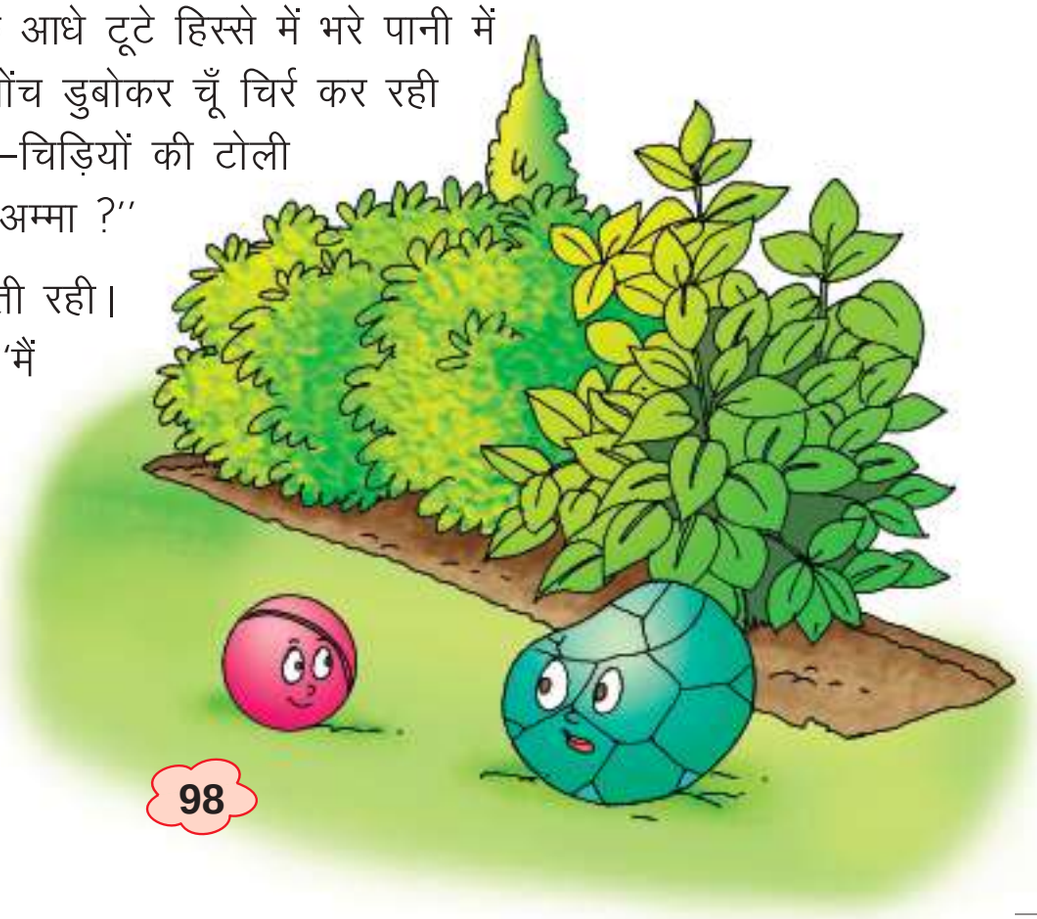

# अभ्यास

C5F413

## 1- vkb, ] 'kCnk d vFk tku &

- असंख्य – अनगिनत
- खामोश – चुप
- निपट – बिलकुल
- परिंदे – पक्षी
- मरहम – घावों पर लगाने वाला औषधियों का लेप
- सांत्वना – किसी दुखी व्यक्ति को धीरज देना

## 2- ikB l &

(क) बूढ़ी गेंद खामोश क्यों पड़ी थी ?

_____

_____

(ख) बूढ़ी गेंद ने परी से क्या माँगा और क्यों ?

_____

_____

(ग) बच्चों को सपने में क्या दिखाई दिया ?

_____

_____

(घ) सभी बच्चे क्यों खुश थे ?

_____

_____

(ङ) दुखियों के दुख को कौन समझता है ?

_____

_____

## 3- vkidh ckr &

(क) यदि बूढ़ी गेंद के स्थान पर आप होते तो परी से क्या माँगते ?

(ख) अपने दोस्तों, भाई–बहनों या बड़े–बूढ़ों के लिए कोई काम आपने भी किया होगा उसके बारे में सोचकर बताएँ।

(ग) बूढ़ी गेंद पुरानी थी, लेकिन बेकार नहीं। आपको यह बात सही लगती है या गलत ? कारण भी बताएँ।

## 4- ikB ls vkx &

(क) बूढ़ी गेंद और नई गेंद एक बार फिर से मिलती हैं। अब वे आपस में क्या बातें करेंगी ? अपनी कल्पना से लिखें–

बूढ़ी गेंद _____

नई गेंद _____

_____

(ख) बच्चे पुरानी गेंदों से खेल रहे थे, लेकिन उस बूढ़ी गेंद से कोई नहीं खेल रहा था। क्यों ?

_____

_____

(ग) बूढ़ी गेंद की उदासी कैसे दूर हुई ? सोचकर बताएँ।

_____

_____

## 5- Hkk"kk dh ckr &

(क) आज, कल और आने वाला कल–

नीचे लिखे पहले वाक्य में अब जो हो रहा है (वर्तमानकाल), कल जो हुआ था (भूतकाल) तथा कल जो होगा

C5NZ2Q

(भविष्यकाल) की बात बताई गई है। ऐसे ही अन्य वाक्यों को भी बनाकर लिखें–

| orleku dky | Hkwr dky | Hkfo"; dky |
|---|---|---|
| बच्चे गेंद से खेल रहे हैं | बच्चे गेंद से खेल रहे थे। | बच्चे गेंद से खेलेंगे। |
| परी ———————— | परी गीत गा रही थी। | परी ———————— |
| मोहन पानी पीता है। | मोहन ———————— | मोहन ———————— |
| दादी ———————— | दादी ———————— | दादी कहानी सुनाएगी। |

(ख) चमचम गेंद झाड़ियों के पास पहुँच गई।

इस वाक्य में 'चमचम' का अर्थ है चमकदार। इसी तरह के कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। उन्हें वाक्यों में प्रयोग करके लिखें –

1. कलकल पानी ————————————————————
2. चकाचक फर्श ————————————————————
3. झमाझम बारिश ————————————————————
4. टनाटन गाड़ी ————————————————————
5. झिलमिल तारे ————————————————————

(ग) pkn fudy vk;kA ikuh ij pkuh ped jgh FkhA

चाँद का संबंध चाँदनी से होता है। बताएँ, इनका संबंध किनसे है ?

सूरज का ————————————————

आग का ————————————————

समुद्र का ————————————————

बारिश का ————————————————

तारों का ————————————————

पक्षियों का ————————————————

हवा का ————————————————————

बादलों का ————————————————————

(घ) दिन निकला तो वे बच्चे हैरान रह गए। न जाने रात में उनके घरों में कौन पुरानी गेंदें रख गया था। कहानी में आए इन वाक्यों में दिन का उलटा रात शब्द आया है। ऐसे ही कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। इनके उलटे (विलोम) शब्द लिखें–

आकाश ———————————— आधा ————————————

सत्य ———————————— हँसना ————————————

आशा ———————————— अपना ————————————

नवीन ———————————— पुरानी ————————————

प्रत्यक्ष ———————————— पास ————————————

(ङ) कैसा ? कैसी ?

नई गेंद उसकी छोटी बहन ही तो थी।

इस वाक्य में 'नई' और 'छोटी' शब्द 'गेंद' और 'बहन' की विशेषता बता रहे हैं। ऐसे शब्दों को विशेषण कहते हैं। नीचे लिखे शब्दों के लिए अपने मन से दो–दो विशेषण सोचकर लिखें–

| | | |
|---|---|---|
| दूध | सफेद | ठंडा |
| साइकिल | ———— | ———— |
| बाल | ———— | ———— |
| आकाश | ———— | ———— |
| लड्डू | ———— | ———— |
| माँ | ———— | ———— |

## 6- ;g Hkh dj& &

**c>k rk tku –**

नीचे कुछ पहेलियाँ दी गई हैं। इन पहेलियों के उत्तर कहानी में ही छिपे हैं। बूझें और लिखें–

1. रात को चमचम चमका करता,
   जैसे चाँदी की हो थाली।
   रहें हाथ खाली के खाली। ——————————

2. तीन अक्षर का मेरा नाम,
   पानी देना मेरा काम।
   प्रथम कटे तो दल बन जाता,
   अंत कटे तो बाद रह जाता । ——————————

3. ठंडी हवा संदेशा लाती,
   तब मैं हूँ धरती पर आती।
   बच्चों के मन को हर्षाती,
   किसानों को भी खूब सुहाती।। ——————————

4. एक थाल मोतियों से भरा,
   सबके सिर पर औंधा धरा।
   जैसे–जैसे थाल फिरे।
   मोती उससे एक न गिरे। ——————————

5. नल, कुआँ, तालाब, नदी में,
   रहता हूँ मैं सागर में।
   ठंडा–मीठा लगता हूँ जब,
   भरते मुझको गागर में। ——————————

# nkgk n'kd ¼xhrk½ ¼dN vkj i<s½

1. गीता गौरव विश्व का, भारत की पहचान।
शब्द–शब्द में ब्रह्म है, सच के तीर–कमान।।

2. कहा कृष्ण ने पार्थ से, भूल फूल औ शूल।
आजा मेरी शरण में, चिंता–चिंतन भूल।।

3. खूब पकड़ ले तितलियाँ, भले तोड़ ले फूल।
दंड मिले हर हाल में, यह सिद्धांत न भूल।।

4. सब सुख इसमें सन्निहित, निर्मल करे शरीर।
गीता गंगा तीर पर, सरस्वती का नीर।।

5. सारे संशय मिट गए, हुआ मोह भी नष्ट।
सुन उद्‌बोधन कृष्ण का, मिटे पार्थ के कष्ट।।

6. अट्ठारह अक्षौहिणी, अट्ठारह अध्याय।
अट्ठारह दिन युद्ध के, अंतिम युद्ध उपाय।।

7. कर्म करो हर हाल में, कर्म बना लो ध्येय।
फल को प्रभु पर छोड़ दो, फिर क्या देय–अदेय।।

8. कर्म किए जा रात–दिन, फल की इच्छा छोड़।
एक रुपैया दान कर, मिलते लाख–करोड़।।

9. कुरुक्षेत्र बड़भाग है, ज्योति सरोवर धन्य।
गीता को सुनकर बना, अर्जुन भक्त अनन्य।।

10. गीता गाकर कृष्ण ने, खूब मचाई धूम।
मस्ती में भरकर धरा, रही अभी तक झूम।।

*–डॉ॰ सारस्वत मोहन मनीषी*

## vkiu fdruk lh[kk

1- fuEufyf[kr i'uk d mÙkj fy[k&

- व्यक्ति की जय–जयकार कब होती है?

  _____

- 'धरोहर' का क्या अर्थ है, यह कहाँ स्थित है?

  _____

- पुष्प ने वनमाली से क्या इच्छा प्रकट की?

  _____

- बूढ़ी गेंद ने परी से क्या मांगा?

  _____

2- budk i;kx dc o D;k fd;k tkrk g\

- बीजणा _____ _____
- घीलड़ी _____ _____

3- fuEufyf[kr okD;k e l fuikr NkVdj fy[k&

- वह भी मेरे विद्यालय में पढ़ता है। _____
- तुम ही तो मेरे सच्चे मित्र हो। _____

4- okD; e j[kkfdr in D;k g\ ckDl e fy[k&

- बगीचे में फूल खिल रहे हैं। _____
- विद्यालय में बच्चे खेल रहे हैं। _____

5- fuEufyf[kr okD; dk dky d lHkh :ik e fy[k&

दादीजी कहानी सुनाती है। (वर्तमान काल)

(भूत काल) ——————————————————————————

(भविष्य काल) ——————————————————————————

6- fuEufyf[kr 'kCnk dk lc/k fdlls g\ fy[k&

- बारिश का ——————————
- आग का ——————————
- सूरज का ——————————
- तारों का ——————————

7- fuEufyf[kr ifDr;k dk ljy vFk fy[k&

लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती,

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।

——————————————————————————————————

——————————————————————————————————

8- lgh 'kCn ckDl e fy[k&

- मास्तिसक मस्तिष्क ——————————
- संग्राहलय संग्रहालय ——————————
- मिठाइयाँ मिठाईयाँ ——————————
- सस्कृति संस्कृति ——————————

C5XV4D

C67R61